RNI No- UPHIN/2017/74520 ISSN: 2584-0843 (Print)

अक्टूबर 2023 से दिसम्बर 2023, वर्ष-9 अंक - 4, मुल्य 50 रूपये

साहित्य सरोज

सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

टर्नल हादसा, दोषी कौन?

9वां गोपालराम गहमरी साहित्य व कला महोत्सव 2023

सीमा पर सलामत रहे सजना

त्रैमासिक पत्रिका
साहित्य सरोज

वर्ष–9 अंक –4

RNI No- UPHIN/2017/74520

ISSN: 2584-0843 (Print)

माह अक्टूबर 2023 से दिसम्बर 2023

संस्थापिका –ः स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक –ः श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक –ः अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक –ः श्रीमती रेनुका सिंह गाजियाबाद

प्रधान कार्यालय –ः मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो0 9451647845 ईमेल

sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट–ः

https://www.sarojsahitya.page

https://sahityasaroj.com/

संपादक मंडल

सहायक प्रधान संपादक श्रीमती रेखा दुबे विदिशा मध्यप्रदेश

उप संपादक डॉ प्रिया सूफी होशियारपुर, पंजाब

तकनीकी संपादक - श्री राजीव यादव, नोएडा, गौतमबुद्धनगर

प्रसार प्रभारी –राम भोले शर्मा, हरदोई, उत्तर प्रदेश

प्रधान कार्यालय प्रभारी - प्रशांत सिंह गहमर, गाजीपुर

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

जिला प्रतिनिधि बनें

सम्पर्क करें 9451647845

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॅा एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा। प्रति अंक –50 रुपये मात्र,

तकनीकि पक्ष–ः कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र –गूगल ईमेज द्वारा।

आपके नाम

हिन्दी साहित्य में हमें अभी बहुत काम करना है । अभी भी हिन्दी हमारे यहाँ दूसरी भाषा की तरह इस्तेमाल की जाती है ।अंग्रेजी का महत्व है पर अपनी भाषा को दोयम दर्ज़े पर नही रखना चाहिए ।

इस दिशा में हमारी पत्रिका नए लेखकों को पूरा अवसर देती है जिस से उनको अपनी प्रतिभा निखारने को एक बेहतर मंच मिले ।

यह पत्रिका बिना किसी के आर्थिक सहयोग के निरंतर प्रगति कर रही है ।आगे भी आप सब की उम्मीदों पर खरी उतरेगी ।नित नए आयोजन होते रहेंगे । '' गहमर का तीन दिन का साहित्य उत्सव नित नई उचाइयां छू रहा है बड़े बड़े लेखन के महारथी इस आयोजन में शामिल होना चाहते है।

मैं सभी लेखकों को धन्यवाद देती हूँ जो उन्होंने इस आयोजन में अपना समय व योगदान दिया । साथ ही आपको बताने जा रही हूँ कि जनवरी से गोपाल राम गहमरी के कहानीयों के वाचन का कार्यक्रम फिर से शुरू हो रहा है जिसमें आपसे सहयोग की उम्मीद है। इस बार में हमारी टीम आपके घर जाकर आपकी कहानी रिकार्ड करेगी। इसके साथ साथ मैं आपको बताना चाहूँगी कि पत्रिका द्वारा भारत के हर शहर में अपना प्रतिनिधि बनाने की पहल शुरू हो चुकि है। यदि आप हमारी पत्रिका और आयोजनों से जुड़ना चाहे तो आप हमें जरूर बतायें। साथ ही अप्रैल में मां कामाख्या धाम में लगने वाले नौ दिनों शिविर में आपका सहयोग अपेक्षित है।

रेनुका सिंह , संपादक

कहां किसका और क्या

गणेश वंदना	गीत	सीमा रानी मिश्र	03
पब्जी वाली दुल्हन	व्यंग्य	विनोद कुमार विक्की	04
सबसे कीमती चीज	कहानी	सिद्धार्थ शंकर	05
जब मैं छोटा बच्चा था	संस्मरण	डॉ प्रदीप कुमार शर्मा	07
पुस्तक की जगह मोबाइल	लेख	प्रतिभा शर्मा	08
मायके की नींद	कविता	रेनुका सिंह	09
धर्मदक्षिणा	संस्मरण	पूजा गुप्ता	10
मेरा अभिमान	कहानी	अर्चना	11
कुमार शानू से मुलाकात	कार्यक्रम विवेचना	विनोद कुमार विक्की	11
झूलती हिन्दी	लेख	डॉ राधा दूबे	12
जय मां सरस्वती	कविता	कुमकुम काव्यकृति	13
राम जी की फोटो	कहानी	महेश शर्मा	14
सुनो भाई	लघुकथा	मीना अरोड़ा	19
मशीन पर भारी मानव	आवरण कथा	हेमंत चौकियाल	20
बूढ़ी आया	कहानी	डॉ पूजा हेमकुमार	22
सोशल इंजीनियरिंग का एक लेखक	जानकारी	नवीन कुमार जैन	23
गंगा को बचाये	कविता	प्रतिभा परासर	26
पाओ बेशर्म हसी अनलिमिटेड	व्यंग्य	अरूण अर्णव खरे	27
खत्म हुआ इंतजार	कार्यक्रम विवेचना	डॉ बृजेश कुमार गुप्ता	28
सरहद से करवा चौथ	आवरण लेख	रीवा सिंह	29
9वें गोपालराम गहमरी साहित्य व कला महोत्सव पर विशेष		साहित्य सरोज	30
कितना खाते हैं पान अखंड सर	कार्यक्रम विवेचना	प्रियंका खंडेलवाल	33
रहेगा याद	कार्यक्रम विवेचना	दया शंकर	34
एक महायज्ञ	कार्यक्रम विवेचना	संतोष शर्मा शान	35
मारनिंग वाक पर मुलाकात	कार्यक्रम विवेचना	डॉ अपूर्वा अवस्थी	36
मिला नया नाम	कार्यक्रम विवेचना	राजेश कुमार भटनागर	37
सब एक समान	कार्यक्रम विवेचना	क्रिसलय दुबे	38
ससुराल में काव्यपाठ	कार्यक्रम विवेचना	मीना सिंह	39
जनवासे की याद	कार्यक्रम विवेचना	ज्योति किरण रतन	40
यूँ ही बना रहे प्यार	कार्यक्रम विवेचना	अखंड गहमरी	42
मन की बात	कार्यक्रम विवेचना	ओम जी मिश्र	44

Healthy Active Life Style Day

8004975834

गणेश वंदना

जय-जय हो बालगणपति,
जग में स्थापित करो शांति।
भालचंद्र, हे बुद्धिनाथ,
सब दें एक-दूजे का साथ।
धूम्रवर्ण, एकाक्षर, एकदंत,
सबके जीवन में रहे वसंत।
हे गजकर्ण, गजवक्र, गजानन,
खुशियों से खिले हर घर-आँगन।
गजवक्त्र, गणाध्यक्ष, गणपति,
आए न जग पर कोई विपत्ति।
गौरीसुत, लंबकर्ण, लम्बोदर,
अन्न से पोषित हो सबका उदर।
महाबल, महागणपति, महेश्वर,
करो कृपा सब पर हे ईश्वर।
मंगलमूर्ति, निदिश्वरम, मूषकवाहन,
हर समस्या का तुम्हीं हो समाधान।
हे शूपकर्ण, शुभम, प्रथमेश्वर,
सदमार्ग पर चले प्रत्येक नर।
सिद्धिदता, सुरेश्वरम, सिद्धिविनायक,
तुम्हारा स्मरण है परम सुखदायक।
वक्रतुंड, अखूरथ, अलम्पता, अमित,
तुम्हारी कृपा से रहें सब प्रसन्नचित्त।
हे अनंतचिदरुपम, अविघ्न, अवनीश,
तुम्हीं हो सखा, तुम्हीं हो ईश।
भीम, भूपति, भुवनपति, बुद्धिप्रिय,
नकारात्मकताओं को कर दो निष्क्रिय।
बुद्धिविधाता, चतुर्भुज, देवदेव,
तुम्हारा सुमिरन करते नर व देव।
देवांतकनाशकारी, देवव्रत, देवेंद्राशिक,
हमारी जीवन-नैया के तुम हो नाविक।
दूर्जा, द्वैमातुर, एकदंष्ट्र व धार्मिक,
कुमार्ग से दूर रहे यहाँ हर पथिक।
ईशानपुत्र, गणाध्यक्षिण, गदाधर,
तुम्हारी स्तुति में नत है सर।
गुणिन, हरिद्र, हेरम्ब, कपिल,
मासूमों का जीवन न हो बोझिल।
कवीश, कीर्ति, क्षिप्रा, कृपाकर,
प्रकाश फैलाओ अज्ञानता का नाश कर।
क्षेमंकरी, कृष्णपिंगास, मनोमय,
तुमसे है जीवन में सूर्योदय।
मृत्युंजय, मूढ़ाकरम, मुक्तिदायी,
हर लो धरा से पाप की परछाई।
नादप्रतिष्ठित, नमस्थेतु, नन्दन,
कर जोड़ सब करते हैं वंदन।
सिद्धांथ, पीताम्बर, प्रमोद, रक्त,
अवगुणों को दूर कर बना लो भक्त।
रुद्रप्रिय, सर्वदेवात्मन, सर्वसिद्धांत,
क्लेश दूर हों सबके व रहे मन शांत।
सर्वात्मन, शशिवर्णम, ओंकार,
हम नैया हैं, तुम हो हमारे पतवार।
शुभगुणकानन, श्वेता, सिद्धिप्रिय,
रहें मनुज नित सत्कर्म में सक्रिय।
स्कंदपूर्वज, सुमुखा, स्वरूप,
दर्शन से छट जाते कष्ट के धूप।
तरुण, उद्दंड, उमापुत्र, वरगणपति,
शरण आए को प्रदान करो सन्मति।
वरप्रद, वरदविनायक, वीरगणपति,
हरो प्रभु धरा से कष्ट और विपत्ति ।
विद्यावारिधि, विघ्नहर, विघ्नहर्ता
विघ्नों से लड़ने की दो क्षमता
विघ्नविनाशन, विघ्नराज, विघ्नराजेंद्र,
पृथ्वी बन जाए सिद्धियों का केंद्र।
विघ्नविनाशाक, विघ्नेश्वर, विकट,
तुम्हारी स्तुति मात्र से नष्ट हो कष्ट।
विनायक, विश्वमुख, विश्वराजा,
लहराए जग में धर्म की ध्वजा।
यज्ञकाय, यशस्कर, यशस्विन, योगाधिप,
हर प्राणी हो अपने जीवन का महीप ।

सीमा रानी मिश्रा
बिहार

पब्जी वाली दुल्हन

जब से पब्जी खेलने वाले सचिन की जीवन में सीमा पार कर सीमा का पदार्पण हुआ है तब से आनलाइन गेम के प्रति पोपट चचा की आस्था बढ़ गई। मीडिया से मंडी तक सीमा और सचिन तथा उनके चार रेडीमेड छोटे पब्जी की ही चर्चा थी। सीमा के पाकिस्तान से पलायन पर कोई छाती तो कोई ताली पीट रहा था। बिना लुगाई के बयालीस बसंत झेल चुके पोपट चचा को भी प्रियतमा के साथ वायरल होने का बड़ा शौक था। रील्स ,मीम्स आदि बना कर थक चुके थे किंतु अभी तक वायरल नहीं हो पाए थे और ना ही कोई सीमा या विग्नेश्वरी सरहद पार कर पोपट के हृदय और हाउस में प्रवेश कर पाई थी। एक दिन जब उन्हें मीडिया से पता चला कि ऑनलाइन गेम्स से वायरल होने और प्रियतमा पाने का सुख सुख प्राप्त किया जा सकता है तो उनका आत्मविश्वास उफान मारने लगा। हिम्मत-ए-मर्दा त मदद-ए-खुदा।

एक दिन टीवी पर उनके फेवरेट एक्टर रितिक रोशन द्वारा जंगली रम्मी और कामेडियन कपिल शर्मा जु पी गेम का महिमा मंडन करते हुए बता रहे थे कि किस प्रकार रोडपति फलानां प्रसाद गेम खेल कर करोड़ पति बन गया, फिर क्या पोपट चचा को पूर्ण विश्वास हो गया कि कृपा कहां रुकी हुई है। उन्हें इस निर्मल ज्ञान की प्राप्ति हो गई कि गेम ही उनका गम दूर कर सकता है आनलाइन गेम खेलने से ही उन्हें पति एवं करोड़पति बनने का संयुक्त सौभाग्य प्राप्त होगा।

गेम की अहमियत का अहसास होते ही चचा ने कैंडी क्रश सागा, पब्जी,रमी सर्किल सहित हर तरह का आनलाइन गेम मोबाइल पर डाउनलोड कर खेलना शुरू कर दिया। आशावादी लोटन चचा को उम्मीद थी कि पाकिस्तान ना सही बंगलादेश, साउथ अफ्रीका अथवा होनोलुलू से कोई ना कोई उनके लिए भी आएगी ही और एक दिन वो भी कुंवारेपन की बाधा से मुक्ति पा ही लेंगे।

चचा हर हाल में सीमा-सचिन की तरह वायरल होना चाहते थे। आशावादी पोपट चचा ने 'आज हम नहयलै बारु शैम्पू से आवत होईह राजा हम्मर टेम्पु से 'को रिंग टोन से कालर ट्यून तक सेट भी कर लिया। घर,समाज, समारोह की बजाय पोपट सदैव अपने साढ़े पांच इंच वाले मोबाइल पर आनलाइन उपलब्ध रहता था। डाटा पैक का सारा डेटा और चचा के एकाउंट का पैसा दोनों ही आनलाइन गेम चूसने लगा। अब तक चचा को सचिन वाली सफलता नहीं मिल पा रही थी।

चचा के वायरल होने की इच्छा धीरे-धीरे दम तोड़ रही थी कि एक दिन गेम खेलने के दरम्यान आनलाइन महिला पार्टनर ने चचा से व्हाट्स एप नम्बर मांगते हुए वीडियो काल करने की इच्छा जाहिर की। पोपट चचा को तो मानो मन की मुराद मिल गई। देवी-देवता, पितर, गेम गुरु सचिन-सीमा, कपिल शर्मा,रितिक रोशन का मन ही मन आभार प्रकट करने लगे। लोटन का दिल लूटने वाली और उसे सेलिब्रिटी की तरह वायरल करने वाली सीमा जल्द ही उसके सीमा क्षेत्र में प्रवेश करने वाली है, इस सोच से रोमांचित होते हुए तत्क्षण ही अपना व्हाट्सएप नंबर शेयर कर दिया।

पोपट चचा ने नंबर शेयर किया ही था कि मोबाइल के डिस्प्ले पर आनलाइन वीडियो कालिंग आने लगी, नयी महिला मित्र से गुफ्तगू करने की फिराक में बिना वक्त गंवाए काल रिसीव कर लिया। दूसरी ओर से विदेशी युवती का चेहरा देख पोपट का चेहरा खिल उठा। बिना वक्त गंवाए पोपट टूटी-फूटी आंग्ल भाषा में पूछ बैठा दृ हाय आई एम पोपट द फुल बैचलर, विल यू मैरी मी-कैन यू कम टू इंडिया फोर मी। दूसरी ओर से सिर्फ या-या की आवाज आ रही थी। थोड़ी देर की बातचीत के बाद ही पोपट की सीमा हर सीमा को पार करते हुए अर्द्धनग्न अवस्था में गरमा-गरम बातों के साथ शुरू हो गई। चचा कुछ समझ पाते इससे पहले ही आनलाइन महिला ने बचे-खुचे कपड़े भी उतार दिए। गरम जोशी अथवा नई दोस्ती की जोश में पोपट खुद को संयमित ना रख पाया और उसने भी कपड़े उतारना शुरू कर दिया।

आनलाइन दोस्ती मिलन कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात पोपट को अब इंतजार था तो बस अपनी सीमा के आगमन का।अगले दिन पोपट को अज्ञात नम्बर से व्हाट्स एप पर एकाउंट नम्बर के साथ एक लाख रुपए की डिमांड वाला एक मैसेज प्राप्त हुआ। चचा को ऐसा लगा कि कोई फिरकी ले रहा है या चंदा मांगने वाला कोई संस्था अपनी औकात से बाहर की डिमांड कर रहा है। चचा ने मैसेज

को इग्नोर करना ही उचित समझा। वैसे भी चचा के पास एक लाख रुपए तो दूर अगले माह मोबाइल रिचार्ज करवाने के लिए **249** रूपए के भी बांदे थे। अपनी सीमा की असीम यादों में डुबकी लगा रहा पोपट बार-बार आ रहे मैसेज को इग्नोर करने लगा। एक सप्ताह बाद पोपट का पड़ोसी डगरू हड़बड़ाते हुए हुए उसके घर के बाहर से आवाज देकर चिल्लाने लगा- अरे चचा गज्जब हो गया। क्या हमारी सीमा हद और सरहद पार कर चली आई अंदर से चचा की उत्सुकता भरी आवाज आई। अरे आप तो वायरल हो गए। डगरू चिल्लाया। इतना सुन मारे खुशी के पोपट बिना लुंगी बांधे बनियान और जांघिया में ही बाहर निकल आया। बिना पुरी बात सुने डगरू को गले से चिपकाते हुए बोले- अरे वाह! आखिर ईश्वर ने मेरी सुन ही ली। यह सुनने को मेरे कान तरस गए थे कि मैं भी सेलिब्रिटी की तरह वायरल होऊं।

अरे चचा पहले यह तो देखो कहते हुए डगरू ने मोबाइल पर एक विडियो दिखाया. विडियो देखते ही पोपट के चेहरे की खुशी फुर्र हो गई। हाथ-पांव फूलने लगा.तेज हवाओं के बावजूद चेहरे पर पसीना की बूंदें उभर आई। मोबाइल में चचा और उनकी तथाकथित सीमा की आनलाइन विडियो वार्ता का क्लिप था। चचा को समझते देर न लगी कि वह हनी ट्रैप का शिकार हो चुके हैं। चचा की सीमा, सचिन की सीमा से ज्यादा शुभ,होनहार और गुणवान निकली। सीमा पार की सीमा के शुभागमन से सचिन राष्ट्रीय स्तर पर ही चर्चित हुआ था किंतु पोपट की सीमा ने पोपट का पोपट बना उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वायरल कर दिया।

विनोद कुमार विक्की
महेशखूंट बाजार
खगड़िया बिहार
776595 496९

सबसे कीमती चीज

एक जाने-माने स्पीकर ने हाथ में पाँच सौ का नोट लहराते हुए अपनी सेमीनार हाल में बैठे सैकड़ों लोगों से उसने पूछा, ये पाँच सौ का नोट कौन लेना चाहता है? “ हाथ उठाना शुरू हो गए। फिर उसने कहा,” मैं इस नोट को आपमें से किसी एक को दूंगा पर उससे पहले मुझे ये कर लेने दीजिये।” और उसने नोट को अपनी मुट्ठी में चिमोड़ना शुरू कर दिया। और फिर उसने पूछा, ”कौन हे जो अब भी यह नोट लेना चाहता है?” अभी भी लोगां के हाथ उठने -शुरू हो गए। ”अच्छा, उसने कहा, ”अगर मैं ये कर दूँ?” और उसने नोट को नीचे गिराकर पैरो से कुचलना -शुरू कर दिया। उन्होंने नोट उठाई, वह बिल्कुल चिमुड़ी और गन्दी हो गयी थी।” क्या अभी भी कोई है जो इसे लेना चाहता है?” और एक बार फिर हाथ उठाने -शुरू हो गए। ”दोस्तो आप लोगों ने आज एक बहुत महत्वपूर्ण पाठ सीखा है। मैने इस नोट के साथ इतना कुछ किया फिर भी आप इसे लेना चाहते थे। क्योंकि ये सब होने के बावजूद नोट की कीमत घटी नही, उसका मूल्य अभी भी ५०० था। जीवन में कई बार हम गिरते हैं, हारते हैं, हमारे लिए हुए निर्णय हमे मिट्टी में मिला देते हैं। हमें एसो लगने लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है। लेकिन आपके साथ चाहे जो हुआ हो या भविष्य जो हो जाए। आपका मूल्य कम नहीं होता। आप महत्वपूर्ण है, इस बात को कभी मत भूलिए। कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल के सपनों को बर्बाद मत करने दीजिए। याद रखिये आपके पास जो सबसे कीमती है, वो है आपका जीवन।”

सिद्धार्थ शंकर
कटिहार
मो0-7488678662

जब मैं छोटा बच्चा था

यह बात तब की है, जब मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ रहा था। एक दिन पिताजी ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, "बेटा प्रदीप, अब तुम बड़े हो चुके हो। तुम्हारी दीदी भी शादी के बाद अपनी ससुराल चली गई है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि अब से तुम हमारे घर के वे सभी छोटे-मोटे काम कर लिया करो, जो कि शादी के पहले तुम्हारी दीदी किया करती थी" ।मैंने भी अच्छे बच्चों की तरह कहा, "ठीक है पापा, आप जो भी काम करने के लिए कहेंगे, मैं वो सब कर लिया करूंगा" । आप बताइए मुझे क्या - क्या काम करने हैं ? उन्होंने कहा, "देखो बेटा, अब तुम्हारी मम्मी जो भी सामान किराने की दुकान से लाने के लिए कहेंगी, वे सब ले आया करना । मेरे और अपने कपड़े खुद इस्तरी कर लेना ।" मैंने कहा, "पापा, किराना सामान तो मैं ला ही दूंगा, पर कपड़े इस्तरी करना तो मैं जानता ही नहीं'' । सो मैं वह काम कैसे कर पाऊंगा ''? पापा ने कहा, "इसमें कौन-सी बड़ी बात है । कपड़े इस्तरी करना मैं तुम्हें सिखा दूंगा'' । मैंने आश्चर्य से पूछा,"वावो, सो नाइस पापा । आप सिखायेंगे मुझे कपड़े इस्तरी करना'' ? पापा ने कहा, "इसमें इतने आश्चर्य की क्या बात है ?कपड़े इस्तरी करना कोई मुश्किल काम तो है नहीं । हाँ, इतना जरूर है कि हर वह काम जो हम पहले नहीं किए होते हैं, शुरुआत में कठिन ही लगता है । वैसे मैं तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं कि तुम्हारी दीदी को भी कपड़े इस्तरी करना मैंने ही सिखाया था'' ।

"उल्लेखनीय है कि उस जमाने में आजकल की तरह इलेक्ट्रिक आयरन नहीं हुआ करता था । तब लोहे के आयरन में कुछ कोयला और दो-तीन अंगारे डालकर पहले उसे गरम करते थे, फिर उसे कपड़ों पर सावधानी-पूर्वक फेरते थे ।पिताजी को एक-दो बार कपड़े इस्तरी करते हुए देखने के बाद ही मैंने कहा, "पापा, अब मैं ये कार्य खुद से ही कर लूँगा''। पिताजी ने हौंसला अफजाई की, "व्हेरी गुड । मुझे पता था, कि तुम एक बार में ही सीख जाओगे'' ।परंतु ये क्या, कुछ ही दिन बाद आयरन करते हुए पिताजी की एक नई शर्ट पर एक छोटा सा अंगारा गिर गया और एक सिक्का के आकार का छेद हो गया। मैं डर गया कि अब तो पापा की डाँट पड़ेगी ।डरते हुए मैंने उन्हें यह बात बताई । आशा के विपरीत वे बिल्कुल भी नाराज नहीं हुए । बोले, "कोई बात नहीं बेटा, तुम चिंता मत करो । शुरुआत में ऐसा हो जाना कोई नई बात नहीं है'' ।

मैंने कहा, "पर पापा, मेरी लापरवाही से आपकी एक नई शर्ट जल गई'' । पापा ने प्यार से कहा था "शर्ट ही जली है न बेटा, तुम्हारा हाथ तो नहीं जला है'' । तुम्हें याद है, जब तुम पहले साइकिल चालाना नहीं जानते थे, तो सीखते हुए कई बार गिर जाते थे । साइकिल तो खराब होता ही था, कई बार तुम्हारे हाथ-पैर में भी चोटें आती थीं । लेकिन अब तुम बहुत ही अच्छे से साइकिल चालाना सीख गए हो, तो कभी गिरते नहीं हो । बेटा सोचो, यदि उस समय तुम गिर जाने या चोट लग जाने के डर से साइकिल चालाना ही छोड़ दिए होते, तो क्या आज साइकिल चला पाते ?नहीं न ?इसलिए ट्राई करते रहो । बेटा, तुमने महाकवि वृन्वद का वह लोकप्रिय दोहा तो सुना ही होगा, "करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान । रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान ।।'' पापा की बातें सुनकर मन का डर जाता रहा । मैंने उत्साह के साथ कहा "हाँ पापा, अब मैं धीरे-धीरे और सावधानीपूर्वक कपड़े इस्तरी करूंगा'' ।

पापा ने उत्साहित करते हुए कहा "गुड, मुझे पूरा विश्वास है कि अब से तुम बहुत अच्छे से कपड़े इस्तरी कर लोगे । इस शर्ट के बारे में ज्यादा मत सोचना । वैसे भी यह शर्ट मुझे ज्यादा पसंद नहीं थी । अच्छा हुआ जल ही गया । वैसे भी हो जाती है सीखते समय ऐसी छोटी-मोटी गलती । हाँ बेटा, लेकिन आगे से ध्यान रखना ।ठीक है ।''

आज इस बात को याद कर सोचता हूँ कि यदि पिताजी उस दिन मुझे डाँटते और भविष्य में इस्तरी करने से मना कर दिए होते, तो शायद मैं कभी यह काम सीख ही नहीं पाया होता । मुझे गर्व है कि जब तक मैं पिताजी के साथ रहा, उनके सभी कपड़े मैं ही इस्तरी करता । आज भी मैं अपने कपड़े खुद ही इस्तरी करके पहनता हूँ । इससे मुझे न केवल आत्म-संतुष्टि मिलती है, बल्कि प्रतिमाह सैकड़ों रुपए की बचत भी होती है ।

डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा
रायपुर, छत्तीसगढ
मोबाइल नंबर 9827914888

पुस्तक की जगह मोबाइल

वर्तमान युग में विज्ञान द्वारा अनेक आश्चर्य जनक आविष्कार किए गए हैं जिसमें मोबाइल फोन का विशेष महत्व है। मोबाइल रखने और आवश्यकता से अधिक मोबाइल का उपयोग करना स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है । सकारात्मक उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करने से बच्चे को कुछ हद तक फायदा हो सकता है लेकिन यह उनके शारीरिक के मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है। पहले मोबाइल फोन कुछ संपन्न लोगों तक ही प्रचलित था क्योंकि मोबाइल एवं सेवाएं बहुत महंगी थी। मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियां भी कम थी। परंतु वर्तमान में अनेक सेवा प्रदाता कंपनियां खड़ी हो गई है मोबाइल फोन भी सस्ते से सस्ते मिलने लगे हैं इस कारण अब हर व्यक्ति मोबाइल फोन रखने लगा है। भारत में वर्तमान काल में लगभग ८० करोड़ लोग इसका उपयोग कर रहे हैं। मोबाइल सेवा बहुत बड़ा व्यापार बन गया है इससे अरबो रुपए का व्यापार हो रहा है।यह हमारे लिए बहुत अफसोस की बात है कि पूरे विश्व में सबसे ज्यादा युवा भारत वर्ष में है और उन युवाओं के हाथ में मोबाइल है ताकि वे ना इधर देखे ना उधर देखे वह सिर्फ और सिर्फ मोबाइल देखें ताकि उनके आसपास क्या हो रहा है? वे जान ही ना सके। यह बात हम सभी क्यों नहीं समझ रहे हैं, इस मोबाइल फोन की वजह से आज का युवा खतरे में है और हमारा देश भी।

आजकल मां-बाप छोटे बच्चों को बहलाने के लिए उनके हाथ में मोबाइल फोन थमा देते हैं। लेकिन अब एक नई स्टडी में यह पता चला है कि ६ साल तक के बच्चे जो मोबाइल से खेलते हैं आगे चलकर उनकी याददाश्त कमजोर हो जाती है और उन्हें कई प्रकार की मानसिक विकृतियों का सामना करना पड़ता है। देश के नौनिहालों के हाथों में मोबाइल थमाने का प्रमुख कारण माता-पिता ही है माता-पिता इतने व्यस्त रहते हैं कि वह अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते हैं कार्य की वजह से इतने तनाव में रहते हैं कि वे बच्चों की बातें एवं उनकी समस्या सुनने तक का उनके पास समय नहीं है तो वे अपने बच्चों के हाथों में मोबाइल थमा देते हैं, इसके लिए माता-पिता ही सबसे ज्यादा जिम्मेदार होते हैं।

अप्रत्यक्ष रूप से माता-पिता उसे नशे की लत दे रहे हैं जिस प्रकार नशा करने वाले को उसका संबंधित नशा नहीं मिलता है तो वह उद्विग्न हो जाता है और तोड़फोड़ करता है ठीक उसी तरह मोबाइल के न मिलने पर भी ऐसे कहीं उदाहरण देखने मे आए हैं जिसमें बच्चों ने पूरे घर को तोड़ डाला। इसका दूरगामी परिणाम भी माता-पिता को ही भुगतना पड़ता है। फिर माता-पिता इसकी प्रति जागरूक क्यों नहीं है? फोन बहुत छोटा यंत्र है जिसे व्यक्ति अपनी जेब में या हाथ में लेकर कहीं भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा सकता है इससे समाचारों का आदान-प्रदान भी सरलता से होता है देश-विदेश में रहने वाले अपने लोगों से संपर्क में लगातार रहा जा सकता है।

सबके पास मोबाइल फोन होता है मोबाइल में कई ऐसे ऐप होते हैं जिसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मोबाइल लोगों के कनेक्ट रहने और अपनी बातें शेयर करने का आज बहुत बड़ा माध्यम है। मोबाइल से आप अपने दोस्तों से फोटो, वीडियो, म्यूजिक कंटेंट और अपनी लोकेशन शेयर कर सकते हैं। आप विश्व के किसी भी कोने में किसी को भी फ्री में मैसेज भेज सकते हैं।मोबाइल से आप कई लोगों का ग्रुप बनाकर सभी लोगों के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं। व्यापार एवं व्यवसाय में तो यह लाभदायक और सुविधाजनक है ही अन्य क्षेत्रों में भी यह विज्ञान का वरदान बन रहा है।

असाध्य रोगी की तुरंत सूचना देने अनेक प्रकार के खेलकूदों के समाचार जानने, मनचाहे गानेऔर किसी भी तरह की समस्या का समाधान मोबाइल के द्वारा गूगल पर हम प्राप्त कर सकते हैं।

मोबाइल फोन कैलकुलेटर का कार्य भी करता है साथ ही वीडियो और रेडियो का काम भी कर लेता है आतः सूचना एवं मनोरंजन के साथ ही शिक्षा की दृष्टि से मोबाइल काफी लाभदायक सिद्ध हो रहा है।मोबाइल को चलाने से निम्न हानियां है-

६ साल से कम उम्र के बच्चे मोबाइल फोन चलाने से वर्चुअल ऑटिज्म का शिकार हो रहे हैं, जिस उम्र में वह बोलना सीखते हैं प्रश्न करना सिखते हैं वहां मोबाइल की वजह से बच्चे मौन रहना सीख रहे हैं उनकी याददाश्त कमजोर हो रही है साथ ही एक जगह बैठे-बैठे मोबाइल चलाने से मोटापा बढ़ रहा है।

पहले जब सभी बच्चे संयुक्त परिवार में रहते थे और बच्चों को अपने भाव को सांझा करने के लिए कोई न

कोई मिल जाता था जिससे वह मानसिक और शारीरिक तौर पर स्ट्रांग बनता था परंतु आजकल सर्वत्र हम देखते हैं कि सब एकल परिवार में रहते हैं और कहीं-कहीं तो माता-पिता की अकेली संतान बच्चा होता है और वह नौकरी करने के कारण बच्चों को समय नहीं दे पाते हैं और समय के बदले मोबाइल दे देते। बच्चा तो नासमझ है उसको तो पता नहीं है पर माता-पिता इतने बड़े उम्र के होते हुए भी नासमझी दिखा रहे हैं यह बड़ी शर्म की बात है। मोबाइल के ज्यादा समय तक इस्तेमाल करने से बच्चों मैं चिड़चिड़ापन , एकाग्रता की कमी व्याकुलता एवं उन्माद अक्सर देखने को मिलता है। यह सभी नकारात्मक संवेग है जो उसके व्यक्तित्व के लिए बहुत ही खतरनाक है। जब देश के नौनिहाल ऐसी नकारात्मक चीजों के भंडार होंगे तो आगे आने वाले समय में देश का क्या भविष्य होगा? इसलिए हम सभी को इस खतरनाक समस्या पर काम करना शुरू कर देना चाहिए।

फोन चलाने की लत की वजह से बच्चे सामाजिक तौर पर विकसित नहीं हो पाते हैं और बाहर न जाने की वजह से व्यक्तित्व का विकास भी नहीं हो पाता है। मोबाइल से बच्चे की मस्तिष्क का विकास खराब होता है १८ से कम उम्र के बच्चों का मानसिक विकास कम होता है और वे हिंसक बन जाते हैं। ज्यादा मोबाइल का उपयोग करने से बच्चों में स्पीच डेवलपमेंट नहीं हो पता है उसका व्यवहार खराब होने लगता है।

मोबाइल फोन का लगातार सुनने पर कान कमजोर हो जाते हैं मस्तिष्क में चिड़चिड़ापन आ जाता है एवं बच्चों को मोबाइल गेमिंग की बुरी लत पड़ने से उन पर दूरगामी दुष्प्रभाव पड़ता है। इससे समाज में अपराध बढ़ रहे हैं। मोबाइल से निकलने वाले इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकारों से डीएनए क्षतिग्रस्त हो सकता है मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से बच्चों के मस्तिष्क कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, डायबिटीज, हृदय रोग आदि होने की अधिक संभावना होती है।मोबाइल के अधिक इस्तेमाल करने से बच्चे का पोस्चर खराब होता है उसके गर्दन और कमर में दर्द बना रहता है साथ ही उसका विलंबित विकास होता है और पढ़ने की खराब आदते पड़ जाती है।

मोबाइल से बच्चे की रचनात्मक पूरी तरह खत्म हो जाती है साथ ही रिश्तो में तनाव पूर्ण स्थिति पैदा हो जाती है और कई बार बालक साइबर बुलींग का भी शिकार हो जाता है। मोबाइल फोन देखने से बच्चे कई बार मोबाइल से खराब और ऐसी चीज देखने लगते हैं जो उनको नहीं देखना चाहिए जिससे उनकी आदतें खराब होती है और उनका व्यक्तित्व दूषित होता है। मोबाइल फोन से पैसों का अपव्यय भी बढ़ रहा है। युवाओं में चैटिंग का नया रोग भी फैल रहा है इन सब कारणों से मोबाइल फोन हानिकारक और समाज के लिए एक अभिशाप है।

माता-पिता को चाहिए कि वह बच्चों को समय और साथ दोनों दे। बच्चों को मोबाइल पर नकारात्मक चीज़ें देखने के दुष्प्रभाव के बारे में जरूर बताएं। जितना समय बच्चे मोबाइल पर बर्बाद करते हैं इस समय को किताबें पढ़ने में कॉमिक्स पढ़ने में या कोई क्राफ्ट एक्टिविटी करने में व्यतीत करने हेतु प्रेरित करें। बच्चों को घरेलू कामों में उनकी मदद करने के लिए जैसे बालकनी साफ करना, साइकिल वॉश करना, मम्मी को किचन के कार्यो में मदद करना आदि कार्यों के लिए प्रेरित करें जिससे माता-पिता के सानिध्य में वे खाली समय का सही उपयोग कर सकेंगे।

माता-पिता बच्चों के मोबाइल देखने का समय निर्धारित करें अक्सर बच्चे स्कूल से आते ही मोबाइल देखना शुरू कर देते हैं अगर पेरेंट्स समय ना दे तो घंटो अपने चहेते नाटक या चैनल देखते रहते हैं। बच्चे को खाने पीने की भी कोई परवाह नहीं होती इसलिए बच्चों का मोबाइल देखने का समय फिक्स कर देना चाहिए जिससे पढ़ने के लिए समय बच सके। माता-पिता को चाहिए कि वह बच्चों का ध्यान बांटने के लिए संगीत, पेंटिंग और नृत्य का प्रशिक्षण दिलवाएं जिससे बालक अपने समय का सही सदुपयोग कर सके। समय-समय पर बच्चों को ऐसे टास्क देते रहे जिसे बच्चों की रचनात्मक क्षमता का विकास हो। मोबाइल की जगह बच्चों को कोई पालतू पशु लाकर दे जिससे बच्चों में सेवाभाव आए।

खाली समय में बच्चों की क्षमता के अनुसार घरेलू कामों में उसका सहयोग ले जिससे बच्चा आत्मनिर्भर बनेगा व्यावहारिक चीज सीखेगा। मोबाइल से दूर रखने के लिए बच्चों को आउटडोर एक्टिविटी में इंवॉल्व करें, उन्हें बाहर खेलने, साइकिल चलाने एवं गार्डनिंग आदि के लिए मोटिवेट करें।मोबाइल देने के बजाय टीवी का ही इस्तेमाल करें और टीवी पर रामायण-महाभारत या और कोई धार्मिक कार्यक्रम बच्चों के साथ माता-पिता को भी देखना चाहिए जिससे अच्छा संदेश मिले।

जिद्दी बच्चों के लिए माता-पिता को चाहिए कि

वह उनसे बहस ना करें उनकी बात शांति से सुने और बच्चों को ऑप्शन दे, बच्चों से स्नेह से कनेक्शन मेंटेन करें और नेगोशिएशन करना सीखे। जो बच्चे जिद्दी होते हैं उन्हें जिम्मेदारी देने से वह बहुत अच्छा काम करके दिखाते हैं अतः उनको डांटने के बजाय अच्छा बर्ताव करें।

मोबाइल फोन दूरभाष की दृष्टि से महत्वपूर्ण आविष्कार है, गूगल के माध्यम से दुनिया की कोई भी जानकारी हमें आसानी से मिल जाती है अर्थात यह ज्ञान का भंडार है तथा इसका उपयोग उचित ढंग से तथा आवश्यक कार्यों के करने हेतु ही किया जावे तो वह वरदान ही है लेकिन अपराधी लोगों और युवाओं में इसके दुरुपयोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है जो सर्वथा अनुचित है । मोबाइल फोन का संतुलित उपयोग किया जाना ही लाभदायक है यह तभी दूरसंचार का आधुनिकतम श्रेष्ठ साधन बन सकता है।

प्रतिभा शर्मा
प्राध्यापक लहदी राजकीय
उच्च माध्यमिक विद्यालय
कांकरोली , 9024897689

मायके की नींद

मायके ज़रुर जाना
बरसो की थकान उतारने
ज़िम्मेदारियों का बोझ उतारने
कुछ लम्हे सुकून से गुज़ारने
माँ के आँचल तले
कुछ दिन गुज़ारने
पुरानी यादों की
पोटली टटोलने
साल में दो बार मायके
ज़रूर जाना
अपना बचपना
फिर से जीने
माँ पापा की
सोई उम्मीदे जगाने
बच्चों पर बुआ का
प्यार लुटाने
अपना बचपन
उन्हें याद दिलाने
साल में दो बार
मायके ज़रूर जाना
अपना मनपसंद
खाने
सो रही है मत उठाओ
ये सुनने
माँ पापा कितने ज़रूरी है
ये बताने
वो अब भी बहुत महत्वपूर्ण है
ये जताने

साल में दो बार
मायके ज़रूर जाना

रेनुका सिंह लखनऊ

धर्मदक्षिणा

बात काफी पुरानी है। एम.ए. करने के सात आठ महीने बाद ही मुझे अपने ही कॉलेज में लेक्चरार की अस्थाई नौकरी मिल गई। प्रिंसिपल, टीचर्स व छात्र, सभी मेरे अध्यापन कार्य से संतुष्ट थे। फिर आठ नौ महीने बाद ही मेरे विभाग के एक प्रोफेसर की आकस्मिक मृत्यु हो गई और उसे रिक्त पद के लिए आवेदन मांगे गए। मैंने भी इसके लिए आवेदन फार्म व जरूरी कागजात जमा कर दिए। एक दिन जब मैं स्टाफ रूम में बैठी थी तो मुझे अपने पीछे बैठे एक प्रोफेसर की बात सुनाई दी,"लगता है वर्मा को अपने अंत का आभास हो गया था, तभी तो उसने भाभी जी (पत्नी) को जबरदस्ती अपने विषय में ही एम.ए. करवा दिया। अब देखो, उनकी जगह भाभी जी की पोस्टिंग हो पाती है या नहीं? हालांकि इस पद के लिए इतनी जल्दी और इस तरह की व्यवस्था की गई है कि ज्यादा लोग आवेदन कर ही ना सके। फिर भी कोई उनसे ज्यादा डिग्रियां या अनुभव लेकर आ गया तो उनकी पोस्टिंग में मुश्किल होगी।"

उनकी बातें सुनकर मैं सोच में पड़ गई। यह वही वर्मा सर थे, जिनकी वजह से मुझे नौकरी मिली थी। शुरू में जिस टीचर के बोलने के सधे अंदाज को हम प्लेटफार्म पर अनाउंसमेंट वाली आवाज कह कर मजाक उड़ाते थे, बाद में वही हमारे आदरणीय गुरु बन गए थे। अपने विषय के पूरे ज्ञानी व हर पल, हर विद्यार्थी का मार्गदर्शन करने को तैयार गुरुजी की प्रेरणा से ही मैं कालेज में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए थे और मुझे नौकरी करने के लिए प्रेरित किया था। ऐसी बात सुनकर मैं तो अब दुविधा में पड़ गई। निश्चित रूप से आए हुए आवेदन पत्रों मे अपने कालेज में यह नौकरी मुझे ही मिलती, क्योंकि छठी क्लास से एम. ए. तक छात्रवृत्ति व सर्वोच्च अंकों के प्रमाण पत्रों के अलावा अध्यापन का अनुभव भी मेरे पास था।

एक तरफ अपने ही शहर में नौकरी का लालच, तो दूसरी तरफ वर्मा सर का परिवार मेरी नजरों में छाया था। उनके परिवार पर तो विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा होगा, इसका अंदाजा मुझे था। चार छोटे बच्चों की जिम्मेदारी के साथ उनकी पत्नी की नौकरी इसी शहर में ज्यादा जरूरी थी। एक तरफ स्वार्थ था, तो दूसरी तरफ नैतिकता का तकाजा। माता-पिता ने भी अंतिम निर्णय मेरे ऊपर छोड़ दिया था। मैं कई दिनों तक उलझन में रही, पर अगले दिन मैंने साक्षात्कार ना देने का फैसला कर लिया। मैं उस दिन कॉलेज गई ही नहीं।

कुछ दिनों बाद पता चला कि गुरु पत्नी अर्थात श्रीमती वर्मा की, वर्मा सर के स्थान पर नियुक्ति हो गई है। मुझसे कुछ टीचर्स ने पूछा भी कि मैं इस पद के लिए साक्षात्कार के लिए क्यों नहीं आई, पर मैं चुप रह गई। शायद मेरे मनोभाव को समझते हुए उन्होंने कहा, "तुमने बहुत अच्छा व हिम्मत का काम किया जो इस पद के लिए साक्षात्कार ही नहीं दिया, वरना मिसेज वर्मा के लिए बहुत मुश्किल हो जाती''। मेरे लिए इतनी प्रशंसा है ही काफी थी। सच कहूं तो उसे पल मेरा मन असीम संतुष्टि से भर उठा था। मेरे आदरणीय गुरु जी के लिए इससे अच्छी धर्मदक्षिणा व श्रद्धांजलि और क्या हो सकती थी।

अपने गुरूजी को याद कर मेरी आंखों में आंसू भर आए। मैंने काफी समय तक मिसेज वर्मा के साथ अध्यापन कार्य किया, पर इस घटना के विषय में मैंने उन्हें या किसी और को कुछ भी नहीं बताया। आज भी मुझे गर्व व संतोष है कि जीवन के इस दोराहे पर मैंने सही निर्णय लिया था, क्योंकि मैं तो विवाह के बाद बहुत दूर दूसरे शहर में आ बसी हूं और गुरुपत्नी पीएचडी करके आज भी उसी कॉलेज में पढ़ा रही है।

जिंदगी का यह निर्णय भले ही कठिन था, पर यह सोचकर कि मेरे एक त्याग ने मेरे गुरु के परिवार को स्थायित्व प्रदान कर दिया, मुझे असीम शांति मिलती है अपने गुरु के प्रति मेरी यह धर्मदक्षिणा, आखिर कोई बहुत बड़ा मूल्य तो रखती नहीं।

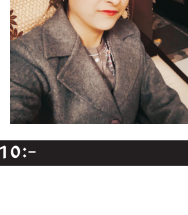

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)
7007224126

कुमार सानू से मुलाकात

२३ दिसंबर की रात्रि को पहुंचा जब मैं गहमर।
डुप्लीकेट कुमार सानू के रूप में मिले राजेश भटनागर।
उज्जैन और मथुरा के कलाकारों ने मचा रखी थी धूम।
बाल कान्हा का एक्ट देख कर सभी रहे थे झूम।।
सांस्कृतिक कार्यक्रम देख वहां का मैं तो रह गया दंग।
साहित्य की बातें सुना रही थी नेत्री संगीता बलवंत ।।
नाग नथैया के बाद सत्र हुआ फिर बंद।
विकास भवन में लिट्टी चोखा का था उत्तम प्रबंध।।
लिट्टी खा कवयित्री ने बांधी शमां काव्य की धार से
लोटपोट हुए सभी गीतिका जी के हास्य के फुहार से ।।
शयन कक्ष में मैं आह्लादित हो गया,मच्छरों के प्यार से।
सारी रात नींद ना आई दयाजी के खर्राटे के हाहाकार से।।
२४ दिसंबर को सुबह-सुबह ही पहुंचे गंगा घाट।
साहित्यकारों की टोली ने, सामुहिक धोए पाप।।
मां कामाख्या का रूप देख कर,
तन-मन मेरा डोल गया।
मंदिर परिसर में कवियों संग,
जय माता दी बोल गया।।
माता दर्शन के बाद सभी से, हुई हमारी मुलाकात।
लग रहा था बहुत पुराना आत्मीय संबंध और साथ ।।
अखंड भैया के मंच पर कही सबों ने, अपने मन की बात।
बातों-बातों में संतोष शान ने कर दी धन की बात।
मन की बात में अखंड की बात सुन, कार्यक्रम का हुआ विराम।
दोपहर का भोजन खाकर सब ने,किया हल्का विश्राम।।
सम्मान सत्र में सम्मिलित होकर, बढ़ा हमारा मान।
गोपाल राम गहमरी की स्मृति में, मिला ऐसा सम्मान।।
राजेश मिले ब्रजेश मिले, मिले दया,गोप,गणेश,ओम।
प्रियंका,मीना,कनक से मिलकर आलोक हुआ व्योम।।
ज्योति, अपूर्वा, मीना,कुमकुम साहित्य में अनुरक्त।
कृष्णा, किसलय,पंकज,पागल और मिले सुनील दत्त।।
जासूसी पर परिचर्चा की थी डह्.पुष्पा विशेन।
बिछड़न की जो बेला आई अश्रुपूरित नैन।।
भाव विस्वल हो सब ने अखंड गहमरी का धन्यवाद किया।
अविस्मरणीय यादों के साथ फिर गंतव्य की ओर प्रस्थान किया

विनोद कुमार विक्की
खगड़िया बिहार

मेरा अभिमान

सुमित को नौकरी मिल गई थी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। आज सुबह ही उसे फोन के माध्यम से सूचना मिली थी। वह एक माह पूर्व इस नौकरी के साक्षात्कार के लिए गया था, अपने दोस्त अमित के साथ। साक्षात्कार की उसने बहुत तैयारी की थी। अपने विषय की पढ़ाई करने के साथ साथ कम्पनी के बारे में भी पूरी जानकारी प्राप्त की थी। साक्षात्कार देने के बाद उसका मनोबल कुछ टूट सा गया था। कारण एक ही था भाषा की समस्या।

साक्षात्कार में उससे पूछे गए अधिकतर प्रश्न अंग्रेजी में ही थे। हिंदी भाषी प्रदेश से होने के कारण वह अंग्रेजी बोलने में हिचकिचाता था। प्रश्नों के उत्तर आते हुए भी वह अंग्रेजी में उत्तर नहीं दे पा रहा था। उसने साक्षात्कार समिति से आज्ञा लेकर सभी प्रश्नों के हिंदी में उत्तर दिए। उनका आखिरी प्रश्न भी यही था कि यदि कोई ग्राहक हिंदी भाषा नहीं समझता है तब आप उसे कंपनी के विषय में कैसे जानकारी दोगे ? सुमित ने ईमानदारी से उत्तर दिया था। "श्रीमानजी मैं आज ही से अंग्रेजी भाषा बोलने का अभ्यास प्रारम्भ कर दूंगा। जब तक कंपनी मुझे नियुक्ति देगी, मैं अंग्रजी भाषा निपुणता से बोलना सीख जाऊंगा।" और उसने किया भी वैसा ही।

आज सुबह जब उसके चयनित होने की सूचना आयी तो उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वह तुरंत अपने दोस्त अमित के घर की ओर चल दिया। अमित ने भी उसी कंपनी में साक्षात्कार दिया था। उसका अंग्रेजी ज्ञान सुमित से अधिक ही था। वह अंग्रेजी बोल भी पाता था। उसे उम्मीद थी कि अमित को भी नौकरी के लिए चुन लिया गया होगा। यही पता करने सुमित उसके घर जा रहा था। अमित घर पर ही था लेकिन उसका चयन नहीं हो पाया था।

सुमित को दुख हुआ। लेकिन अमित अपने चयनित न होने का कारण जानता था। उसने बताया कि उसने सभी प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में देने की कोशिश की परंतु अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार न होने के कारण साक्षात्कार कर्ता को अपना उत्तर समझा नहीं पाया। इसके उलट तुमने अपनी भाषा में सही उत्तर देकर उन्हें प्रभावित कर लिया। उन्हें विश्वास हो गया कि तुम अपनी मेहनत से अंग्रेजी भाषा बोलना भी सीख जाओगे। अमित ने कहा कि वह अब जान चुका है कि अपनी भाषा पर गर्व करके ही हम आगे बढ़ सकते हैं। सुमित उसकी बात से पूरी तरह सहमत था।

अर्चना जोधपुर राजस्थान

झूलती हिन्दी

भाषा उन महत्वपूर्ण इकाईयों में से एक है जो मानव जाति को एक सूत्र में पिरोकर रखती है। भाषा के स्वरूप का निर्धारण मानव समाज द्वारा होता है। निश्चित रूप से भाषा मानव की सहचारिणी है। शौक, आवश्यकता या कार्य की बाध्यता पड़ने पर जब मानव विश्व के दूसरे देशों में प्रस्थान करता है तो उसकी भाषा भी भौगोलिक विस्तार पाती है। कभी-कभी इच्छानुसार या आवश्यकतानुसार हम दूसरे देशों की भाषा का पठन-पाठन या उसमें शोध-अध्ययन भी करते हैं।

मनुष्य को श्रेष्ठतम वरदानों में भाषा एक अनुपम सौगात है। हिन्दी की बात करते हैं तो हमारा सीना गर्व से फूल जाता है। हिन्दी के उत्थान की कामना सदैव प्रत्येक भारतीय की रही है व जनमानस इस दिशा में सदैव प्रयासरत भी दिखते हैं। हिन्दी का विकास १०वीं व १२वीं शताब्दी से माना जाता है। हिन्दी संस्कृत की बेटी है। हिन्दी भारत का आत्म-गौरव है। देवनागरी लिपि कम्प्यूटर में लिखी जाए तो कोई समस्या नहीं होगी क्योंकि यह बहुत वैज्ञानिक लिपि है। यह दुनिया की एक-मात्र लिपि है, जो जैसी लिखी जाती है वैसी ही पढ़ी जाती है।

भारतेन्दु ने अपने जर्नल "कालचक्र" में नोट किया "हन्दी नए चाल में ढली १८७३"। सौ वर्ष बाद हिन्दी को ढालने का काम सरकार ने ले लिया। भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा माना गया है, परन्तु राजभाषा घोषित नहीं किया गया। इसके लिये कुछ वास्तविक और अधिकतर काल्पनिक समस्याओं को पिछले चार दशकों से उठाया जाता रहा है। कुछ तो राजनैतिक संदर्भो के प्रबल होने से और कुछ अंग्रेजी प्रभुता के समर्थक शक्तिशाली वर्ग की अभिसंधि से हिन्दी के स्वरूप को लेकर ही संशय खड़ा कर दिया गया। राजभाषा हिन्दी के लिए संघ सरकार की ओर से जो कोश और व्याकरण ग्रंथ बने वे निश्चय ही हिन्दी के अपने विद्ववानों द्वारा तैयार किये गये हैं, पर उनकी नियामक नीति सरकारी है, जो स्वयं कभी जानकर और कभी अज्ञान के अनिश्चय में झूलती रही है।

संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी काम-काज की भाषा राजभाषा कहलाती है। राजभाषा का प्रावधान संविधान में ३४३ से ३५१ के अनुच्छेदों में विर्णत है। अनुच्छेद ३४३ में संघ की राजभाषा के रुप में हिन्दी व देवनागरी को लिपि के रुप में मान्यता मिली। भारतीय संविधान में १४ सितम्बर १६४६ को हिन्दी को मान्यता दी। इसी कारण १४ सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है। अनुच्छेद १२० के अनुसार संसद का कार्य हिन्दी या अंग्रेजी में होगा। अनुच्छेद २१० के अनुसार प्रांतों के राज्य विधान मंडलों का कार्य राज्य की राजभाषा में या हिन्दी/अंग्रेजी में होगा। हिन्दी जब राजभाषा के चुनौती भरे पद पर आसीन हुई है, तब उसे भाषिक दायित्वों का निर्वाह भी करना है। जो आवश्यकता पहले अनुभव की गई थी वह आज भी की जा रही है, क्योंकि आज हिन्दी केवल साहित्य की ही भाषा नहीं बल्कि प्रशासन, कार्यालय और जनसंपर्क की भाषा भी है।

प्रशासनिक सेवाओं में अंग्रेजी को बढ़ावा देकर हिन्दी को उपेक्षित रखा गया है। न्यायालयों का कार्य भी अंग्रेजी में होने के कारण वकीलों, न्यायधीशों को अंग्रेजी में ही व्यवहार करना पडता है, जिससे अंग्रेजी के प्रसार को बल मिलता है तथा हिन्दी उपेक्षित होती है। हालाँकि कुछ न्यायधीश व अधिवक्ता विधिक क्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा दे रहे है और अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे है, लेकिन इनकी संख्या सीमित है। इस तरह की कुछ समस्याऐं हिन्दी को पूर्णतः राजभाषा बनने में रूकावटें पैदा करती रही है। इस प्रकार के कई विरोधों व कठिनाईयों के बावजूद आज प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी की प्रधानता है।

हिन्दी आज विश्व में अपने महत्व को रेखांकित कर रही है। संसार में हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसके नाम की उत्पत्ति से लेकर उसके व्याकरणिक विशेषताओं, साहित्यिक इतिहास लेखन व भाषा वैज्ञानिक अध्ययन तक सभी पहलुओं पर विदेशी विद्वानों ने अपनी रूचि दिखायी है, रूचि ही नहीं बल्कि पहली बार इन सभी बिन्दुओं पर अपनी कलम चलायी है।

आज हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि समयानुसार हिन्दी में कई बदलाव आए व इसके स्वरूप में बहुत परिवर्तन आया जो इसे गति देने में सहायक हुए हैं और इसी कारण वर्तमान में मीडिया, इंटरनेट-ब्लॉग, फेसबुक, व्हाट्सएप आदि के कारण हिन्दी की स्थिति समृद्ध हुई है। हिन्दी विकासमान भाषा है, यह स्थिर नहीं है, यह गतिमान है इसी कारण यह कार्यालीन और प्रशासनिक भाषा की क्षमता से पूर्ण है। हिन्दी ही वह भाषा

है जो राष्ट्र में जन भाषा, संपर्क भाषा व संस्कार भाषा के रूप में विद्यमान है। हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शासन एवं प्रशासन स्तर पर प्रयोग करने के साथ-साथ कार्य व्यवहार में भी लाना होगा तभी हिन्दी की स्थिति मजबूत होगी। सुप्रसिद्ध भाषा विद डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार यह कहा जा सकता है कि "राजभाषा के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी की तरह न केवल प्रशासनिक प्रयोजनों की भाषा है बल्कि उसकी भूमिका राष्ट्रभाषा के रूप में भी है। वह हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा है।''

वर्तमान समय में हिन्दी विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है फिर भी भारत में यह उपेक्षित रही है। आज भी सरकारी काम-काज अंग्रेजी में ही होता है। इसका मुख्य कारण राजनीतिक इच्छाशक्ति का न होना है। यदि हमारी सरकार अदम्य इच्छाशक्ति रखे तो वह दिन दूर नहीं जब यह भाषा अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान पर आ जाए। हिन्दी भाषा आज भी उपेक्षा का शिकार है। १८१५ ई० में जर्मनी के स्वतंत्र होने पर बिस्मार्क ने आदेश दिया था कि एक वर्ष के भीतर सभी काम-काज जर्मन भाषा में होंगे, जो नहीं करेंगे उन्हे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा। एक वर्ष के भीतर ही जर्मन भाषा राष्ट्रभाषा बन गई परन्तु भारत में अंग्रेजी के भक्तों के कारण हिन्दी राजभाषा पूर्णतः नहीं बन पाई है।

डॉ. राधा दुबे
जबलपुर (म.प्र.)

जय माँ सरस्वती

जय -जय-जय माँ सरस्वती
हे सकल विश्व भव तारिणी
तेरे शरण मैं आई माता
जय माँ कष्ट निवारिणी।

शुभ्रवस्त्रा धारिणी माता
जय माँ हंस सवारिनी
जय-जय-जय पद्मासना देवी
हे माँ ज्ञान प्रकाशिनि।

विद्या-बुद्धि दायिनी माता
जय माँ जग उध्दारिणी
ज्ञान का दीप जला दो माता
जय माँ वीणा वादिनी।

कमल आसन शोभित माता
वीणा-पुस्तक धारिणी
भक्तों का दुःख हरती माता
जय -जय-जय जगतारिणी।

तीनों लोक में पूजित माता
भव-बंधन भय हारिणी
काव्याकृति करे आरती
जय-जय माँ विश्वधारिणी।

कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'
योगनगरी मुंगेर, बिहार
सदस्य संपादक मंडल
साहित्य सरोज

राम जी की फोटो

दरअसल गलती मेरी ही थी । यदि उस दिन मेले में जाकर माँ के लिये रामजी का फोटु पसन्द करके मैं ना लाता तो घर में इतना बखेड़ा ही ना होता ।रामजी के फोटो को लेकर घर में घमासान मचा हुआ था । माँ और छोटा बन्टी एक तरफ थे , तो बिन्नी और उसकी मम्मी यानी श्रीमती एक तरफ । और मैं ? मैं किधर था ? माँ की तरफ ? बेटी की तरफ या श्रीमती की तरफ ? मैं तो सब तरफ था , हर तरफ था । यद्यपि मैं कोई देवता नहीं था ,जो हर तरफ हो सब की तरफ हो । लेकिन मैं अकेला कहाँ था मैं बेटा भी था ,मैं बाप भी और भी मैं पति था । अब यदि इन सारे स्वरूपों में ही युद्ध होने लग जाये तो बैचारा मैं कहाँ जाये ? खैर बात विस्तार से बताना होगी तभी आपको भी समझ में आयेगी । होता युँ है कि गाँव से माँ आई हुई है, महीने दो महीने साथ रहने के लिये । नयी बात नहीं है साल में दो तीन बार आती है। मेरे यहाँ रहना उसे अच्छा लगता है। पत्नी को भी कोई परेशानी नहीं होती । सास-बहु दोनो में अच्छा सामंजस्य है , और बच्चे तो दादी के प्रति बहुत स्नेह भी रखते हैं , और उसे ज्यादा से ज्यादा अपने साथ रखना चाहते हैं । क्योंकि मैं तो व्यस्त रहता हूँ आफिस कार्य में और वाइफ व्यस्त रहती है घरेलू काम में । अब इनका दिन भर का साथ देने वाली तो दादी ही थी , तो बड़ा बेटा गोलु , बिन्नी और छोटा बन्टी तीनों दादी से प्यार भी करते थे और उसका साथ भी पसन्द करते थे । लेकिन यहाँ एक पेंच अक्सर फँस जाता था । बिन्नी यानि मेरी दस साल की बेटी और माँ के बीच यानी दादी और पोती के बीच । वैसे ये आम घरों की कहानी है कि दादी पोती में प्यार भी बहुत होता लेकिन बहस और जिद भी बहुत होती रहती है । मेरे यहाँ भी बिन्नी अपनी दादी से प्यार भी बहुत करती है उसका ध्यान भी बहुत रखती है लेकिन अपनी बात मनवाने या उपर रखने में कोई समझौता नहीं करती बल्कि दादी से भी पूरी टक्कर लेती थी ।

अक्सर दादी-पोती में बहस और विवाद होता रहता था। विवाद के कारण वही कुछ जो पीढ़ीयों के अंन्तर या विचारधारा का फर्क पुराने रहन सहन का ढँग और नयी पीढ़ी की नफासत भरी लाइफ स्टाइल । माँ अपने सिरहाने प्लास्टिक के तीन-चार छोटे-छोटे डब्बे रखती थी जिनमे उसकी दवाई गोली ,खाने का कुछ आइटम बिस्कुट वगैरा रखती थी । बिन्नी इस बात की जिद करती कि ये डब्बे यहाँ अच्छे नहीं लगते इनको अन्दर रखो, माँ नहीं मानती । माँ शाम पाँच बजे से कल सुबह पहनने के कपड़े अपने सिरहाने रख लेती। बिन्नी इस बात पर बहुत गुस्सा होती कहती दादी ने बैठक रूम की बारह बजा दी है । और माँ का कहना था कि “ईमे कोई गलत है ?” बिन्नी के कपड़े आजकल की फैशन के अनुसार थोड़े शार्ट होते, माँ कहती “अच्छा नी लगे ”। ऐसी कई छोटी-छोटी बातें बहस का रूप ले लेती । और इन सब बहस का अन्त होता माँ के इस वाक्य पर कि “वा म्हके कँई करनो जैसो तमारे अंच्छो लगे वैसो करो ”। इतना कह कर माँ चुप होकर सो जाती । माँ को नाराज जान कर थोड़ी देर बाद खुद बिन्नी ही दादी के गले लग जाती उसे मना लेती और माँ नार्मल हो जाती । इसी तरह दिन भर में घर में कोई खास घटना होती ,रिश्तेदारों का कोई पत्र या जानकारी पता चलती तो शाम को जब मैं आफिस से घर आता तब दादी और पोती में इस बात की होड़ मचती कि पहले वो सारी बातें मुझे कौन बताये ।

मेरे घर में घुसते ही माँ शुरू करना चाहती तभी उसकी बात काट कर बिन्नी सुनाने लग जाती लेकिन माँ उसे तत्काल डाँटती “चुप चुप रे तू हमके बताने दे ” ।दोनो में बहस छिड़ जाती ऐसी बहस का अन्त इस स्तर तक आ जाता कि बिन्नी जोर से कहती “मेरे पापा हैं मैं बताउँगी उनको ”। लेकिन माँ उससे ज्यादा जोर से चिल्लाकर कहती कि “म्हारो भी छोरो है वो ,मैं बतउँगी उके ”। और मैं किंकर्तव्यविमुढ़ सा दोनो के बीच खड़ा इस बाल-वृद्ध बहस का अन्त होने का इन्तजार करता । ऐसे में थर्ड पार्टी के रूप में श्रीमती का आगमन होता । कुछ बिन्नी को डांट कुछ माँ को उलाहना देकर दोनो योद्धाओं को अलग-अलग कर देती और दोनो ही थोड़ा-थोड़ा गुस्सा लिये चुप हो जाते। हालाँकि चलती बहस के दौरान ही दोनो जोर-जोर से बोल-बोल कर संबधित घटना का पूरा ब्योरा मुझे बता भी देते ।

ऐसी कई छोटी-मोटी, खट्टी-मीठी बातें होती रहती । सभी घरों मे होती रहती है । लेकिन इन्ही के बीच मैं जिस समस्या में उलझा वो बात आगे बढ़ाते हैं । नगर में लगे मेले में हम पति-पत्नी और बच्चे घूमने गये थे।

वहीं एक फोटो एवं पेंटिंग्स की दुकान पर मैं ठिठक गया । वहाँ बहुत से धार्मिक फोटो के अलावा फिल्म स्टार के और प्राकृतिक दृश्यों के फोटो रखे थे । लेकिन मेरी नजर एक क्षण में ही सामने रखे एक बड़े फोटो पर टिक गई जिसमें भगवान श्री राम सीता और लक्ष्मण का चित्र पूरे खड़ी मुद्रा में दर्शित था तथा उनके चरणों में हनुमान जी बैठे थे । फोटो बहुत सुन्दर पुरातन एवं प्रभावी था । फोटो की साइज भी काफी बड़ी थी। लगभग साढ़े तीन फुट ऊँचा और ढाई फुट चौड़ा था। फोटो का चित्रांकन तुलसी की रामायण में वर्णीत प्राचीन शैली का होकर बड़ा मोहक और श्रद्धा जाग्रत करने वाला था ।

मुझे पता था माँ बहुत धार्मिक स्वभाव की है तथा श्रीराम उसके आराध्य हैं जिन्हे वो अन्य सभी भगवानों से ज्यादा स्मरण करती है । मेरे दिमाग में आया कि ये फोटो माँ को बहुत अच्छा लगेगा और पूजा घर की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि होगी । मैंने श्रीमती को बताया वो भी सहमत थी । मोलभाव करके फोटो घर ले आये । फोटो घर ले जाते समय रास्ते में मै स्वयं को बहुत प्रफुल्लित महसूस कर रहा था। माँ यह फोटो देख कर बहुत खुश होगी ये एहसास था । वैसे भी जीवन की वास्तविक खुशी का सार ही यह होता है कि हम किसी अपने प्रिय या अपने स्वजन के लिये कुछ करते हैं जिससे वो खुश होता है तथा उसे खुश देखकर उसकी खुशी का कारण स्वयं को मानकर हम भी खुश होते है और खुद में ही कुछ बड़कपन महसूस करते हैं ।

घर पहुंचते पहुंचते रात के दस बज चुके थे । माँ लगभग सो चुकी थी। मैं बैचेन था माँ को रामजी का फोटो बताने के लिये। लेकिन मुझे रात को उसे उठा कर फोटो बताने के बजाय सुबह बताना ही ठीक लगा । माँ हमेशा हमारे बैठक रूम में रखी शैट्टी पर ही सोती थी । दो बेडरूम किचन डायनिंग और गेस्ट रूम यही कुछ था हमारे निजी मकान में । एक बेडरूम में हम पति-पत्नी दूसरे में बच्चे और कोई गेस्ट आये तो गेस्ट रूम में । मैने माँ से कहा कि वो गेस्टरूम में आराम से सोया करे , लेकिन माँ का कहना था कि अलग कमरे में उसे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगेगा । मैं तो आगे बैठक में ही सोउंगी और दिन भर बैठूंगी भी। मैने उसकी व्यवस्था बैठक रूम में ही रखी शैट्टी पर कर दी थी । अब वो रात में वहीं सोती और दिन में भी ज्यादातर समय वहीं गुजारती । हालाँकि कभी-कभी मित्रों या अन्य मिलने वालों के आने पर वहीं बैठ कर बातें करना थोड़ा असहज सा लगता था लेकिन मैने इन स्थितियों को स्वीकार कर लिया था । अगर किसी तरह की असहज स्थिति को बदल ना पाये तो उसे उसी रूप मैं स्वीकार कर लेना चाहिये , फिर वही स्थिति सामान्य लगने लगती है ।

दूसरे दिन प्रातः उठते ही मैने राम जी का फोटो माँ को दिखाया फोटो देखते ही माँ गदगद हो गई अरे! वाह बेटा कितना सुन्दर फोटो लाया है ,कितना भव्य और मोहक । तत्काल ही माँ ने फोटो में स्मित हास्य बिखेरते भारतीय जनमानस के ह्दय नायक श्रीराम लक्ष्मण सीता और उनके चरणों में बैठे हनुमान जी के आगे श्रद्धा से सिर झुका दिया । हम पति पत्नी बन्टी बिन्नी और गोलु बहुत अभिभुत थे माँ को इतना प्रसन्न और आल्हादित देख कर। लेकिन इन आल्हादकारी क्षणों के तत्काल बाद आने वाली एक छोटी किन्तु गम्भीर समस्या का किसी को भान नहीं था । भींगी पलके और गहराती श्रद्धायुक्त आवाज में माँ बोली "सुबह उठते ही ऐसे रामजी के फोटो का दर्शन रोज कर लो तो जीवन धन्य हो जाये, सब पाप मिट जाये" । हम सब ने बिना उनकी बात का आशय समझे सहमती में सर हिलाया । पत्नी किचन में जा चुकी थी बच्चे भी उनके कामों में व्यस्त हो गये थे । मैं माँ के पास ही बैठा था अचानक माँ बोली बेटा एक काम कर दे तु आज । क्या माँ ?मैने माँ की आँखो की ओर देखा । "ये राम जी का फोटो तु लाया है ना इसको सामने दिवार पर लगा दे। ऐसा लगा कि मैं सुबह उठूँ तो आँख खोलते ही राम जी के दर्शन हो ।" मैं चौंका यहाँ ?ड्राइंग रूम में ?रामजी का फोटो ? माँ ये फोटो बहुत बड़ा है यहाँ अच्छा नहीं लगेगा । "क्यों अच्छा क्यों नहीं लगेगा ?भगवान का फोटो है इसमें अच्छा , नी अच्छा क्या ?'' ठीक है देखेंगे माँ " मैने बात खत्म करने की गरज से कहा और जाना चाहा तभी माँ का स्वर फिर गूँजा "तो आज बाजार से बड़ी बिरंजी लेते आना और शाम को लगा देना फोटो "।

माँ की बात पूरी होते ना होते बिंन्नी बाहर आई "क्या हुआ दादी ? बिरंजी किस लिये बुला रही हो "? "अरे ये रामजी का फोटो लगाना है यहाँ दिवार पर । अच्छा लगेगा ना बिन्नी ? "यहाँ दिवार पर ?ड्राइंग रूम में , रामजी का फोटो ? बिन्नी हँसने लगी माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा। "क्यों हँसी क्यों ?" "अरे दादी भगवान का इतना बडा फोटो कोई ड्राइंगरूम में लगाता है क्या " ?
" भगवान का नी लगाय तो किनका फोटू लगाय ? ये पहाड़

का जंगल का और नदी का फोटु लगाय और भगवान का फोटु लगाने में शरम आये वाह रे जमाना। ” मैने बातचित का रूख बदलने की कोशिश की। मैं जानता था कि कुछ ही मिनिटों में बात एक बहस का रूप ले लगी। लेकिन दोनो पूरी तैयारी से थे। बिन्नी बोली “दादी आजकल भगवान का फोटो कोई नहीं लगाता ड्राइंग रूम में। यहाँ तो पेंटिग लगाते हैं नेचर के फोटो लगाते हैं भगवान के फोटो तो गाँव के लोग लगाते हैं ”। “अरे वाह! तू शहरवाली चुप रे तु। श्याम तु लगा तो फोटो आज ही लगा दिवार पे ”। ” नहीं पापा ये फोटो पूजाघर में लगेगा ड्राइंगरूम में नहीं। बिन्नी भी पुरे अधिकार से जोरों से बोली। मैं दोनो की बहस सुनता अनिश्चय की स्थिति में खड़ा था। मैनें तात्कालिन उपाय निकाला ” चलो शाम को देखते हैं। बिन्नी तुमको भी स्कूल जाना है ना? चलो बात खत्म करो ”। यह कहते हुए मैं रामजी का फोटो पूजाघर की दिवार के सहारे रखते हुए आफिस जाने की तैयारी करने लगा।

मैं अपनी तैयारी कर रहा था पर मेरे दिमाग में रामजी का फोटो और माँ और बिन्नी की बहस गूंज रही थी। माँ के तेवर देख कर लग रहा था कि वो शाम को फिर ये बात उठायेगी क्योंकि उसकी नजर में इससे अच्छी कोई बात हो नहीं सकती। इतना अच्छा भगवान का फोटो ड्राइंगरूम में लगाने से क्या गलत हो जायेगा ? वैसे वो सही थी अपनी जगह। मुझे याद आया मेरे गाँव का मेरा पैत्रिक मकान जिसके बैठक रूम की क्या हर कमरें की दिवारें भगवानों के फोटोओं से भरी रहती थी। रामजी , कृष्णजी , भोलेनाथ, हनुमान जी कौन से देवता बचते जिनका फोटो दिवार पर ना लगा होता। दिवारों के उपरी हिस्से में कोइ जगह बची रहती जहाँ कोई ना कोई भगवान का फोटो ना लगा रहता और सिर्फ मेरे घर की ही नहीं सभी के घरों की यही स्थिति होती थी। लेकिन ये भी सच था कि अब वर्तमान बदलते सामाजिक परिवेश मे ड्राईंगरूम से भगवान के फोटो गायब हो रहे थे। उनकी जगह प्राकृतिक दृश्यों के फोटो माडर्न आर्ट की पेंटिग या बच्चों की बनाइ कलाकृतियों ने ले ली थी। भगवान के फोटो अब सिमट कर पूजाघरों तक ही सीमित हो गये थे। हालांकि ये स्थिति शहरों की थी। गांवो में अभी भी पुराना पैटर्न बचा था। और घर की दिवारों पर भगवान की तस्वीरों का कब्जा था। बिन्नी का कहना बिलकुल गलत नहीं था। साढ़े तीन बाइ ढाई की साइज का भगवान का फोटो ड्राइंगरूम में तो विचित्र ही लगेगा।वैसे भी मैं जो फोटो लाया था राम जी की वो धार्मिक सौन्दर्य बोध की द्रष्टी से अति उत्तम थी लेकिन वो कोई आधुनिक कलात्मकता को दर्शाते हुए नहीं बनी थी। मुझे लग रहा था की माँ को ही समझाना पड़ेगा। मैने आफिस जाते-जाते ड्राइंगरूम की दिवारों पर नजर डाली। एक दिवार पर उँचे पहाड़ से गिरते झरने की बड़ी सी पेंटिंग लगी थी दूसरी दिवार पर ऊपर की तरफ एक सुन्दर सी दिवाल घड़ी लगी थी जिसके नीचे की तरफ चार तितलियों की एक-एक के क्रम से चिपकी हुई प्रतिकृति लगी थी। तीसरी दिवार पर बिन्नी की बनाई हुई एक गुड़िया की कलाकृति ने जगह घेर रखी थी। रही चौथी दिवार तो उसे खिड़की और दरवाजे ने बाँट ली थी। अब रामजी के इतने बड़े फोटो को कहाँ जगह दी जाये ? वैसे कर्मयोगी श्रीकृष्ण का एक छोटा सा फोटो दिवाल घड़ी के नीचे शोभा पा रहा था लेकिन रामजी के इस विशाल फोटो के लिये जगह निकाल पाना मुश्किल ही लग रहा था। समस्या का फिलहाल तो कोई हल नहीं दिख रहा था मैने ज्यादा चिन्ता तो नहीं की शाम तक संभव था कि दोनो ही इस बात को भूल जायें और बात खत्म। आफिस से लौटते हुए मेरे दिमाग में फिर रामजी का फोटो आ चुका था। सुबह उठा मुद्दा अब तक खत्म हो चुका होगा ऐसा मेरा विचार था लेकिन घर में घुसते ही घर में फैला सन्नाटा मुझे कुछ संशयपूर्ण लगने लगा।

वही हुआ , घर में घुसते ही माँ का पहला प्रश्न था। बिरंजी लाया बेटा फोटो लगाने की ?मैने कहा हाँ माँ देखते हैं अभी। और मैनें बेडरूम में प्रवेश किया मेरी नजरे बिन्नी को खोज रही थी। बिन्नी मुँह फुलाये बिस्तर पर पड़ी थी। क्या हुआ भई बिन्नी को ? मैने श्रीमती से पूछा। क्या-क्या हुआ , दिन भर दोनो दादी-पोती में बहस होती रही फोटो लगाने के लिये। ओह! मेरा माथा ठनका। श्रीमती फिर बोली माँ जी ने तो गजब ही कर दिया बन्टी से बाजार से बिरंजी बुलवा ली और मुझसे कहने लगी की बहू तू ही ठोक दे बिरंजी दिवार में और टांग दे रामजी की फोटो। फिर ? मै आश्चर्यचकित था। फिर क्या इधर से बिन्नी बोली उधर से माँजी बोलती रही। मैने तो कह दिया माँजी आप जानो और आपका बेटा जाने में तो कुछ नहीं करूंगी। तब से माँजी आपका रास्ता देख रही हैं। माँ ने खाना खा लिया क्या ?हाँ माँजी ने तो खा लिया है मगर ये बिन्नी ने नहीं खाया है इसे मना कर खाना खिलाओ।मैने बिन्नी को गुदगुदी की और अपनी गोद में छुपा लिया मगर

वो नाराज होती हुई बोली “पापा मैं गलत कह रही हूँ क्या ?इतना बड़ा रामजी का फोटो ड्राइंगरूम में अच्छा लगेगा क्या ?दादी समझती क्यों नहीं। दिन भर मुझसे लड़ती रही बहस करती रही। मैने उसे समझाया ‘ बेटा बड़े-बूढ़ो का स्वभाव एसा ही होता है जो बात उन्हे ठीक लगती हे वो उन्ही पर टिके रहते हैं। लेकिन आप बताओ गलत है ना फोटो वाली बात ?हाँ-हाँ ठीक है हम देख लेते हैं क्या करना है । मैंने बिन्नी को भी टालते हुए कहा । तभी श्रीमती बोली देखना आप भी माँजी की बात में मत आ जाना । रामजी का फोटो पूजाघर में ही लगाओ उनको बोलो कि रोज सुबह पूजा घर में रामजी के दर्शन कर लिया करे । हमारी बातें सुन रहा छोटा बन्टी बीच में बोल पड़ा पापा जब दादी इतनी जिद कर रही हैं तो भगवान का फोटो ड्राइंगरूम में ही लगा दो ना । तू चुप रह बन्टी, बिन्नी ने बन्टी को डांटा तो बन्टी ने भी जवाब दिया ‘तू चुप रह सुबह से दादी से लड़ाई कर रही है । चलो सब चुप हो जाओ। मैनें बात खत्म करते हुए पत्नी से खाना लगाने का कहा । खाना खाकर आगे ड्राइंगरूम में माँ के पास बैठा और उसके हाथ पर हाथ रखा । खाना खा लिया बेटा ?हाँ माँ खा लिया है मैनें जवाब दिया । तो अब वो फोटो लगा दे ना बेटा । हाँ माँ देखता हूँ। मैने कुछ ठण्ड़े-ठण्डे गोलमाल जवाब दिया ।

‘‘देखता हूँ , देखता हूँ ?कँई देखता हूँ ?माँ बिस्तर पर बैठी हो गई तू भी इनकी बात में उलझी गयो शायद थारो मन भी नी हे फोटो लगाने को ” । माँ अब खुलकर सामने आ गई थी ।माँ आजकल ड्राइंगरूम में ऐसे बडे फोटो कोई नहीं लगाता । मैने विरोध शुरू किया कोई से कई मतलब अपने अच्छो लगे तो लगानो हे बस। भगवान को फोटो अपना घर में लगाने में कोई शरम की बात । रोज सुबह उठी ने भगवान का दर्शन अच्छो रे बेटा । माँ ने फिर भावुकता का हथियार उपयोग किया । ठीक है माँ तुझे सुबह-सुबह आँख खुलते ही रामजी के दर्शन करना है ना ?बस बेटा एक ही इच्छा है । ठीक है हो जायेगे सुबह भगवान के दर्शन । तो रात में लगायगो कई , चुपचाप ?जब सब सो जायेगा तब । माँ ने बड़े राजदार अन्दाज में पूछा । हाँ माँ तुमको सुबह भगवान के फोटो के दर्शन हो जायेंगे बस । माँ को आश्वासन देकर मैं बेडरूम में आ गया । बच्चे उनके कमरे में पढ़ाई कर रहे थे श्रीमती अभी जाग रही थी । मुझे देख मुस्कराती हुई बोली ‘ क्या वादा करके आये हो अपनी माँ से श्रवण कुमार जी ? कुछ नहीं मैने ठण्डे स्वर में कहा और लेट गया । पत्नी समझ गई कुछ ठीक नही है अभी ।

मेरी नजर दिवार पर लगी घड़ी पर गई रात के दस बज रहे थे । मेरा दिमाग इस समस्या का समाधान सोच रहा था । कुछ राह नजर भी आ रही थी लेकिन पत्नी और बच्चों का सोना भी जरूरी था । साढ़े ग्यारह होते होते सभी सो चुके थे मुझे भी नींद आने लगी थी लेकिन जागना जरूरी था ।बारह बजे मैं उठा डायनिंग हाल में लगे पूजाघर के सामने कुर्सी पर बैठा सामने ही रामजी का फोटो रखा हुआ था। मैं रामजी की तरफ प्रश्नवाचक नजरों से देखने लगा । प्रभुजी क्या करूं आप ही कोई रास्ता सुझाओ । माँ को खुश करूं या बिन्नी की मानुँ ?रामजी भी मुस्कराये मुझे लगा कह रहे हों “वाह बेटा मेरी दुनिया में रहके मजे मार रहा है और तेरे ड्राइंगरूम में मेरे फोटो के लिये भी जगह नहीं ” । अब मैं कैसे बताता रामजी को कि भगवानों के फोटो से दिवारें भरने का फैशन अब नहीं रहा । ड्राइंगरूम में भगवान का इतना बड़ा फोटो बेकार लगेगा । मेरा मन भी यही मानता था बिन्नी सही थी लेकिन माँजी की आस्था भी तो सही थी । ऐसे में माँ को भी तो दो टुक नहीं कहा जा सकता कि फोटो नहीं लगा सकते । फिर भी कुछ तो करना होगा ।

मैं उठा कुछ उपाय सोच चुका था । आगे ड्राइंग रूम में देखा माँ जिस शैट्टी पर सोई थी उसके सामने दिवार से लगी जगह खाली थी । मैने डायनिंग टेबल की एक कुर्सी खिसका कर दिवार से सटाकर लगाई उस पर रामजी का फोटो दिवार के सहारे इस प्रकार रखा कि सुबह उठते ही मा ँकी नजर उस फोटो पर ही जाये । फोटो गिरे नहीं इसका भी इन्तजाम किया । फिर आश्वस्त होकर अपने बेडरूम में आकर लेट गया। मुझे मालूम था माँ सुबह पाँच बजे उठ जाती है , जबकि श्रीमती और बच्चे सुबह साढे छः तक उठते हैं । अब मुझे सुबह माँ के उठ कर बाथरूम जाने के बाद और श्रीमती के उठने के पहले फोटो वापस पूजाघर में रखना था । चिन्ता के मारे नींद भी बड़ी मुश्किल से आई लेकिन सुबह पाँच बजे ही खुल भी गई । माँ के राम राम भजने की आवाज आ रही थी ।

मैं उठ कर ड्राइंगरूम में गया माँ बहुत खुश थी । उसने सुबह उठ कर बैठते ही रामजी के हाथ जोड़ कर दर्शन किये थे । वाह बेटा बहुत अच्छा किया तुने सुबह सुबह रामजी के दर्शन हो गये बस ऐसे ही रोज दर्शन होते रहें तो बेड़ा पार है । माँजी अब मैं रामजी को वापस

पुजाघर में रख रहा हूँ । क्यों ?। " ऐसा हे माँ यहाँ भगवान का फोटो दिन भर रखा तो आते-जाते सब टकरायेंगे लात लगायेंगे भगवान को "। "ठीक हे बेटा" कहते हुए माँ तो बाथरूम जा चुकी थी, मैं राम जी का फोटो पूजाघर में रख कर वापस बिस्तर पर आकर बाकी नींद पूरी करने की कोशिश करने लगा ।सुबह आठ बजे वापस नींद खुली । घर में बड़ी शान्ती थी । पत्नी ने बताया सुबह-सुबह बहुत खुश थी माँजी और बिन्नी को चिढ़ा भी रही थी कि उसने तो सुबह पाँच बजे रामजी के फोटो के दर्शन किये थे यहीं बिस्तर पर बैठे-बैठे । बिन्नी मानने को तैयार नहीं थी लेकिन माँजी बहुत खुश थी । तो ये कौन सा फार्मूला चलाया मेरे जादूगर पतिदेव कि माँ भी खुश है और बेटी भी ? पत्नी ताना मार रही थी । खैर मैं भी खुश हुआ ये जानकर कि फिलहाल माँजी और बिन्नी दोनो खुश हैं ।

मैने दूसरे दिन भी यही फार्मूला अपनाया । देर रात को रामजी का फोटो आगे ड्राइंगरूम में दिवार के सहारे कुर्सी पर रखा और सुबह-सुबह चिन्ता कर पाँच बजे उठ कर वापस पूजाघर में । फिर तीसरी रात भी साढ़े बारह पर रामजी वापस ड्राइंग रूम में। इन तीन दिनों में मेरी नींद बहुत गड़बड़ा चुकी थी । वैसे भी मैं बहुत आरामी जीव रहा हूँ रोजाना आराम से उठने वाला लेकिन पिछली तीन रातों से मेरी नींद पूरी नहीं हो पा रही थी । तबियत बिगड़ने लगी थी । रात को रामजी का फोटो ड्राइंगरूम में ले जाते हुए मेरी नजर रामजी पर पड़ी ।

मुझे लगा वो भी परेशान हो रहे हैं उनकी भी रोजाना परेड हो रही है। कभी पूजाघर तो कभी ड्राइंगरूम । मैने असहाय नजरों से उन्हे देखा , क्या करूँ मैं भगवान ?आप ही कुछ करो शायद मेरी याचना उन तक पहुँचे ।चौथी रात मैं रामजी का फोटो ड्राइंग रूम में जमा कर बिस्तर पर लैटा था । लेटते ही नींद आ गई। सुबह लगा कोई मुझे उठा रहा है आँखे खोली तो देखा बिन्नी मुझ पर झुकी हुई मुझे झिंझोड़ रही थी । पापा उठो पापा उठो । क्या हुआ बिन्नी ?मैं आधी-अधूरी नींद में ही था । उठो मैं आपसे बहुत नाराज हूँ पापा। क्यों बेटा ?मेरी नींद उड़ चुकी थी , क्या हुआ बिन्नी ? पापा वो रामजी का फोटो ?अरे बाप रे मैं उठ कर भागा घड़ी की तरफ नजर डाली सात बज रहे थे। ओफ! आज मैं चूक गया ।ड्राइंगरूम में पहुंचा । रामजी वहीं मेरा इन्तजार कर रहे थे । मैने तत्काल फोटो उठाया और पूजाघर में रखने चला तभी बिन्नी ने मुझे रोक दिया मेरा हाथ पकड़ लिया । क्या हुआ बिन्नी ? मैने बिन्नी की ओर देखा , बिन्नी की आँखो में आँसू तैर रहे थे । आप मेरे पापा हो ना ? मैं तो नादान बच्ची हूँ कोई बेवकूफी की बात करूँ तो आप मुझे डाँट भी सकते हैं रोक भी सकते हैं ।हां तो क्या हुआ ? मम्मी ने मुझे सब बता दिया है। आप तीन दिन से देर रात तक जाग कर रामजी का फोटो दादी के लिये ड्राइंगरूम में कुर्सी पर जमाते हो और सुबह हमारे उठने से पहले उठकर वापस पूजाघर में रखते हो । हाँ तो क्या हुआ बिन्नी ? ये कौन सी बड़ी बात है ? पर क्यों ? आप मेरी जरा सी जिद के लिये तीन दिन से सो नहीं पा रहे हैं। मैं जानती हूँ आपको सुबह देर तक सोने की आदत है । क्या आप मुझे डांट कर रोक नहीं सकते थे? क्या मेरी जिद मेरे पापा की नींद से भी बढ़ कर है? आपने ऐसा क्यूं किया पापा ? बिन्नी की आँखो से आँसू बह रहे थे , आवाज भर्रा रही थी । वो फिर बोली , सारी पापा सारी दादी मुझे माफ करो । पापा आप रामजी की फोटो आज ही आगे ड्राइंगरूम में दिवार पर लगा दो ।

अरे बिन्नी एसी कोइ बात नहीं है वो तो मैं खुद भी यही सोचता था । नहीं पापा आप अभी लगाओ यह फोटो , बिन्नी रामजी के फोटो की ओर बढ़ी ।ठीक है चलो तुम कहती हो तो..मेरी बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि मैने अपनी पीठ पर माँ के हाथ का स्पर्श महसूस किया ।

सारी बातचित के दौरान माँ वहीं हमारे पीछे ही खड़ी थी । अरे रूक बेटा ,पता है आज रामजी आये थे मेरे सपने में ।क्या? मैं गौर से देखने लगा माँ की आँखे कुछ भींग रही थी , आवाज कुछ भारी हो रही थी ।" रामजी कह रहे थे मुझे तुम्हारे ड्राइंगरूम में अच्छा नहीं लगता है मैं पूजाघर में ही ठीक से रह सकूँगा। तो अब तू उनका फोटो आज से पूजाघर में ही रखा रहने दे। माँ मुश्किल से अपनी बात पूरी कर पाई । मैं समझ रहा था माँ ऐसा क्यों बोल रही है । मैने उसका विरोध करते हुए कहा "अरे नहीं माँ मैं अभी ड्राइंगरूम में यह फोटो लगाता हूँ'' । "नहीं बिल्कुल नहीं। मैने कहा ना रामजी की इच्छा पूजाघर में ही रहने की है, मेरा क्या'' ? मै सुबह उठ कर दो कदम चल कर पूजाघर में ही उनके दर्शन कर लूंगी । तू पूजाघर में ही सजा दे रामजी की फोटू । माँ तू खुश तो है ना ? मैंने माँ की और देखा , फिर बिन्नी की ओर देखा और फिर बिन्नी और माँजी के बीच खड़ा रामजी के फोटो की ओर देखने लगा । रामजी मुस्करा रहे थे शायद कह रहे थे 'अब तो ठीक है ना ?मैने बिन्नी को और माँ को

अपने गले से लगा लिया । “बेटा, यदि सारा खाना लग गया हो, तो यहां तुम भी अपनी प्लेट लगा लो।'' माँ बोली। “पर मां जी, मैं यूं आप लोगों के साथ?'' हिचकते हुए सुषमा बोली।”क्यों ?क्या हो गया ? क्या मायके में अपने मम्मी-पापा और भैया के साथ खाना खाने नहीं बैठती थी ?'' माँ ने आश्चर्य से पूछा।
“जी बैठती तो थी।'' सुषमा बोली।
“तो फिर यहां क्या दिक्कत है बेटा ?इस परिवार की परंपरा है कि हम दिन में भले ही अलग-अलग समय पर नास्ता और खाना खाएं, पर रात का खाना सभी एक साथ बैठकर खाते हैं। मैं भी शादी के बाद जब यहां आई, तो अपने सास-ससुर और जेठ-जेठानी और बच्चों के साथ ही डिनर करती थी।'' रमा बोली। सासु माँ ने प्यार से समझाते हुए कहा। ”ठीक है माँ जी। मैं अभी आई पानी का जग लेकर।“ नेहा मुस्कुराते हुए बोली । नेहा सोच रही थी कि कुछ किताबों में पढ़ और सहेलियों से सुनकर वह सास-ससुर के बारे में किस प्रकार पूर्वाग्रह से ग्रसित हो चिंतित थी। उसने नजर उठाकर देखा, तो सास -ससुर में उसे अपने मम्मी-पापा की ही छवि नजर आई ।।

महेश शर्मा लखनऊ

शार्टफिल्म में अभिनय एवं मॉडलिंग करने के इच्छुक महिलाएं संम्पर्क करें
9451647845
अखंड गहमरी
प्रकाशक
साहित्य सरोज

सुनो भाई

”सुनो भाई,आज के लेख में व्यंग्य नहीं है।”
”चुप कर जा,ईश्वर देखा है”
”नहीं ”
”महसूस किया है !”
”हां”
”कैसे?”
”सबके कहने पर”
”,सही है, जैसे- गुनीजनो ने ईश्वर को खोज निकाला और तुमने भी महसूस किया। बस तुम्हें इसे भी महसूस करना है। यदि नहीं करोगे तो मूर्ख साबित हो जाओगे।”

”भाई,ईश्वर का इसका क्या लेना देना?”
देना लेना तो है जो दोगे वही लोगे (मतलब तारीफ करोगे तो मिलेगी)
अरे बावरे, जैसे ईश्वर दिखाने से दिखता है वैसे ही व्यंग्य भी दूसरों के बताने से महसूस होने लगता है। महान विभूतियों ने बकवास लेख में व्यंग्य खोज निकाला है, तुम भी उस व्यंग्य को महसूस करो।”
”हम्म”
”हम्म नहीं...चलो...एक बार फिर से पढ़ कर बताओ?
”अरे हां!....... है!”
”क्या?”
”व्यंग्य”
”लो हो गये ना..... तुम भी..... महान। तथास्तु।।”

मीना अरोड़ा, हल्द्वानी

कवर स्टोरी

मशीन पर भारी मानव टनल हादसा

उत्तराखंड में उत्तरकाशी जनपद के सिलक्यारा टनल की घटना न तो हादसों के क्रम में पहली थी और न ही अंतिम। एक तरफ इस घटना ने न केवल देश वासियों का ही ध्यान आकृष्ट किया बल्कि, इजराइल - फिलीस्तीन और रूस - यूक्रेन युद्ध से भी जादा विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। १७ दिनों तक पल पल मौत और जिंदगी से साक्षात्कार करते हुए देश के ४१ गैर सैनिक वीरों ने जिस जीवटता का परिचय दिया है, वह पूरे विश्व में आने वाले भावी हादसों में प्रभावितों को हौसला देने का भी काम करेगा। आपको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इस तरह का बचाव कार्य अभूतपूर्व है। कई किन्तु - परन्तु के बीच, जिस तरह से अत्याधुनिक देशी तथा बहुराष्ट्रीय तकनीक, तमाम संभावित बचाव की संभावनाओं पर काम करते हुए, राज्य व केन्द्र की तमाम ऐजेंसियों के संयुक्त प्रयासों ने एक बड़े हादसे को सुखद अंत देकर, उठने और उठाये जाने वाले प्रश्नों पर भी विराम लगा दिया। पूरे बचाव कार्य में जिस बात की विशेष चर्चा होनी चाहिए वह यह रही कि प्रधानमंत्री कार्यालय ने विभिन्न ऐजेंसियों व राज्य सरकारों के बीच तकनीक व उपकरणों के आदान प्रदान के लिए की जाने वाली प्रक्रिया पर त्वरित अनुमति व निर्णय लेने के लिए सक्षम अधिकारियों को हादसा स्थल पर ही तैनात कर दिया।

इन सक्षम अधिकारियों में मंगेश घिल्डियाल, नीरज खैरवार सहित वो पूर्व अधिकारी शामिल थे, जो उत्तराखंड की भौगोलिक परिस्थितियों व इस तरह के हादसों में त्वरित कार्रवाई की पूरी प्रक्रिया से वाकिफ थे। इन दोनों अधिकारियों सहित पांच लोग १५ दिनों तक दिन रात घटनास्थल पर ही थे वहीं कंटेनर में रहते हुए, वे हर संभव प्रयास किये गये जिनसे अंततः इस हादसे का सुखद अंत हुआ। राज्य सरकार की ओर से मुख्यमंत्री ने हर रोज तीन-चार घंटे मौजूद रह कर, कम्पनी और ऐजेंसियों के बीच के तालमेल को और सुदृढ़ किया। केन्द्र ने जनरल बी के सिंह, नितिन गडकरी और कई अन्य मंत्रियों को वहां अक्सर भेजकर, प्रभावितों के परिवारों को आश्वस्त किया कि बचाव कार्य में कोई कमी नहीं रखी जायेगी। इन सब कदमों से ही संभव हुआ कि घटनास्थल पर लिये गये हर फैसले को स्वीकृति की लम्बी प्रक्रिया में होने वाले समय के नुकसान को बचाने के लिए एक तरह से पूरा पीएमओ ही घटनास्थल पर मौजूद था, जिससे यह संभव हुआ कि वायु सेना का विशेष विमान हैदराबाद भेज कर आगर मशीन मंगाई गई स्लोवेनिया से विशेष विमान से दुनिया के सबसे बड़े बचाव विशेषज्ञ को बुलाया गया।

एक खास तरह का प्लाज्मा कटर मंगाने के लिए पहले टीम को हैदराबाद भेजा गया फिर विमान को अमेरिका भेजा गया वहां से खास तरह का प्लाज्मा कटर लाया गया। चार मशीन और रोबोट और ग्राउंड पेनिट्रेटिंग रडार स्विट्जरलैंड से विशेष विमान से मंगाए गये। घटनास्थल पर हेलीपैड और एक काम चलाऊ रनवे भी बना दिया गया। दुर्घटना स्थल पर अभिलंब ऑक्सीजन जनरेटर प्लांट लगा दिया गया। आप दिल पर हाथ रख कर सोचिए कि क्या कभी इतिहास में इस रेस्क्यू ऑपरेशन के पहले इतने त्वरित ढंग से और इस तरह के ऑपरेशन के बारे में सुना गया था। यह घटना निर्माण कार्यों के दौरान होने वाली न पहली घटना थी ना ही अंतिम। लेकिन इन दोनों के बीच यह विश्व भर की अभूतपूर्व घटना तो बन ही गई।

१२ नवम्बर को दीपावली के दिन जब उत्तरकाशी के सिलक्यारा में ४.५कि०मी०लम्बी निर्माणाधीन सुरंग में खुदाई के दौरान टनल का ६०मी० हिसा भरभरा कर गिर गया। हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि वह घटना कैसी रही होगी जब टनल का मुंह दोनों तरफ से बंद हो गया। जल्द ही संचार माध्यमों से यह बात ८ राज्यों के उन ४१मजदूरों के घरों तक पहुंच गई। घटना दीपावली को हुई थी, इसलिए उन मजदूरों के परिवारों को इसका मानसिक आघात भी जादा ही पहुँचा।हर घटना की शुरूआती पलों की ही तरह इस घटना के ट्रीटमेंट पर भी असमंजस ही बना रहा। लेकिन जल्दी ही कम्पनी के नीति नियंताओं ने फस्ट ऐड शुरू कर दिया । पहले दो दिनों की संभव कवायद के बाद, जितना मलबा हटाया जाता उससे दुगुना टनल के अंदर से टूटकर राह रोक लेता। १४ नवम्बर को छोटी ड्रिलिंग मशीन से मिट्टी हटाने का काम शुरू हुआ।

१५ व १६ तारीख को बड़ी ड्रिलिंग मशीनें मंगवाई गई। १७ नवम्बर से बड़ी ड्रिलिंग मशीनों से काम शुरू हुआ। लेकिन इन मशीनों से भी जब इच्छित परिणाम नहीं मिले तो १८ नवम्बर को इन्दौर से विशेष बड़ी मशीनें सिलक्यारा पहुंची। १९ नवम्बर को एन डी आर एफ और

आर डी ओ ने मोर्चा संभाला। २० नवम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय टनलिंग एक्सपर्ट रिचर्ड अरनाल्ड उत्तरकाशी पहुंचे। २८ नवम्बर को इस जंग को जीतने की आस तब विश्वास में बदल गई जब करीब दोपहर बाद डेढ़ बजे जब ५७मीटर पर निकास सुरंग का आखरी स्टील पाइप मलबे को भेदकर अंदर फंसे श्रमिकों तक पहुंचा। प्रकृति ने इस पूरे अभियान में कदम कदम पर मानव विश्वास और विवेक की परीक्षा ली। जब यह स्टील पाइप श्रमिकों तक पहुंचा था तो लगा कि अब काम पूरा हो गया लेकिन जैसे ही अंदर फंसे श्रमिकों को बाहर निकालने के लिए एन डी आर एफ और एस डी आर एफ के जवान पाइप से होकर अंदर घुसे तो पता चला कि जिस स्थान पर पाइप आर पार हुआ, वहाँ पानी जमा था। ऐसे में अंत में भी श्रमिकों के जीवन बचाने के लिए कोई रिस्क न लेते हुए, पाइप को और आगे बढ़ाने का निर्णय किया गया ताकि पाइप के अंदर पानी आने या ऊपर से ताजा मलबा आने से भी श्रमिकों की जिंदगी बची रह सके।

१७ दिनों तक पल पल बदल रही परिस्थितियों ने न केवल वहां पर उपस्थित श्रमिकों, कार्मिकों, अधिकारियों, नेताओं, प्रभावितों के परिजनों की ही बल्कि पूरे राज्य व देश के धैर्य की भी कड़ी परीक्षा ली थी। तकनीक के दम पर कठिनाइयों को बौना करने की कवायदत तक बौनी पड़ गई जब २४ नवम्बर की शांम ड्रिलिंग करते वक्त औगर मशीन का ४६. ९ मीटर हिस्सा फंस गया। अब इसे काटकर निकालना ही एकमात्र विकल्प था। यह भी उल्लेखनीय है कि अमरीका की यह मशीन पहली बार किसी अभियान पर असफल हुई थी। ऐसे में शेष बचे ९से १२ मीटर सुरंग को मैनुवल तरीके से तैयार करने का निर्णय लिया गया। अंततः मौके पर तैनात अधिकारियों ने निर्णय लेते हुए तय किया कि अब देशी जुगाड़ पद्धति को काम में लाया जाय। १२ श्रमिकों ने २दिन की मेहनत से मलबा, सरिया, कंक्रीट की दीवार को काटकर, ४१ मजदूरों को बचाने की वह अमिट कहानी गढ़ दी, जिसने ४१ लोगों के घरों में १७ दिनों बाद ही सही पर दीवाली मनाने का सुखद और यादगार मौका दिया।

इस काम के लिए २८ सदस्यीय रैट माइनर्स की टीम को मोर्चे पर उतारा गया। ज्ञातत्व है कि रैट माइनर्स वो श्रमिक होते हैं जो हाथों से खुदाई करते हैं। ८०० मि०मी० के व्यास के पाइप के अंदर घुसकर इस काम को करना बेहद जोखिम पूर्ण भी था। इस टीम ने गैस कटर, प्लाज्मा कटर, लेजर कटर और हैंड ड्रिलर की मदद से सिलक्यारा चक्रव्यूह के इस अन्तिम द्वार को २४ घंटे के भीतर बेध कर, ४१ श्रमिकों तक पहुंचकर इस पूरे अभियान का सुखद समापन किया। इस हादसे ने विज्ञान की क्षमता के साथ विज्ञान की सीमा को बहुत नजदीक से न केवल देखा ही बल्कि महसूस भी किया। यह भी शिद्दत से महसूस किया गया कि सुरक्षा के इंतजामात में बढ़ोतरी करनी ही होगी।इसके साथ ही यह भी महसूस किया गया कि विज्ञान की सीमा के बाहर भी अभी बहुत कुछ जानना - समझना बाकी है। विज्ञान का ज्ञान जहाँ समाप्त होता है आस्था का ज्ञान वहीं से पैदा होता है। विज्ञान का शायद अभी आस्था की सीमाओं तक पहुंचना मुमकिन नहीं हो पाया।

यहाँ यह बाद दीगर है कि अर्नाड डिक्स ने जो पहला काम किया, वह यह था कि उन्होंने सबसे पहले अब तक की गई पूरी कार्य प्रणाली को समझा। एन डी आर एफ व एस डी आर एफ की कार्यप्रणाली की सराहना करते हुए उन्होंने सबसे पहले टनल के मुहाने से हटाये गये पूजा स्थल को वापस रखवाया। विदेशी टनल एक्सपर्ट अर्नाड डिक्स जितनी बार भी टनल के अंदर बाहर गये उतनी ही बार उन्होंने घुटनों के बल बैठकर, वहां पर स्थापित बाबा बौखनाथ के मंदिर में प्रार्थना की। हमारे कुछ पाठक इसे अवैज्ञानिकता या अंधविश्वास को बढ़ावा भले ही कहें, लेकिन अर्नाड डिक्स की हिमालय व हमारी धार्मिक आस्थाओं के बारे में कही गई बातें, कहीं न कहीं हमें सचेत करती हैं कि भले ही हम विज्ञान के क्षेत्र में दिनों दिन प्रगति कर रहे हों, लेकिन अभी तक हम आस्था के पीछे की ताकत के विज्ञान का रहस्य नहीं खोल पाये हैं। अभी हमें विज्ञान पर भरोसा करते हुए एक लम्बी यात्रा पूरी करनी है।

हेमंत चौकियाल
पोस्ट-अगस्त्यमुनि
जनपद - रुद्रप्रयाग

बूढ़ी आया

निष्ठा स्कूल से आई और अपना बस्ता चटाई पर रखते हुए बोली, "अम्मा देखो न बाबा के हाथों में कितनी कला भरी है । मैं तो बचपन से देखती आ रही हूँ कि बाबा कितनी सुंदर साड़ी बुनते आ रहे हैं । आज भी देखो कितनी सुंदर साड़ी बुनी है । अभी तो हाथ भर का ही काम हुआ है। लेकिन उसका रंग, बार्डर और छोटी-छोटी बूटियाँ कैसे अपनी ओर खींच रही हैं ।'' हाँ बिटिया बनारसी साड़ियाँ बनाना तो तुम्हारे बाबा का पुस्तैनी काम है । तुम्हारे बाबा, उनके बाबा, उनके भी बाबा न जाने कितनी पीढ़ियों से यही काम हो रहा है । पूरे मुहल्ले में ही नहीं बल्कि पास-पड़ोस के गाँव और बाजार-हाट में भी हमें बनारसी साड़ी वालों के नाम से ही जानते हैं ।

"हाँ अम्मा ! अब तो मुझे भी यही नाम मिला हुआ है।'' निष्ठा ने माँ से खाने की थाली लेते हुए कहा । अम्मा निष्ठा के पास बैठते हुए कहती है, "मुझे आज भी याद है जब तुम्हारे नाना जी मेरी शादी की बात तय करने आए थे तो वे गाँव में तुम्हारे दादा जी के नाम से घर का पता पूछ रहे थे । काफी लोगों से पूछा मगर किसी को उनका नाम ही न मालूम था । कुछ देर भटकने के बाद गाँव के एक बुजुर्ग से पूछा, "बाबा ये किसन का घर किधर है? मालूम हो बताइए । काफी देर से भटक रहा हूँ । लेकिन किसन जी के घर पता नहीं लग रहा है।'' बाबा बोले, "क्या काम करता हैं किसन ?'' तब तुम्हारे नाना बोले, "बनारसी साड़ी बनाते हैं।'' फिर किसन-किसन क्या लगा रखा है। बनारसी साड़ी वाले बोल देते तो कोई भी घर छोड़ आता । जाओ सामने वाली गली का आखिरी मकान है ।''

बाबा ने हाथ से इशारा करते हुए कहा ।वापस आने पर जब यह बात तुम्हारे नाना ने हमें बताई तो हम खूब हँसे और तुम्हारे नाना चारपाई पर बैठ हम सब को ताक रहे थे ।"अम्मा तुम हँस रही थी तो नाना ने डाँटा नहीं ?" नहीं बिटिया ! "निष्ठा के सिर पर हाथ फेरते हुए अम्मा ने कहा । " क्यों अम्मा ?'' "मैं भी तो अपने बाबा की लाड़ली बिटिया हूँ । बाबा सोच रहे थे कि आज छोटी-सी बात पर उनकी बिटिया इतना खिलखिला कर हँस रही है लेकिन कल ब्याहने के बाद उस परिवार की मान-मर्यादा को बनाए रखने के लिए परत-दर-परत न जाने कितने पर्दों का ताना-बाना पिरो लेगी ।" माँ ने कुछ भाव-विभोर होते हुए कहा ।"अम्मा तुमने तो खूब बनारसी सदियाँ पहनी होगी ? "आतुरता से निष्ठा ने पूछा ।"हाँ ! तुम्हारे बाबा के घर वालों ने खूब बनारसी साड़ियाँ चढ़ाई थी हमारी शादी में । सब एक से बढ़कर एक थी । शुरू-शुरू में खूब बनारसी साड़ीयाँ पहनी ।" "अब क्यों नहीं पहनती हो ?'' निष्ठा ने माँ से पूछा । ऐसी भारी साड़ियों में घर-गृहस्थी का काम नहीं होता है । अब तो तीज-त्योहार और कहीं आने-जाने में ही पहनी जाती है ।

अम्मा एक बात पूछूँ ?हाँ ! पूछो । अम्मा क्या बनारसी बहुत महँगी होती है ?क्यों ?तुम ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रही हो?"अम्मा ! कल स्कूल की बूढ़ी आया (चपरासी) मालती आया से बात कर रही थी कि उसने अपने पूरे जीवन में बनारसी साड़ी कभी नहीं पहनी और अब उसमें अपनी बेटी की शादी में बनारसी साड़ी दे पाने का सामर्थ्य नहीं है । ऐसा बोलते हुए वह रो पड़ी थी । उन्हें रोता देख मुझे बहुत बुरा लगा । अम्मा क्या हम उन्हें अपनी तरफ से एक साड़ी भेंट नहीं कर सकते ?" मासूम निष्ठा ने द्रवित आँखों से माँ से कहा ।

निष्ठा के पिता ने माँ-बेटी की पूरी बात सुन ली थी । वह मुस्कुराते हुए बोले, "कब है बूढ़ी आया की बेटी की शादी ?" "बाबा अगले महीने ।" निष्ठा ने कहा । बाबा अंदर से एक सुंदर-सी बनारसी साड़ी लाकर निष्ठा को देते हुए कहते है कि कल स्कूल जाओगी तो बूढ़ी आया को दे देना । अगले दिन स्कूल पहुँचने पर निष्ठा और माँ ने बूढ़ी आया को बनारसी साड़ी बेटी की शादी के लिए भेंट स्वरूप दी तो बूढ़ी आया कृतज्ञतावश द्रवित आँखों से निष्ठा को गले लगा लेती है ।

डॉ पूजा हेमकुमार अलापुरिया 'हेमाक्ष'
77387883710

सोशल इंजीनियरिंग का एक लेखक

अरूण अर्णव खरे

पेशे से इंजीनियर अरुण अर्णव खरे का लेखन बहु आयामी है । उन्होंने साहित्य की सभी मुख्य विधाओं में कलम चलाई है। आज वह कहानी व व्यंग्य लेखन में देश भर में चर्चित है। जितना मैंने अरुण अर्णव खरे को पढ़ा है उस आधार पर मैं निसंकोच कह सकता हूँ कि वे अपने लेखन के प्रति गंभीर और ईमानदार हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक दायित्वबोध झलकता है, देशकाल और मानवीय संवेदनाओं के दर्शन होते हैं। हम कह सकते हैं कि उनका लेखन सोशल इंजीनियरिंग का लेखन है । एक यांत्रिक अभियंता जिस तरह की मशीनों की बनावट और संचालन का ज्ञान रखता है, वह उनकी विभिन्न सामाजिक ढांचों, संस्तरों की समझ और सिस्टम की बखूबी पड़ताल में झलकता है। गीत, कविता, व्यंग्य, उपन्यास, कहानी और निबंध आदि साहित्य की विधाओं में प्रचुर लेखन करने के साथ ही वह एक अच्छे चित्रकार हैं तथा खेल लेखन में भी देश भर में अग्रणी स्थान रखते हैं। खेलों पर भी उनकी आठ पुस्तकें प्रकाशित हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर वार्ताओं का प्रसारण हुआ है। उनके व्यक्तित्व पर रायपुर दूरदर्शन द्वारा एक कार्यक्रम भी प्रसारित किया गया था।

जहाँ तक साहित्यिक लेखन का प्रश्न है अरुण अर्णव खरे ने अब तक एक उपन्यास - "कोचिंग कोटा", तीन कहानी संग्रह - "भास्कर राव इंजीनियर", "चार्ली चैप्लिन ने कहा था" व "पीले हाफ पैंट वाली लड़की", चार व्यंग्य संग्रह - "हैश,टैग और मैं", "उफ्फ! ये एप के झमेले", "एजी, ओजी, लोजी, इमोजी" व "मेरे प्रतिनिधि हास्य-व्यंग्य" तथा दो काव्य कृतियाँ "मेरा चाँद और गुनगुनी धूप" व "रात अभी स्याह नहीं" दिए हैं । अनेक चर्चित और महत्वपूर्ण कहानी व व्यंग्य संग्रहों में उनकी रचनाओं को शामिल किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं - अम्लघात (सं सुधा ओम ढींगरा), किस्सागंज (सं मुकेश दुबे), कथारंग (सं हंसादीप), कथा भोपाल (सं संतोष चौबे), नहीं अब और नहीं (सं संतोष श्रीवास्तव), व्यंग्य प्रदेश, मध्य प्रदेश (सं पिलकेन्द्र अरोड़ा), व्यंग्य के नव स्वर (सं), व्यंग्यकारों का बचपननामा (सं सुशील सिद्धार्थ), मिली भगत (सं विवेक रंजन श्रीवास्तव), श्रेष्ठ व्यंग्यकार (सं डॉ राजेश कुमार व डॉ लालित्य ललित), खरी-खरी (सं विनोद कुमार विक्की) इक्कीसवीं सदी के २५१ अंतर्राष्ट्रीय श्रेष्ठ व्यंग्यकार (सं डॉ राजेश कुमार व डॉ लालित्य ललित) तथा थाने-थाने व्यंग्य (स हरीश कुमार सिंह / नीरज शर्मा) आदि । कुछ पत्रिकाओं के व्यंग्य विशेषांकों सहित डायमंड बुक्स के "मध्य प्रदेशः युवामन की कहानियाँ" का संपादन किया है। इस वर्ष की देश/विदेश की १०० बड़े रचनाकारों की राही रैंकिंग, भारतीय भाषा परिषद तथा जयपुर साहित्य संगति द्वारा जारी सूचियों में भी उन्हें शामिल किया गया है।

"कोचिंग कोटा" अरुण अर्णव खरे का एक चर्चित और बहुपठित उपन्यास है जिसके अब तक दो संस्करण व अंग्रेजी अनुवाद आ चुका है । साहित्य समर्था का प्रतिष्ठित "पृथ्वीनाथ भान सम्मान" एवं व्यंग्य संस्थान, रायपुर का "साहित्य सम्मान" भी उपन्यास को प्राप्त हो चुके हैं। पंद्रह से अधिक समीक्षकों ने इसकी समीक्षाएँ लिखी हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, उपन्यास में कोचिंग हेतु कोटा जाने वाले बच्चों के जीवन-संघर्ष, प्रतिदिन सामने आने वाली कठिनाइयों, गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा, विडंबनाओं, काटने को दौड़ते एकाकीपन, सपने टूटने की पीड़ा, उलझनों, शोषण, अवसाद, प्रेम, वात्सल्य, जीवटता और सच्ची दोस्ती का चित्रण है। लेखक ने एक सामयिक विषय को बहुत ही खूबसूरती से उपन्यास के माध्यम से समाज के सामने रखा है । कोचिंग लेने आए सभी बच्चे एक ऐसी रेस में शामिल होते हैं जिसमें सभी जीतना चाहते हैं । कुछ बनने के इस सफर में बच्चों को इतना कुछ खोना पड़ता है जिसकी भरपाई कभी नहीं हो पाती । उपन्यास में समीर और चित्रा प्रमुख किरदार हैं जिनके जरिए लेखक ने उक्त तथ्यों की बहुत बारीकी से पड़ताल की है । सोलह साल की उम्र का एक किशोर समीर, जीवन की निर्णायक राह प्रशस्त करने के मिशन पर छोड़ दिया जाता है । उसकी यह यात्रा हर कदम पर नई चुनौतियाँ, नए चैलेंज पेश करती है जिसे अनुकूल बनाने की जिम्मेदारी उसके नाजुक कंधों पर होती है । चित्रा के रूप में उसे एक सच्ची और संबल प्रदान करने वाली दोस्त मिलती है और फिर उसका साथ पाकर समीर अपनी राह आसान बनाते हुए आगे बढ़ने लगता है । उपन्यास शुरु से अंत तक पाठक को बांधे रखता है । जीवन के हर रंग के समुचित संयोजन से इस कृति में लेखक ने चार चाँद लगा दिया है। किशोर मन के भाव को

अभिव्यक्त करने के लिए लेखक ने जिस खूबसूरती से उन्हीं के शब्दावली का प्रयोग किया है उसकी सम्प्रेषणीयता देखते ही बनती है। कुछ उदाहरण देखिए -

एक प्रसंग में चित्रा को पड़ोस में रहने वाला एक लड़का अक्सर छेड़ता है । रक्षाबंधन के दिन चित्रा ने उससे किस तरह बदला लिया, जब वह यह कहानी समीर को बताती है तो समीर कहता है - "तुम तो सचमुच कलाकार हो" । उत्तर में चित्रा बोलती है - "हाँ .. हूँ, दीपिका पादुकोन से भी बड़ी वाली" । इसी तरह एक और अवसर पर समीर के रुष्ट होने पर चित्रा कहती है - "अपुन महादेव मंदिर चलते हैं और वहीं बाबाओं के साथ धूनी रमाते हैं - हो गई कोचिंग फिनिश अपनी । अच्छा बता कौन सा बाबा बनेगा, औघड़ या नागा । तुझे दूसरों को नंगा करने का शौक है न .. अच्छा जमेगा नागा बाबा बनकर .. नंग-धड़ंग .. और मैं औघड़ बाबा बनूँगी, मस्त मलंग .. तू चिलम फूँकना और मैं मुर्दों की राख मलूँगी शरीर पर ।" और जब समीर क्लास में फर्स्ट आता है तो चित्रा कहती है - "बच्चे ने पहली बार अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन किया है, मैं बहुत खुश हूँ, वर माँगो वत्स" । उत्तर में समीर कहता है - "वर दो माते कि अब कभी आपसे आगे निकलने की हिम्मत न करूँ" और फिर चित्रा का यह कहना -"धत्त ये वर अस्वीकृत किया जाता है", दोनों के बीच की केमिस्ट्री और मित्रता की पवित्रता को रेखांकित करता है । मशहूर लेखिका सूर्यबाला ने उपन्यास की भूमिका में लिखा है कि "यह पाठकों के बीच अपनी स्पेस तलाश लेने की पूरी आश्वस्ति देने वाला उपन्यास है ।" दूसरे संस्करण की भूमिका में चर्चित कहानीकार सुषमा मुनींद्र लिखती हैं कि "उपन्यास को पुस्तकालयों में रखना चाहिए, कोर्स में लगाना चाहिए, अभिभावकों और विद्यार्थियों को पढ़ना चाहिए ।" वे इसे एक "आई ओपनर" उपन्यास मानती हैं ।

एक कहानीकार के रूप में अरुण अर्णव खरे का आकलन सूर्यबाला जी ने इन शब्दों में किया है - "उनकी कहानियाँ सिर्फ कलम से लिखी हुई नहीं हैं बल्कि उन्होंने बहुत गहराई से उन्हें महसूस किया है। तभी अपने कथ्य और शिल्प में बिना किसी कृत्रिम साज सज्जा के वे पढ़ने वाले के मन में पैठ लेने की सामर्थ्य रखती हैं ।" अरुण अर्णव खरे के अब तक तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । उनकी कहानियों में एक ऐसा कथारस है जो पाठकों की चेतना में रचबस जाता है । कहानियों की प्रभाविकता ऐसी है कि पाठक के मन में चित्र सा खिंच जाता है और वो अपनी कल्पना से किरदारों व परिवेश के साथ कनेक्ट करने लगता है। उनके तीनों कहानी संग्रहों की कहानियों से गुजरते हुए यह भावना और बलवती होती जाती है । उन्हें साहित्यिक इंजीनियर कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि वे जब लिखते हैं तो शब्दों से इस तरह परिवेश रचते हैं कि पाठक के सामने घटनाओं के चित्र उभर आते हैं । 'रसात्मक वाक्यं काव्यं' यह उक्ति उनके गद्य साहित्य पर पूरी तरह चरितार्थ होती है । उन्होंने "भास्कर राव इंजीनियर" की भूमिका में कहा है - "मेरा विश्वास है कि कहानियों को पढ़ते हुए आप निश्चित ही यह महसूस करेंगे कि इस कहानी के पात्र तो मेरे परिचित है और इनसे कभी न कभी मिल चुके हैं ।" उनका दूसरा संग्रह "चार्ली चैप्लिन ने कहा था" कोरोना काल में जीवन में आए बदलाव, विसंगतियों, प्रेम, स्वार्थपरता और सद्भाव की कहानियों का संग्रह है । चार्ली चैप्लिन ने अपने जीवन में दोनों विश्वयुद्ध और स्पेनिश फ्लू के त्रासद काल को देखा था । जिस समय दुनिया किंकर्तव्यविमूढ़ थी तब वे लोगों को हँसा रहे थे, स्वयं को अभिव्यक्त कर रहे थे, जिंदगी जीने का हुनर सिखाने के वास्ते कर्त्तव्यमग्न थे । लेखक श्री अरुण अरुण खरे ने भी विश्वयुद्ध और स्पेनिश फ्लू जैसी ही मारक कोरोना काल की विभीषिका को करुणा और कर्तव्यबोध के साथ व्यक्त किया है । इन कहानियों में जिंदगी की साँसों और आहों को महसूस किया जा सकता है । लेखक ने अपनी बात में कहा भी है - "साहित्य समय सापेक्ष होता है अतः समय की अनदेखी कर साहित्य लेखन नहीं किया जा सकता ।" लेखक ने पूरी ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ अपनी इस बात को इस कहानी संग्रह में पूरी तरह निभाया है । अपने तीसरे कहानी संग्रह "पीले हाफ पैंट वाली लड़की" की भूमिका में लेखक ने लिखा है कि "संग्रह में जिंदगी के उजले पक्ष की गवाह बनी कुछ कहानियों के साथ ही जिंदगी के स्याह पक्ष की कहानियाँ भी हैं लेकिन उनमें भी प्रकाश की एक किरण ही सही, अपनी जगह तलाशती दिखाई देगी ।" आज के त्रासद समय में जिस मानवीय दृष्टिकोण और पॉजिटिविटी की जरूरत है वह इस संग्रह में पूरी ऊष्मा और गंभीरता के साथ मौजूद है । प्रसिद्ध कहानीकार डॉ शरद सिंह का मानना है कि इस संग्रह में कुछ कहानियाँ स्त्रीविमर्श रचती हैं तो कुछ प्रथा विमर्श । इसीलिए इन बारहों कहानियों के कथानकों में

पुनरावृत्ति नहीं है। प्रत्येक कहानियाँ अपना अलग विमर्श और संवाद लिए हुए हैं। वरिष्ठ कहानीकार गोविंद सेन का मत भी शरद सिंह से मिलता जुलता है । उनका कहना है कि "संग्रह की आधे से अधिक कहानियों में स्त्री पात्र प्रमुखता से उपस्थित है । कहानियों में आईं युवा और प्रौढ़ स्त्रियाँ तथा पुरुष विभिन्न पृष्ठभूमियों और समुदायों के हैं । विषम परिस्थितियों में जीती पुरुष मानसिकता से जूझती स्त्रियों की जिजीविषा को अर्णव जी ने बखूबी चित्रित किया है । स्त्री-पुरुष प्रेम के उदात्त स्वरूप को कुछ कहानियों में उकेरा गया है ।" उक्त दोनों कथन लेखक के इस वक्तव्य की पुष्टि करते हैं जो संग्रह की भूमिका में दर्ज है - "इन कहानियों में स्त्री की मौजूदगी, समाज में रची-बसी पारम्परिक स्त्री वाली नहीं है। वह जिंदगी को नये सिरे से परिभाषित करती है और अपनी उपस्थिति से चौंकाती है। अधिकांश कहानियों के केन्द्र में युवा और उनके सरोकार हैं।" मनोरमा वार्षिकी की यह राय भी महत्वपूर्ण है कि "पात्रों एवं शीर्षक का चयन, प्रभावशाली भाषा शैली और विशेष कथातत्व की मौजूदगी कहानियों को न केवल जीवंत बनाती है वरन ऐसा परिवेश भी निर्मित करती हैं जो कहानी को कथा मात्र न बनाकर पाठक को सामने घटित होती हुई घटना बना देती है ।"

अरुण अर्णव खरे की जिन कहानियों को मैंने पढ़ा है, उनमें से बहुतों के विषय इतने अलहदा हैं जो दूसरे कहानीकारों की नजरों से ओझल रहे हैं । उनकी कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो समाज के अंदरूनी सच को पर्त दर पर्त उजागर करती हैं । खेलों से संबंधित विषयों पर भी उन्होंने अनेक सार्थक और उद्देश्यपरक कहानियाँ लिखी हैं । उनकी बहुत सी कहानियाँ युवा वर्ग के सरोकारों और संघर्ष से जुड़ी हुई हैं । एक युवा पाठक होने के नाते मैं इन कहानियों से बहुत जुड़ाव महसूस कर पाया और मुझे लगा कि वास्तव में ये कहानियाँ मुझसे, मेरे दोस्तों से और मेरे आस-पास के माहौल से जुड़ी हुई कहानियाँ हैं । उनके तीनों संग्रहों में शामिल लगभग चालीस कहानियों में से मुझे एक दर्जन से अधिक कहानियाँ उनकी विषयवस्तु, कहन और सरोकारों के कारण बहुत पसंद हैं । ये कहानियाँ हैं - "दूसरा राजमहर्षि", "आफरीन", "देवता", "चिलिंग सेंटर", "स्टेंट", "मकान", "जॉटर रिफिल पेन", "चार्ली चैपलिन ने कहा था", "विश्वासघात", "उदास क्यों रहती है जोजो", "हारेगी नहीं आनंदिता", "पीले हाफ पैंट वाली लड़की", "अपने अपने मकड़जाल", गुडमार्निंग आरएसी", "चरखारीवाली काकी" एवं "पुनर्जन्म" ।

अरुण अर्णव खरे के व्यंग्यकार रूप को सुभाष चंद्र कुछ इस तरह परिभाषित करते हैं - "उनके व्यंग्य आपको बाँधते हैं, शिल्प और कथ्य दोनों स्तरों पर आपको प्रभावित करने की कोशिश करते हैं तो इसका बड़ा कारण यह है कि वह व्यंग्य की परम्परा से परिचित होने के बाद इस क्षेत्र में उतरे हैं ।" व्यंग्ययात्रा के यशस्वी संपादक व मशहूर व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय कहते हैं कि "अपनी व्यंग्य कथाओं के माध्यम से हमारे समय की विसंगतियों से साक्षात्कार कराने के लिए अरुण अर्णव खरे के पास व्यंग्य का मुहावरा और भाषा है । अपने कहन को प्रखर करने के लिए वे नए-नए उपमान खोजते हैं और यहाँ उनके कथाकार व्यक्तित्व में व्यंग्यकार परकाया प्रवेश करता है ।" वरिष्ठ व्यंग्यकार अरविंद तिवारी को अरुण अर्णव खरे के व्यंग्य "धूप में शीतल छाँव की तरह लगते हैं ।" एक और वरिष्ठ व्यंग्यकार रमेश सैनी का मानना है कि "अरुण अर्णव खरे का विषय चयन सामयिक व्यंग्यकारों से अलहदा है। आज व्यंग्य प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है। उनके विषयों में बासेपन की गंध महसूस होती है, पर इनके विषयों में नयेपन की ताजी हवा का अनुभव किया जा सकता है ।"

अरुण अर्णव खरे के चारों व्यंग्य संग्रहों - "हैश, टैग और मैं", "उफ्फ! ये एप के झमेले", "एजी, ओजी, लोजी, इमोजी" तथा "मेरे प्रतिनिधि हास्य-व्यंग्य" को मैंने तल्लीनता से पढ़ा है । मैं सैनी सर की बात से सहमत हूँ कि अरुण अर्णव खरे के पास नवीन विषयों की कमी नहीं है। उन्होंने राजनीति, अर्थ, धर्म, समाज, शिक्षा, मनोरंजन, साहित्य, सोशल-मीडिया जैसे अनेक विषयों की विसंगतियों पर कलम चलाई है । विषयों की यह विविधता उन्हें समकालीन व्यंग्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान देती है । उन्होंने व्यंग्य में निबन्ध और कथा का उपयोग तो किया ही है वहीं अपेक्षाकृत कठिन फॉर्मेट, फैंटेसी व पत्र-शैली आदि का भी प्रयोग किया है । उनके प्रतिनिधि व्यंग्यों से रूबरू होने के बाद उन पर जलील मानिकपुरी जी का एक शेर मुफीद लगता है - "वो अपने अक्स को आवाज़ दे के कहते हैं, .तेरा जवाब तो मैं हूँ मेरा जवाब नहीं।" मेरी नजर में "ब्लू व्हेल गेम और किसान", "आँसू बचाइए साहब", "नोटबन्दी और हलके रैकवार के तीन पत्र", "शनि और चोली-दामन का साथ", "महापुरुष का प्रादुर्भाव", "पी राधा और मैं", "पाओ बेशरम हँसी

अनलिमिटेड", "विशेषण का संज्जा हो जाना", "मूल्यों की लड़ाई", "ब्रह्मलोक में आउट सोर्सिंग", "बसन्त, मोहतरमा और मैं", "एक बुजुर्ग दम्पत्ति का वैलेंटाइन", "उफ्फ! ये एप के झमेले", "पॉवर, पंख और पांव", "टैग बिना चैन कहाँ रे", "कैमरा, कोण और दृष्टिकोण", "रावण के पुतले के प्रश्न" तथा "आप कैसे बने करोड़पति" अरुण अर्णव खरे के यादगार व्यंग्य हैं । इनके अतिरिक्त जिन व्यंग्यों में उनका कवि रूप मुखर हुआ है उनको पढ़कर होंठों पर सहज मुस्कान उभर आती है । ऐसे व्यंग्यों में प्रमुख हैं - "कोरोना गोष्ठी वाया व्हाट्सएप" तथा "एक कवि की प्याज डायरी" । प्याज डायरी का एक अंश देखिए - "तुम काँदे से जब हुई, 'अनियन' मेरी जान। एक झलक को झींकता, सारा हिंदुस्तान।।"

अरुण अर्णव खरे के दोनों काव्य संग्रह - "मेरा चाँद और गुनगुनी धूप" तथा "रात अभी स्याह नहीं" उनकी प्रारंभिक कविताओं के संकलन हैं । जहाँ तक मेरी जानकारी है आजकल वह कविताएँ नहीं लिख रहे हैं या लिख भी रहे हैं तो बहुत कम । इसकी जो वजह मुझे लगती है वह उनका गद्य साहित्य में रम जाना है । कारण जो भी हो, यदि वह कविताएँ लिखना जारी रखते तो मेरा मानना है कि पाठकों से उन्हें उतना ही स्नेह प्राप्त होता जितना उनकी कहानियों और व्यंग्य को मिलता है । अपनी इस बात के समर्थन में मैं उनकी रचनाओं के कुछ अंश आपके मूल्यांकन के लिए उद्धृत कर रहा हूँ -

दुख-दर्द की विकट-बारिश ने जब भी हमें भिगोया,
तब-तब खड़े मिले थे सर पर छतरी ले बाबूजी ।
प्रीत के गीत अभी कोई कैसे गाए,
भोर उदास थी, शाम भी सुहानी नहीं ।
बस्ती-बस्ती आग लगा दी सियासतदारों ने,
अब तो बचा-खुचा सद्भाव बचाने निकला हूँ ।
इस शहर के चलन से अब तलक नावाकिफ हूँ मैं,
घूमते हैं लोग आस्तीनों में विषधर लिए हुए ।
रसूखदारों के बेटे थे, फायदे में रहे ।
बेचारे कार्यकर्ता तो बस हाशिए में रहे ।
हम एक दूसरे के पूरक और सहारे होंगे ।
जब मेरे नयनों से बहे अश्रु तुम्हारे होंगे ।

नवीन कुमार जैन
अध्ययनरत, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
, बड़ामलहरा, जिला- छतरपुर,म.प्र.
मो.नं. -8959534663

गंगा को बचायें

बात स्वच्छता की
समझ में आ जाए
तो गंदगी स्वघर की
गंगा में न बहाएँ ।
जहाँ स्वच्छता ,वहाँ स्वर्ग है
इसे कभी मत
हम सब भूलें ।
गंगा है यदि मां
तो उसका प्रतिदिन ही
हम मान बढ़ाएँ ।
माता नहलाती है हमको
वह तो सहलाती है हमको
और गुदगुदाती है हमको
निर्मल जल से
आप्यायित कर
मन को भी बहलाती हरदम
बड़े स्नेह से मुक्त किया
करती है जीवन- बंधन को
उस मां के प्रति हम सबका भी
हमारा भी फर्ज है
हमारे ऊपर बहुत-सा कर्ज है ।
चलो, उस कर्ज को
अब चुकाएँ ।
स्वच्छ भारत,स्वस्थ भारत
हरदम मन से दुहराएँ ।
आओ हम सब मिलकर
गंगा को गंदा होने से बचाएँ ।

डा. प्रतिभा कुमारी'पराशर'
हाजीपुर बिहार

पाओ बेशर्म हंसी अनलिमिटेड

मेरे एक मित्र हैं टेकचंद जो अपने इनोवेटिव आइडिया के लिये पहिचाने जाते हैं । उनका दिमाग बिना रनवे के भी ऊबड़-खाबड़ रस्ते से भी टेक-ऑफ कर लेता है और ऐसे-ऐसे जज्बाती, उत्पाती, खुरापाती तथा करामाती आइडिया लेकर लैण्ड करता है कि सब दाँतों तले उँगलियाँ दबाने लगते हैं । उनकी इसी खूबी के कारण ही मेरी मित्र-मण्डली बिना उनके सलाह के कोई काम नहीं करती । मुरारी जी के बेटे ने इण्डस्ट्रीयल इंजीनियरिंग का डिप्लोमा पास कर लिया था और कोई स्टार्ट अप शुरू करना चाहता था । वह बेटे को लेकर सलाह लेने टेकचंद के पास गए और उन्हें सारी बात बता कर पूछा - "आपके विचार से कौन सी फैक्ट्री वर्तमान मार्केट के लिहाज से ज्यादा मुनाफेवाली होगी" टेकचंद ने इस बार बिना टेक अहफ के ही सलाह दे डाली - "टूथपेस्ट की फैक्ट्री लगवा दो इसे" "टूथपेस्ट की फैक्ट्री .. पर इस फील्ड में तो पहले से ही बड़े-बड़े दिग्गज मैदान में है .. बहुत से बाबा और आयुर्वेदाचार्य भी इसमें हाथ आजमा रहे हैं .. इनके बीच कैसे नया टूथपेस्ट अपना स्थान बना पायेगा" - मुरारी जी ने अपनी आशंका व्यक्त की ।

"ये तुम मुझ पर छोड़ो .. हम इसमें एक ऐसी चीज मिलाकर मार्केटिंग करेंगे कि लोग हाथों हाथ लेंगे इसे .. इसका एड भी हम बनवा देंगे" - टेकचंद बोले ।"पर हम ऐसी कौन सी चीज मिलाएँगे इसमें .. पहले ही लोग लोंग के तेल से लेकर फ्लोराइड, पिपरमेण्ट, नीम, बबूल, एलोवीरा, नमक और चारकोल जैसा सब कुछ तो मिला चुके हैं .. हमारे लिए बचा ही क्या है मिलाने के लिए" - मुरारी जी अब भी टेकचंद की बातों से आश्वस्त नहीं लग रहे थे । पर चूँकि टेकचंद कह रहे थे सो उन्हें मानना पड़ा । उनके बेटे ने टूथपेस्ट बनाने की फैक्ट्री डाल ली । प्रि-लह्न्चिंग एड भी टेकचंद के निर्देशन में बनाया गया ।स्क्रीन पर दो बालाएँ जो हॉफ से भी ज्यादा हॉफ पैंट में थीं और अपनी नारी-जनित लज्जा को भी छुपाने के प्रति घोर लापरवाह नजर आ रहीं थी, हाथों में टूथपेस्ट लेकर ठुमकती हुई इस घोषणा के साथ अवतरित हुई - "हम लेकर आ रहे हैं दुनिया का सबसे अद्भुत एलो-आयूर टूथपेस्ट .. ब्रेस .. इसमें न नमक है न कोयला .. न ही नीम है और न ही बबूल, इसमें अमचुर, आँवला और शहद भी नहीं .. इसमें है करामाती इपोमोएया जो आपको दे झकास दाँत और दिलकश दन्त निपोर मुस्कान । बस एक बार इस्तेमाल कीजिये और बन जाइए ब्रेस - ब्रेस - ब्रेस" एड देख कर मुरारी जी टेकचंद के पास दौड़े-दौड़े आये, बोले - "ये कैसा नाम और एड है, सब कुछ गड़बड़ है इसमें .. ब्रेस .. ब्रेस का मतलब तो निर्लज्जता होता है और आप लोगों को निर्लज्ज होने का संदेश दे रहे हैं .. इसमें पता नहीं ये क्या मिलवा दिया है आपने" "इस बार आधा सही समझे हैं मुरारी आप .. ब्रेस का मतलब यही है और इसमें हमने बेशरम की झाड़ियों, जिसका बोटनीकल नाम इपोमोएया है, का रस मिलाया है - यह नाम केवल भरमाने के लिए है .. जैसे बाजार में ढेर सारे दूसरे भरमाने वाले प्रोडक्ट हैं .. जवान रहने के लिए, गोरा होने के लिए, बाल उगाने के लिए, लम्बा होने के लिए .. तोंद घटाने के लिए और न जाने क्या-क्या । नाम पर कौन जाता है .. एड धाँसू हो प्रॉडक्ट अपने आप चल जाता है। .. अपना एड भी कितना धाँसू बना है .. लोग-बाग इसी तरह के एड के दम पर गंजों तक को कंघियाँ बेंच देते हैं, और नपुंसकों को कंडोम .. हमें तो केवल दंत-मंजन ही बेंचना है .. इस बेशरम जमाने के लिये एकदम मुफीद प्रोडक्ट है यह । आप देखना लोग हाथों हाथ लेंगे उसे" - टेकचंद उत्साह से भरे हुए थे ।

मुरारी जी एक बार फिर टेकचंद से असहमति दर्ज कराते हुए वापिस लौट आए लेकिन टूथपेस्ट बाजार में आते ही हंगामा बरप गया । समाज के हर तबके ने टूथपेस्ट को हाथों हाथ लिया । सीडी में कैद नेताओं और जेल जाते बाबाओं के लिये ये टूथपेस्ट वरदान सिद्ध हुआ .. इस टूथपेस्ट की बदौलत ही दोनों प्रेस और समर्थकों के सामने खीं-खीं कर हँस पा रहे हैं । किसान पिटने और गोलियाँ खाकर भी हँसने की हिम्मत दिखा रहे हैं मानो कह रहे हों हम तो अपनी दुर्गति करवा कर भी देश का पेट पालने की हिम्मत रखते हैं और आप अपनी नाकामी के लिये हम पर गोलियाँ बरसा कर बिना ब्रेस टूथपेस्ट के ही हँस रहे हो । जो मजदूर पहले काम छिन जाने से मुँह लटकाए घर में पड़े रहते थे अब हँसते हुए कह रहे हैं - हमें तो वैसे भी फाँकेकसी की आदत है अब काम नहीं तो क्या .. आपकी सपने बेंचने की दुकान तो अच्छी चल रही है । बेरोजगार नौजवान भी ब्रेस टूथपेस्ट करके नौकरी

ढूँढने घर से निकलते हैं और शाम को लौट कर "आज भी नौकरी नहीं मिली" का निराशावादी वक्तव्य भी हँसते हुए घर वालों को दे रहे हैं। अस्पताल में बच्चे मरते हैं और मंत्री जी हँसते हुए बताते हैं पिछले साल भी तो मरे थे। पुलिस वाले निर्दोष लोगों को गोलियाँ मार रहे हैं। भक्त गोडसे को पूज्य बता रहे हैं .. जनप्रतिनिधि अफसरों की दनादन धुनाई कर रहे हैं .. हाथों और मुँह में बंदूक दबाकर इतरा रहे हैं .. नशे में डांस का वीडियो बनवा कर सिस्टम को चुनौती दे रहे हैं। सब इसी टूथपेस्ट की बदौलत। सच ही कहा था टेकचंद ने .. बहुत ही धाँसू प्रोडक्ट बना है। मुरारी जी टेकचंद के गुण गाते नहीं थक रहे हैं .. वाह - एक बार ब्रश करो और पाओ बेशरम हँसी अनलिमिटेड। मुरारी जी जोर-जोर से हँसने लगे हैं। पत्नी झकझोरते हुए कह रही है - "एक तो बेटाइम सो जाते हो .. ऊपर से बेमतलब के सपने देख-देख कर घर को सिर पर उठा लेते हो।"मुरारी जी चौंक कर उठ बैठते हैं जैसे सुबह हो गई हो। अब वह वाश बेसिन के पास खड़े-खड़े ब्रेस टूथपेस्ट खोज रहे हैं।

अरुण अर्णव खरे
डी-1/35 दानिश नगर

खत्म हुआ इंतजार

लगभग तीन वर्षों से अखण्ड जी से बात हो रही थी गहमर जाने व साहित्यिक कार्यक्रम में शामिल हो पाने के लिये परन्तु माँ कामाख्या देवी के आशीर्वाद से इस वर्ष ही कार्यक्रम बन पाया इस ९वें गोपाल राम गहमरी जी के स्मृति में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में। खास कर मेरी विशेष इच्छा थी अखण्ड गहमरी जी से मिलने की जो गोपालराम गहमरी के परिवार के न होते हुए भी इतना सुंदर साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। बिना किसी रेजिस्ट्रेशन शुल्क के। जब मैं गहमर सुबह के ५ बजे पहुंचा तो अखंड जी आ गए लेने स्टेशन पर। उनके साथ घर पहुंचे जहाँ ओम जी व राजेश दिलफेंक जी भी मौजूद थे। आतिथ्य स्वागत के अखंड जी फिर किसी कार्य हेतु चले गए। २२ दिसंबर को कार्यक्रम की शुरुआत हुई। ओम जी और राजेश जी अपने साथी बन चुके थे जो बड़े भाई की तरह मेरा मार्गदर्शन भी कर रहे थे।

कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत हो चुकी थी। सभी विद्वतजनों का आगमन होता जा रहा था और उनसे मुलाकात का सिलसिला भी जारी था। जिसमें प्रदीप जी, किसलय जी, पुष्पा जी, डॉ रश्मि जी, डॉ अपूर्वा जी, फिल्मकार सुनील दत्त जी, गणेश विद्यार्थी, पागल जी आदि से परिचय हुआ। इन सभी विद्वतजन के साथ २३ व २४ दिसंबर के कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुतियां मन के कोने में अपनी एक यादगार छवि बना गयीं। इन सभी से बीच जो सबसे खास रहीं संतोष जी जो जहाँ भी मिलती व जब भी वह कहतीं और डॉ साब सब ठीक है। उन्हीं के साथ मेरी प्रियंका जी से से मुलाकात हुई जो मथुरा से अपने परिवार के साथ आयीं थीं। उनके परिवार की मथुरा की होली व नाग नथैया कार्यक्रम सबसे ज्यादा असर किया जो अभी तक मन में एक झंकार छेड़ जाता है। गोप दादा एक अभिभावक की तरह मेरा सबसे ज्यादा ख्याल रखते रहे। हालाँकि मैं इस कार्यक्रम की सबसे कमजोर कड़ी था परंतु अखंड जी ने अपने कार्यक्रम में साहित्य सरोज शिक्षक सम्मान से पुरस्कृत होने के लिए मुझे आमंत्रित किया था। वह पुरस्कार भी मिला परन्तु इस कार्यक्रम में समस्त साहित्यकारों ने जो अपना सानिध्य प्रदान किया, वह अविस्मरणीय रहेगा। एक निडर, स्पष्टवादी, मुखर साहित्यकार का व्यकितत्व जो रहा वह है अखंड गहमरी। जिनसे मैं बहुत कुछ सीख पाया और उस सीख को जीवन में अमल करने का प्रयास भी करूँगा। इस अद्भुत कार्यक्रम में शामिल करने के लिये अखंड जी को मेरा सलाम।

डॉ० बृजेश गुप्ता, बाँदा

सरहद से करवा चौथ

आज मेरा करवा चौथ व्रत है। मेरे पति सीमा पर तैनात होकर अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। वैसे तो जो दिल मे रहते हैं उन्हें याद करना नहीं पड़ता लेकिन आज जब करवा चौथ के लिए हम सोलह श्रंगार किये उनकी लम्बी उम्र की कामना के लिए व्रत रखे हैं उनकी कमी बहुत ही महसूस होती है। करवा चौथ व्रत सुहागिन स्त्रीयों के लिए बहुत महत्व रखता है। मैं आपको करवा चौथ के महत्व और उसकी महिमा की एक कहानी सुना रही हूं। बहुत समय पहले की बात है, एक साहूकार के सात बेटे और उनकी एक बहन करवा थी। सभी सातों भाई अपनी बहन से बहुत प्यार करते थे। यहाँ तक कि वे पहले उसे खाना खिलाते और बाद में स्वयं खाते थे। एक बार उनकी बहन ससुराल से मायके आई हुई थी। शाम को भाई जब अपना व्यापार-व्यवसाय बंद कर घर आए तो देखा उनकी बहन बहुत व्याकुल थी। सभी भाई खाना खाने बैठे और अपनी बहन से भी खाने का आग्रह करने लगे, लेकिन बहन ने बताया कि उसका आज करवा चौथ का निर्जल व्रत है और वह खाना सिर्फ चंद्रमा को देखकर उसे अर्ध्य देकर ही खा सकती है। चूँकि चंद्रमा अभी तक नहीं निकला है, इसलिए वह भूख-प्यास से व्याकुल हो उठी है। सबसे छोटे भाई को अपनी बहन की हालत देखी नहीं जाती और वह दूर पीपल के पेड़ पर एक दीपक जलाकर चलनी की ओट में रख देता है। दूर से देखने पर वह ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे चतुर्थी का चाँद उदित हो रहा हो। इसके बाद भाई अपनी बहन को बताता है कि चाँद निकल आया है, तुम उसे अर्घ्य देने के बाद भोजन कर सकती हो। बहन खुशी के मारे सीढ़ियों पर चढ़कर चाँद को देखती है, उसे अर्घ्य देकर खाना खाने बैठ जाती है।

वह पहला टुकड़ा मुँह में डालती है तो उसे छींक आ जाती है। दूसरा टुकड़ा डालती है तो उसमें बाल निकल आता है और जैसे ही तीसरा टुकड़ा मुँह में डालने की कोशिश करती है तो उसके पति की मृत्यु का समाचार उसे मिलता है। वह बौखला जाती है। उसकी भाभी उसे सच्चाई से अवगत कराती है कि उसके साथ ऐसा क्यों हुआ। करवा चौथ का व्रत गलत तरीके से टूटने के कारण देवता उससे नाराज हो गए हैं और उन्होंने ऐसा किया है। सच्चाई जानने के बाद करवा निश्चय करती है कि वह अपने पति का अंतिम संस्कार नहीं होने देगी और अपने सतीत्व से उन्हें पुनर्जीवन दिलाकर रहेगी। वह पूरे एक साल तक अपने पति के शव के पास बैठी रहती है। उसकी देखभाल करती है। उसके ऊपर उगने वाली सूईनुमा घास को वह एकत्रित करती जाती है। एक साल बाद फिर करवा चौथ का दिन आता है। उसकी सभी भाभियाँ करवा चौथ का व्रत रखती हैं। जब भाभियाँ उससे आशीर्वाद लेने आती हैं तो वह प्रत्येक भाभी से 'यम सूई ले लो, पिय सूई दे दो, मुझे भी अपनी जैसी सुहागिन बना दो' ऐसा आग्रह करती है, लेकिन हर बार भाभी उसे अगली भाभी से आग्रह करने का कह चली जाती है।

इस प्रकार जब छठे नंबर की भाभी आती है तो करवा उससे भी यही बात दोहराती है। यह भाभी उसे बताती है कि चूँकि सबसे छोटे भाई की वजह से उसका व्रत टूटा था अतः उसकी पत्नी में ही शक्ति है कि वह तुम्हारे पति को दोबारा जीवित कर सकती है, इसलिए जब वह आए तो तुम उसे पकड़ लेना और जब तक वह तुम्हारे पति को जिंदा न कर दे, उसे नहीं छोड़ना। ऐसा कह के वह चली जाती है। सबसे अंत में छोटी भाभी आती है। करवा उनसे भी सुहागिन बनने का आग्रह करती है, लेकिन वह टालमटोली करने लगती है। इसे देख करवा उन्हें जोर से पकड़ लेती है और अपने सुहाग को जिंदा करने के लिए कहती है। भाभी उससे छुड़ाने के लिए नोचती है, खसोटती है, लेकिन करवा नहीं छोड़ती है। अंत में उसकी तपस्या को देख भाभी पसीज जाती है और अपनी छोटी अँगुली को चीरकर उसमें से अमृत उसके पति के मुँह में डाल देती है। करवा का पति तुरंत श्रीगणेश-श्रीगणेश कहता हुआ उठ बैठता है। इस प्रकार प्रभु कृपा से उसकी छोटी भाभी के माध्यम से करवा को अपना सुहाग वापस मिल जाता है। हे श्री गणेश माँ गौरी जिस प्रकार करवा को चिर सुहागन का वरदान आपसे मिला है, वैसा ही सब सुहागिनों को मिले।

पति परदेश में हो या सीमा पर हम सुहागिन औरतें चांद में उसकी सूरत देख लेती हैं। गहमर के हर घर में करवा चौथ और चौथ में अधिकांश सुहागिन महिलाएं फोटो में पति को देख कर जल ग्रहण करती है , क्योंकि पति मां भारती की रक्षा के लिए सीमा पर तैनात होता है, जो केवल अपने पति धर्म निभाने के लिए सीमा छोड़ कर घर नही आता।

रीवा सिंह गहमर, गाजीपुर उत्तर प्रदेश

गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव पर एक रिपोर्ट साहित्य सरोज

भारत में जासूसी उपन्यासों के जनक कहे जाने वाले प्रसिद्ध उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की स्मृति में आयोजित होने वाला 9वां गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव 24 दिसम्बर को समाप्त हो गया। इस महोत्सव में देश भर से आये 40 से अधिक साहित्यकारों एवं कलाकारों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ 22 दिसम्बर 2023 को मुख्य अतिथि एशिया महाद्वीप के सबसे बड़े गांव के प्रधान बलवंत सिंह बाला एवं विशिष्ठ अतिथि सूर्या हास्पीटल के प्रबन्धक डाक्टर संजीव सिंह के द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया गया। कार्यक्रम के प्रारंम्भ में सबसे पहले विगत 1 वर्ष में संसार से विदा हुए जाने-अंजाने साहित्यकारों एवं कलाकारों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रख कर सभी को श्रद्धांजली दी गई। मुख्यअतिथि के स्वागत उपरान्त डाक्टर संदीप अवस्थी जी द्वारा "भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता पर आनलाइन एवं आफलाइन चर्चा का आयोजन किया गया था। आफलाइन चर्चा में जयपुर से आये गोप कुमार मिश्र की अध्यक्षता में लखनऊ से आये ओम जी मिश्र, हाथरस से आयी संतोष शर्मा शान, गहमर से आये केशव प्रसाद उपाध्याय, आयोजक अखंड गहमरी ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन इन्दौर से आयी रश्मि राज वर्मा ने किया।

23 दिसम्बर को प्रथम सत्र अतिथिों के स्वागत था। इस सत्र के मुख्य अतिथि गहमर के समाजसेवी सुधीर सिंह जी थे। कार्यक्रम की शुरूआत में सभी अतिथियों नेअपना अपना परिचय दिया और आयोजक द्वारा माल्यपर्ण कर उनका स्वागत किया गया। द्वितीय सत्र कहानी सुनाने का था, जिसमें राजेश भटनागर जी, डक्टर अपूर्वा अवस्थी जी एवं प्रियंका खंडेलवाल जी ने अपनी-अपनी कहानी का वाचन किया। प्रियंका खंडेलवाल जी ने अपनी मातृभूमि वृंदावन के बंदरों पर आधारित कहानी का वाचन किया, वही राजेश भटनागर जी अपनी कहानी में भ्रूण हत्या को प्रमुखता दिया था। इस प्रकार पहले दिन का दो सत्र समाप्त हुआ।

तीसरा सत्र फिटनेश एवं रोजगार पर चर्चा का था, ममता सिंह के द्वारा आयोजित एवं धर्मेन्द्र सिंह के संचालन में आायोजित कार्यक्रम में राजू सिंह, हरिशचन्द्र सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, संजय सिंह, धर्मराज सिंह, मनोज सिंह ने अपने अपने विचार वक्त करते हुए फिटनेस के महत्व को समझाया।

दूसरे दिन के कार्यक्रम का चौथा सत्र लोकगीत, नृत्य और कृष्ण लीला का था।सत्र की शुरूआत हाथरस से आई संतोष शर्मा शान की एकांकी अपंग भिखारन की व्यथा से हुई। उसकी एकांकी के प्रस्तुतिकरण के समय पूरे कार्यक्रम स्थल पर खामोशी छा गई। उन्होनें एक अपंग भिखारन के उस दर्द को चित्रित किया जिसमें अपने भूख दुधमुहे बच्चे के लिए दूध मांगती है लेकिन कोई उसे दूध नहीं देता। दूध के आभाव में उसका बच्चा मर जाता है लेकिन वह समझ नहीं पाती है कि उसका बच्चा मर गया।

इसके बाद लखनऊ से आयी जाह्नवी कुमारी का नृत्य प्रस्तुत हुआ। जयपुर से आये राजेश कुमार भटनागर जी ने बांसुरी वादन से अपना शमां बाध दिया। बांसुरी वादन के बाद लखनऊ से आई अपूर्वा अवस्थी, गीतिका श्रीवास्तव, कनक वर्मा, रीता श्रीवास्तव, निशा मोहन, पूर्वी चम्परान से आये पंडित निराला

स्वामी एवं जयपुर से आये गोप कुमार मिश्र द्वारा लोकगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में वृंदावन से आयी प्रियंका खंडेलवाल, तारिका खंडेलवाल, मोहन खंडेलवाल, पुष्पा खंडेलवाल, संतोष शर्मा शान, गहमर की नम्रता सिंह एवं उनकी टीम द्वारा नाग नथैया, एवं फूलों की होली का मनभावन आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम की मुख्यअतिथि पूर्व सहकारिता मंत्री लेखिका एवं कवयित्री संगीता बलवंत जी थी। इस अवसर पर उन्होनें सभी को अपनी स्वरचित कविता भी सुनाई।

द्वितीय दिन का पांचवा सत्र कवयित्री सम्मेलन का था, जिसमें दिल्ली से आई पुष्पा सिंह की अध्यक्षता में अनुपपुर मध्य प्रदेश से आयी मीना सिंह, लखनऊ से आई अपूर्वा अवस्थी, कनक वर्मा, गीतिका श्रीवास्तव गाजीपुर से आई ज्योति कुशवाहा एवं मुंगेर बिहार से आयी कुमकुम काव्यकृति ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम रात 01 बजे तक चलाता रहा। संचालन अखंड गहमरी ने किया । इस प्रकार 9वें गोपालराम गहमरी महोत्सव का दूसरा दिन समाप्त हुआ।

कार्यक्रम के तीसरे एवं अंतिम दिन की शुरूआत गंगा स्थान एवं मां कामाख्या दर्शन से हुई। सुबह 7 बजे सभी अतिथि गहमर के नारायणी गंगाघाट पर आयोजक की व्यवस्था से पहुँचे। गंगा में स्नान एवं आराधना के बाद सभी नाव से बीच धारा में जाकर गंगा मां की परिक्रमा किया और फिर मां कामाख्या धाम के लिए प्रस्थान कर गये। मां कामाख्या धाम पर पूजन इत्यादि के बाद गर्भगृह के पास सभी अतिथियों ने अपनी-अपनी भक्ति मय रचना मां को समर्पित किया। काव्य प्रस्तुति के बाद मंदिर के मंहत श्री आकाश तिवारी जी द्वारा सभी को प्रसाद एवं अंगवस्त्रम् देकर चाय नास्ते की व्यवस्था किया गया।

तीसरे दिन कार्यक्रम स्थल पर तृतीय सत्र में मन की बात कार्यक्रम शुरू हुआ जिसमें लखनऊ से आये क्रिसटल किसलय, ज्योति किरण रतन, डॉ अपूर्वा अवस्थी, हाथरस से आयी संतोष शर्मा शान, जयपुर से आये गोप कुमार मिश्र, जयपुर से ही आये राजेश कुमार भटनागर, दिल्ली से आयीं पुष्पा सिंह इत्यादि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस सत्र के बाद भोजन का कार्यक्रम हुआ। भोजन के बाद फोटोग्राफी की कार्यशाला से जुड़े और लखनऊ की डाक्टर अपूर्वा अवस्थी को गोपाल राम गहमरी स्मृति सम्मान गीतिका श्रीवास्तव को रामयश सिंह तहसीलदार स्मृति सम्मान, कनक वर्मा को साहित्य सरोज स्मृति सम्मान, रीता श्रीवास्तव भोला नाथ गहमरी स्मृति सम्मान, निशा मोहन साहित्य सरोज सारस्वत सम्मान, ज्योति किरण रतन को हिन्दी साहित्य एवं कला के क्षेत्र में सर्वांर्गिण विकास हेतु संस्था की सबसे बड़ा महिला सम्मान श्री सरोज सिंह गौरव सम्मान एवं दिल्ली से आयी पुष्पा सिंह को उपन्यास लेखन के क्षेत्र में गोपालराम गहमरी उपन्यासकार सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया।

रात 8 बजे कवि सम्मलेन की शुरूआत वृदांवन से आयी तारिका खंडेलवाल की सरस्वती वंदना से हुई। उसके उपरान्त हाथरस से आयी संतोष शर्मा शान, लखनऊ से आये क्रिसटल किसलय, जयपुर से आये गोप कुमार मिश्र, राजेश कुमार भटनागर, आगरा से आये गणेश शर्मा विद्यार्थी, प्रयागराज से आये दयाशंकर, गाजीपुर से आई रवीना, बॉदा से आये डाक्टर बृजेश कुमार गुप्ता, खगड़िया से आये विनोद कुमार विक्की, पूर्वी चम्परान से आये पंडित निराला स्वामी ने गाजीपुर से आये विनय राय बबुरंग

की जी की अध्यक्षता में काव्यपाठ किया। संचालन हरदोई से आये राम भोले शर्मा पागल ने किया। इस अवसर पर नारायणी संस्था दिल्ली, फिल्म निर्माता सुनील दत्त मिश्र, लखनऊ से आयी डा अपूर्वा अवस्थी, कनक वर्मा, रीता श्रीवास्तव इत्यादि एवं वृदांवन से आये पिता तुल्य मोहन खंडेलवाल एवं मां पुष्पा खंडेलवाल द्वारा आयोजक अखंड गहमरी को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में सम्मान समरोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि वर्तमान जमानियां विधायक ओम प्रकाश सिंह के प्रतिनिध अभिमन्यु सिंह द्वारा हिन्दी साहित्य एवं कला के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान हेतु जयपुर के गोप कुमार मिश्रा को राजा धाम देव राव गौरव सम्मान, महोबा के डाक्टर बृजेश कुमार गुप्ता को साहित्य सरोज शिक्षक सम्मान 2023, ईशिका शर्मा को साहित्य सरोज बाल कलाकार सम्मान 2023, हाथरस की संतोष शर्मा शान को उत्कृष्ठ एकांकी प्रस्तुतिकरण के लिए गोपाल राम गहमरी अमिनय सम्मान2023, वृदांवन की तारिका खडेलवाल को गोपाल राम गहमरी बाल कलाकार सम्मान 2023, बिलासपुर की सुनील दत्त मिश्रा को गोपालराम गहमरी चलचित्र निर्माता सम्मान 2023, मथुरा की प्रियंका खंडेलवाल जी को लेखक के क्षेत्र में साहित्य सरोज गौरव सम्मान, काव्य लेखन में अनुपपुर मध्य प्रदेश की मीना सिंह को गोपालराम गहमरी रचनाकार सम्मान 2023, राजेश कुमार भटनागर को कहानी लेखन के क्षेत्र में गोपालराम गहमरी कहानीकार सम्मान 2023, कविता लेखन के क्षेत्र में ओम जी मिश्र गोपालराम गहमरी काव्य गौरव सम्मान 2023, काव्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आगरा के गणेश शंकर शर्मा को गोपालराम गहमरी काव्य साधक सम्मान 2023, पुस्तक देहगंध को गोपालराम गहमरी पुस्तक सम्मान 2023, व्यंग्य विधा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु खगड़िया के विनोद कुमार विक्की को गोपालराम गहमरी व्यंग्य साधक सम्मान 2023, उज्जैन से आई डाक्टर रश्मि राज वर्मा को कविता लेखन में साहित्य सरोज गौरव सम्मान 2023, चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदार हेतु बक्सर बिहार के डाक्टर ज्ञान प्रकाश सिंह को गोपालराम गहमरी चिकित्सक सम्मान 2023, प्रणाम प्रर्यटन को गोपाल राम गहमरी पत्रिका सम्मान 2023, भोजपुरी भाषा के सर्वगीण विकास में बहुमुल्य योगदान हेतु डेढ़गांवा गाजीपुर के विनय राय बबुरंग जी को वीर मैगर सिंह स्मृति सम्मान 2023, बरेली की डाक्टर निशा शर्मा को गद्य विधा में बहुमुल्य योगदान हेतु श्रीमती सरोज सिंह गौरव सम्मान 2023, अमरपुर बिहार के डॉ आलोक प्रेमी को गद्य लेखन के क्षेत्र में गोपालराम गहमरी युवा लेखक सम्मान 2023 देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की समाप्ति पर संस्था के सर्वोच्च सम्मान राजाधाम देव राव सम्मान से सम्मानित गोप कुमार मिश्र ने कहा कि हम सभी सम्मान प्राप्तकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि वह इस वर्ष को गोपालराम गहमरी के नाम पर समर्पित करें और कोशिश करें कि वह कम से कम दो जासूसी कहानीयां लिखें और दो कहानीयों की समीक्षा करके अपने क्षेत्र में कम से कम एक बार जासूसी कहानी के लेखक पर कार्यशाला का आयोजन करें।

विदाई कार्यक्रम में गहमर वेलफेयर सोसाइटी के प्रबन्धक एवं साहित्य सरोज पत्रिका के प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह ने सबका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह आयोजन सीखने और सिखाने के लिए होता है, इस वर्ष वह रोजगार, फिटनेस, कला, संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करने के लिए देश भर में कैंप लगायेगी।

कितना खाते हैं पान अखंड सर

ट्रेन में बैठकर ठण्डी -ठण्डी हवा का आनंद लेते हुए हम सभी गहमर स्टेशन का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। एक के बाद एक स्टेशन निकलते जा रहे थे। एशिया के सबसे बड़े गाँव गहमर को देखने की जिज्ञासा मेरे,माता-पिता जी के साथ तारिका के मन में भी थी । जैसे ही ट्रेन में किसी सज़्ज़न ने बताया की आने वाला हैं गहमर तो ऐसा लगा जैसे बहुत पुराना नाता हैं खैर नाम मात्र से ही अपनेपन का एहसास होने लगा था और अब वह समय भी आ गया था जब हमारी ट्रैन फौजियो की ज़मी गहमर स्टेशन पर पहुँच गई थी। ट्रेन से उतरते ही आटो चालक जी से कार्यक्रम स्थल चलने के लिए कहा तभी पीछे से एक बाबूजी ने आवाज़ लगाई पीछे मुड़ कर देखा तो वह सब्जी के कट्टे हाथ में लिए नज़र आ रहें थे ।

उन्होंने हमें अखंड ग़हमरी सर जी को फ़ोन करने के लिए कहा। हमने अखंड सर को फ़ोन किया तभी देखा की वह बाबूजी तो स्वयं अपना सामन लेकर चल दिए और हम वही एक दूसरे की शक्ल देखते रह गए । खैर हम स्टेशन से बाहर निकले वैसे ही सर अपनी सवारी बाइक के साथ हमारे सामने हमारा स्वागत करने के लिए स्टेशन पहुँच गए। शक्ल से सख्त, मुँह में पान और आटो चालक जी से इशारों में बात करते देख हमें तो अपने समय के राजा पान वाले अंकल का स्मरण हो आया। गतिविधिया कार्बन कॉपी लग रही थी। खैर। हम आटो में बैठे और सोचने लगे की हमारी जमेगी की नहीं क्योंकि हम तो ठहरे बिंदास मिज़ाज के, ज़्यादा सख्त मिजाज़ वालो से तो छत्तीस का आकड़ा और उनको हम खिड़की के झरोखो से ही राधे -राधे कर प्रसन्न हो जाते हैं। लेकिन यहाँ यह संभव कहाँ था? आज ऐसा लग रहा था मानों ऊँट पहाड़ के नीचे आ गया हो । यहीं सब सोच रहें थे की तभी आटो चालक जी ने अपना आटो को कार्यक्रम स्थल पर रोक दिया।

कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे तो ओम मिश्र जी , सुनील दत्त जी ने हँसते हुए और खुले दिल से हमारा स्वागत किया। तब थोड़ा हमें भी लगा की भगवान ने रहम की है। कमरे में पहुँचते ही पुष्पा मैम से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ । जिन्होंने हमें नई -नई जानकारी दी । लेकिन दिल्ली वालो में एक बात है ध्यान बहुत देते हैं.. एक रंग की साड़ी होने के कारण मैम ने मम्मी से पूछ लिया की आपने जो साड़ी अभी पहनी थी वही पहनी हैं क्या?

अब एक नया अध्याय शुरू हुआ । मैम की नज़रो के साथ।तीन एक रंग की साड़ी में से २ ही मैम के सामने निकाली वरना मैम परेशान हो जाती और फिर पूछ लेती की यह वही साड़ी है क्या? मैं तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो रही थी। तभी अखंड सर का बुलावा आया नाश्ता तैयार है । फिर क्या था हम चल दिए जहाँ नाश्ते की मेज़ सजी हुई थी तभी नाश्ते की मेज़ पर,माँ कामाख्या और कान्हा की कृपा से एशिया के सबसे बड़े गाँव में ब्रज क्षेत्र हाथरस और मथुरा का संगम हुआ । इस संगम का विस्तार मंच पर प्रस्तुति और स्वादिष्ट भोजन की मेज़ के साथ बढ़ता ही जा रहा था । हमारे तोते तो तब उड़े जब दादाजी के सामने हमने गुस्ताखी यह कह कर कर दी कि "मम्मी थोड़ा घूम आते हैं ।" यह सुन दादाजी ने हमें आड़े हाथों लिया । दादाजी ने हमसे पूछा काल क्या हैं? हम व्याकरण के काल बता कर खुश थे वही दादाजी हिन्दी साहित्य के इतिहास से कालखंड को लेकर प्रश्न कर रहें थे स इसी उधेड़ बुन में दादजी का गुस्सा कौन से आसमां पर पहुँच गया पता ही नहीं चला । तभी साथ बैठे एक शांत स्वाभाव वाले सर ने रीतिकाल बोले, यह सुन दिमाग़ की बत्ती जल उठी फिर क्या था?।अंधकार समाप्त और उजाला शुरु ।

अब हमने बताना शुरू किया। दादाजी हमारे चुप होने का इंतज़ार कर रहें थे । जब तक हम शांत हुए तब तक दादाजी का गुस्सा भी उड़न छू हो गया और हमारी इज़्ज़त का फालूदा बनने से बच गया । तभी अखंड सर ने कार्यक्रमो की रूप रेखा बतानी शुरु किया। धीरे -धीरे कार्यकम आगे बढ़ रहा था और अब कहानी वाचन का एलान हो चुका था हम सोच कर बैठे थे की किसी को पहले सुन लेगे फिर उन्ही कि नकल कर लेगे लेकिन अखंड सर पहले से ही खतरे की घंटी थे और बजी भी सबसे पहले हमारे नाम के साथ ही। अब क्या था नकल करने का अवसर तो हाथ से निकल गया। अक्ल के घोड़े दौड़ाने का नंबर आया तो घोड़े ऐसे दौड़े की बेलगाम हो गए और अपनी कहानी की समीक्षा स्वयं ही कर बैठे। जब दिमाग़ के घोड़े शांत खड़े हुए तो पता चला की सीमा पार कर दी। अब फिर अखंड सर की सूरत देख मैं अपने आप पर हस रही थी। लेकिन मेरी कहानी सब को पसंद आई तो मैं

दौड़ाये घोड़ो को भूल ही गई स गोप दादा जी , शान जी , ओम मिश्र जी सभी ने छोटी -छोटी लेकिन मोटी बातें बता कर हमारे लेखन में सुधार करने का प्रयत्न किया। ज्ञान की बातें होती रही और वह बेला अब आ गई जब सांस्कृतिक कार्यक्रमो का आगाज़ होना था। हम अपने कमरें में कान्हा और राधा को तैयार कर रहें थे तभी ज्योति और इशिका ने कार्यक्रम के विषय में जानना चाह। बिना कुछ बताएं तुरंत उनको तैयार होने के लिए कहा वो न किए बिना दोनों तैयार हो गई और हमारी तीन कलाकारों की टोली अब बड़ी हो गई । अब हम अपनी प्रस्तुति देने का इंतज़ार करते हुए फूलों को तोड़ रहें थे । अब वह समय भी आ गया जब हमको अपनी प्रस्तुति करनी थी । सभी ध्यान से हमारे कार्यक्रम को देख रहें थे लेकिन तालियां बजाने में कंजूसी कर रहें थे । अब हम भी ब्रज वाले आप मत बजाओ हम बजाते हैं । फिर क्या था हमने जो सभी को लाठिया बरसाई। सब मजे लेते रह गए। सभी ने आनंद लिया प्यार भरी लाठीयों का और फूलों की होली का ।

अगली सुबह माँ कामाख्या मंदिर जाते हुए देखा की जिस गाँव में हर घर में फौजी हैं वहाँ के निवासी प्रकृति प्रेमी हैं । पूरे दिन सभी से गुफ़्तगू करते-करते कब रात हो गई पता ही नहीं चला । ८० साल के विनय राय जी ने जिस प्रकार वर्तमान शिक्षा की खामियों पर चुटकी लेते हुए काव्य पाठ बोले।पूरे वातावरण में वाह!वाह के शब्द सुनाई देने लगे । तो वही गणेश जी,दिल फरेब जी,राम भोले शर्मा जी हमारी हँसी और बातों से परेशान हो गए थे । और हम यह सोच कर परेशान हैं की अखंड ग़हमरी सर एक दिन में कितने पान खाते हैं?। खैर पहली बार गहमर के स्थानीय लोगों से साथ ही अखंड सर के परिवार से जो मान और सम्मान मिला उसने दिल को छू लिया और अपना बना लिया।

प्रियंका खंडेलवाल
मथुरा,
प्रस्तुति बृजकी होली एवं नाग-नथ्या

रहेगा याद

मैं भी मूलत गाज़ीपुर जिला के कासिमाबाद ब्लाक के सिधागर घाट गांव का रहने वाला हूं। मैंने गहमर गांव के बारे में बचपन से ही सुन रखा था ।मेरे मन में गहमर गांव को देखने की इच्छा बचपन से ही थी। अपने गांव के लोगों विशेष रूप से जो फौजी है उनके मुख से ”फौजियों की भूमि ”के बारे में सुनकर वहां की पावन मिट्टी को माथे पर लगाने की इच्छा होती । अंततः मां कामाख्या की इच्छा से मैं वीरों एवं साहित्यकारों की भूमि को परम आदरणीय श्री अखंड गहमरी जी की कृपा से देखने के सपने को साकार करने में सफल रहा। मैं गहमर वेलफेयर सोसाइटी द्वारा आयोजित ८वां गोपाल राम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव और कार्यक्रम में शामिल हुआ ।इसमें मेरी पुस्तक देहगध को पुस्तक सम्मान से नवाजा गया। यह मेरे लिए स्वर्ग की अनुभूति से कम नहीं जिस तरह से आदरणीय श्री गहमरी जी ने हम लोगों के ठहरने, खाने-पीने की व्यवस्था की थी उसकी जितनी भी तारीफ की जाए कम है ।आदरणीय सर जी ने अत्यंत थके होने के बावजूद भी पूरा समय देकर जिस तरह से स्नान, दर्शन, पूजन करवाया वह जीवन भर याद रहेगा। आप द्वारा साहित्य एवं साहित्यकारों के लिए किया जाने वाला प्रयास निश्चित रूप से साहित्य के शिखर को छूएगा।

दयाशंकर प्रसाद
छोटा बघाड़ा
प्रयागराज 211002

साहित्य सरोज पत्रिका के आगामी अंक के लिए अपने संस्मरण एवं जासूसी कहानीयां भेजें।
और जुड़े रोजगार एवं फिटनेस कार्यक्रम से हर माह
https://sahityasaroj.com, sarojsahitya55@gmail.com

एक महायज्ञ

एक बहुत ही महत्वपूर्ण और सुन्दर महायज्ञ , जिसमें अपनी कला रूपी सामग्री एवं सुगंधित लेखन के धूप से पूजा आरती में शामिल होने उत्तर प्रदेश , राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और बिहार सहित अन्य कई राज्यों के कई कई जिलों से पधारे साहित्य कला और संस्कृति से जुड़े महापंडितो का जो संगम हुआ। उस मां कामाख्या की आंचल में गंगा के पावन तट पर बसे पावन भूमि को एशिया का सबसे बड़ा सैनिकों का गाँव गहमर कहा जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल होने वाले जांबाजों का परिवार वर्तमान में तीनों सेना सहित ग्लेशियर की बर्फीली चोटियों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे गौरव के साथ महायज्ञ के उत्सव में २२ दिसम्बर से २४ दिसम्बर तक आयोजित इस कार्यक्रम में एक सैनिक की ही भांति कर्मठता यहाँ के आयोजक में भी दिखाई देती है।

वह शख्स अपने आप में एक मिसाल है जो दूसरों को भी बहुत कुछ सिखाता है समय स्वास्थ्य या परिस्थितियां चाहे जैसी भी हों अनुरूप या विपरीत! जीवन को उत्सव की तरह जिएं शायद इसी विचार से लगातार नौवें वर्ष भी इस आयोजन को पूर्ण सफलता के साथ आयोजित कर ' शुभारम्भ से समापन तक सभी के हृदय में बस गया...। आने वाले अगले दिसम्बर तक के लिए एक लक्ष्य मिला और वह है जासूसी उपन्यास के जनक कहे जाने वाले श्री गोपालराम गहमरी जी के स्मृति में आयोजित लेखन कला हेतु कार्यशाला और लेखन। यहाँ किसी को भी किसी एक स्तर पर नहीं आंका जाता वरन् हर प्रकार के साहित्यकार लेखक कवि एवं कलाकार को उसी रूप में स्नेह और सम्मान मिलता है जो एक उच्च कोटि के साहित्यकार लेखक और कलाकार को मिलता है। ना भीड़ की चाह ना खचाखच भरे माहौल में तालियों के गूंज की उम्मीद , बस शांत और प्रेम से मंत्रमुग्ध हो एक दूसरे से सीखने सिखाने 'अपनी विशेष विधा को और भी तराशने एवं समाज तक समाज के लोगों तक पहुँचाने को वह माँ सरस्वती की गोद (मंच) जिस मंच पर अपनी प्रस्तुति देकर शायद ही कोई उपस्थित गण ऐसे हों जो स्वयं को गौरान्वित न समझता हो इसी उत्सव में मंच पर प्रस्तुति का सौभाग्य हमें भी मिला जिस पर एक जीवंत प्रस्तुति के अवसर पर गण्यमान्य महानुभावों द्वारा हृदय तल से सराहना को हम किसी उपलब्धि से कम नहीं आंकते इसी प्रकार सभी के लेखन साहित्य कला लोक कला कत्थक ,ईश भक्ति देश भक्ति के साथ साथ इश्क़ मोहब्बत से परिपूर्ण महोत्सव में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी पूरी सफलता के साथ समापन भी हुआ । लेकिन इतने बड़े साहित्य कला महोत्सव में दो बातें दिल को छू कर वहीं बस गईं ' वे थीं एक जो मुझ जैसे तुच्छ लेखक की मात्र एक और पहली पुस्तक (लघुकथा संग्रह) जिसे उस साहित्य मेले के स्टॉल में ससम्मान स्थान दिया गया और जिन लोगों अथवा आगंतुकों ने वह संग्रह पढ़ा उन्होंने हृदय से सराहा भी।

और दूसरी ये कि बिना किसी सहायता के स्वयं के बल पर इतना बड़ा आयोजन करने के बावजूद विदाई समारोह में अंतिम दिन अंतिम क्षण सभी छोटे बड़े उच्च एवं प्रतिष्ठित जनों से हाथ जोड़कर अश्रुपूरित नेत्रों ' भर्राए कंठ से अपनी किसी भी प्रकार की त्रुटियों के लिए क्षमा याचना करना...! सच कहें तो जो भी सम्मान पुरस्कार उपाधि अलंकरण आदि हम सभी ने पाया उससे कहीं अधिक सम्मान के हकदार वे , उसका परिवार उस परिवार के लोग। ऐसे आयोजक प्रकाशक एवं कर्मठ व्यक्ति अखंड प्रताप सिंह (अखंड गहमरी) को हम हृदय तल की गहराइयों से साधुवाद धन्यवाद देते हैं । अंत में जासूसी उपन्यासकार गोपाल राम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव के यूँ ही वर्ष दर वर्ष आयोजित होने तथा प्रगति करते हुए अविरल माँ गंगा के धारा की तरह चलते रहने की मंगलमय कामना के साथ मेरी कलम बस इतना ही लिखने की सामर्थ्य रखती है नमन भारत की कला और साहित्य को।

संतोष शर्मा "शान "
हाथरस (उत्तर प्रदेश)

मार्निंग वाक पर मुलाकात

23एवं २४ दिसंबर २०२३ के दो दिन मेरे जीवन के अविस्मरणीय दिन रहेंगे। ज्योति जी से मार्निंग वॉक में बात होने के बाद गहमर जाने का कार्यक्रम निश्चित हुआ। कुछ भी पता नहीं था लेकिन ईश्वर की कृपा से बिना रूकावट सभी कार्य होते गये। परिवार में भी पति और बच्चों से सहर्ष स्वीकृति मिल गई और हम गहमर पहुंच गए। अखंड जी का अद्भुत व्यक्तित्व और साहित्य कला संस्कृति के प्रति अगाध समर्पण और कार्य देखकर मन आनंदित हो गया।

वहां पर उपस्थित सभी साहित्यकार, कवि और कलाकार से मिलकर बहुत अच्छा लगा। खासकर भटनागर सर जिन्होंने ढोलक पर साथ दिया, ओम भैया जिन्होंने हमें बहुत अच्छी चाय पिलाई और गोप सर जिनकी वाणी में सरस्वती मां का निवास था। गणेश शर्मा जी कविता अद्भुत रही और संतोष जी का अभिनय बहुत सुंदर रहा। साथ ही मथुरा से पधारे सभी लोग जिन्होंने फूलों की होली खेली ,मन मोह लिया।

सुनील दत्त मिश्रा सर से मिलकर बहुत सी जानकारियां मिली। हमारे साथ कनक वर्मा दीदी का सहयोग प्राप्त होता रहा और प्यारी जान्हवी से बहुत ही सहयोग मिला। उज्जैन और मध्य प्रदेश से पधारी सखियां का सुंदर साथ रहा।

अखंड जी के घर का वातावरण बहुत अच्छा लगा,पूज्य पिताजी द्वारा सबको आशीर्वाद मिला और ममता जी ने स्नेह पूर्वक भोजन की सुस्वादु व्यवस्था की। गंगा स्नान,नौका विहार और मां कामाख्या के दर्शन अलौकिक रहे।हम सब उन स्मृतियों को संजोए वापस घर आ गए।

मानस में तुलसीदास जी ने लिखा है

जा पर कृपा राम की होई। ता पर कृपा करे सब कोई।।

ये सब राम जी की ही कृपा है जो इतना सुन्दर कार्यक्रम और अखंड जी से भेंट हुई। आप सभी का हार्दिक आभार और धन्यवाद।

डा० अपूर्वा अवस्थी
लखनऊ

त्रैमासिक पत्रिका
साहित्य सरोज
RNI NO.UPHIN/2017/74520,ISSN: 2584-0843
माडलिंग, एक्टिंग एवं एंकरिंग कार्य हेतु
आवश्यकता है एक महिला की

उम्र : 25 से 45 वर्ष
कद : 5 या सवा 5 फुट
बदन : गठीला (मध्यम)
रंग : सांवला बाल : लम्बे
चेहरा : हसमुख आवाजः औसत
हावी : फोटोशूट, अभिनय और देशाटन।
समय : पर्याप्त
परिचय, तस्वीरें व वीडियो भेजें
akhandgahmari@gmail.com
सक्षम : एक फोटो/वीडियोग्राफर के साथ अकेले यात्रा करने में।

अखंड प्रताप सिंह "अखंड गहमरी"
प्रकाशक-साहित्य सरोज
संपादक-धर्मक्षेत्र
प्रबंन्धक गहमर वेलफेयर सोसाइटी
सम्पर्क करें 9451647845

जुड़े साहित्य सरोज एवं धर्मक्षेत्र के विशेष कार्यक्रम
साहित्य सरोज आपके द्वार
हम आयेगें आपके द्वार, होगें आपके लोग, लगेगी चौपाल
चर्चा होगी साहित्य, बाल महिला उत्थान फिटनेश, रोजगार, पर्यटन पर
चयन होगा प्रतिभाओं का, रेकार्डिंग होगी आपके कहानीयों की
बनेगी आपकी पहचान, बनेगा नया अंदाज जीने का
हैं आप तैयार तो करीये काल 9451647845
देश में कही सें

साहित्य सरोज पत्रिका के आगामी अंक के लिए अपने संस्मरण एवं जासूसी कहानीयां भेजें।
और जुड़े रोजगार एवं फिटनेस कार्यक्रम से हर माह
https://sahityasaroj.com, sarojsahitya55@gmail.com

मिला नया नाम

गंगा किनारे बसे एशिया के सबसे बड़े गांव जहां केवल मतदाताओं की संख्या २८ हजार है आप उस गांव की आबादी का अंदाज खुद लगा सकते हैं, और हर घर से एक ना एक जवान देश की रक्षा में सीमा पर तैनात है। उस मशहूर गांव गहमर (गाज़ीपुर) में गहमर वेलफेयर सोसाइटी एवं साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा तीन दिवसीय "६वें गोपाल राम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव" में जाने का अवसर प्राप्त हुआ।

बीकानेर हावड़ा सुपरफास्ट ट्रेन से पंडित दीनदयाल नगर और फिर दीन दयालउपाध्या नगर से गहमर जाने के लिए हाबड़ा अमृतसर पंजाब मेल पर सवार होकर जब उतरा तो आयोजक अखंड गहमरी को प्लेटफार्म पर ही पाया जबकि मैं सोच रहा था कि कार्यक्रम स्थल पर कैसे जा पाऊँगा। अखंड जी ने स्वयं स्टेशन आकर मेरी समस्या ही समाप्त कर दी।

पहले दिन काफी लोग पहुंच गए थे। ओम मिश्र जी और सुनिल दत्त जी लखनऊ और छत्तीसगढ़ से आए थे। थोड़ी देर बाद, बॉंदा से डाक्टर ब्रजेश गुप्ता भी पहुंच गए थे। रात हम अखंड जिनके निवास पर ही सोए। हाथरस की संतोष शर्मा पहले ही मौजूद थीं। यह कार्यक्रम न केवल साहित्य वरन कला को भी समर्पित था। पहले दिन पुस्तक अवलोकन और परिचय। दूसरे दिन साहित्य और कला को समर्पित जिसमें मैंने बांसुरी बजाई, तीसरे और अंतिम दिवस गंगा जी में स्नान और नौका विहार के आनंद के साथ ही मां कामाख्या मंदिर में दर्शन किये। मंदिर में भी भक्तिरस में डूबी काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अपनी रचना सुनाने का अवसर मिला। कार्यक्रम की खास बात यह रही कि देश के विभिन्न राज्यों से आए साहित्यकार और कलाकारों से पारिवारिक माहौल के बीच तीन दिन मुलाकात, सीखने-सिखाने का अवसर मिला।

कार्यक्रम के आयोजक और संस्थापक सम्माननीय अखंड गहमरी जी के व्यक्तित्व को जानने का अवसर मिला। मैं आश्चर्यचकित तब रह गया जब मैंने अखंड जी को दिसंबर की कड़ाके की ठंड में हमें लेने के लिए स्टेशन पर ढूंढता पाया। वे न केवल मुझे बल्कि कार्यक्रम में हर मेहमान को स्टेशन लेने यूं पहुंचे जैसे लड़की की शादी में लोग अपने खास मेहमानों को लेने स्टेशन पहुंचते हैं। यह उनका बड़प्पन और अपने ग्रुप के साथीयों के प्रति घोर प्रेम दर्शाता है। एक नहीं उनकी अनेक बातों से अभिभूत हुआ हूं। श्री अखंड जी अपनी धुन के पक्के, वादे के पक्के, झूठे आडंबरों से दूर और प्रशंसा से भी दूर रहने वाले जमीन से जुड़े वास्तविक साहित्यकार हैं। उनका साहित्यिक दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट और आज की चमक से कोसों दूर है।

भावुक पल कार्यक्रम के अंतिम दिवस पर आभार प्रकट करते हुए जब अखंड जी रो पड़े तो ....माहौल गमगीन हो उठा। अखंड जी के अंदर का बच्चा जैसे अपनों के बिछड़ने की कल्पना मात्र से रो रहा था...जैसे बेटी का बाप बेटी के विदा होने पर रो पड़ता हो...। वो क्षण सबके लिए अप्रत्याशित था। कभी किसी कार्यक्रम के संयोजक को यूं रोते हुए नहीं देखा था। कार्यक्रम में साहित्यक योगदान के लिए संस्था की ओर से मुझे सम्मानित भी किया गया। कुछ यादगार झलकियां..."

"खास बात"

सबसे खास बात यहां अखंड गहमरी जी के गांव से मुझे कवि होने के नाते कहा गया कि आप कवि हैं मगर आपका नाम कवियों वाला नहीं, आपका उपनाम तो होना चाहिए। तब मैंने कहा यह उपनाम आप रख दीजिए। बस कार्यक्रम में सबके सामने मुझे कवि राजेश 'दिलफेंक' के नाम से पुकारा गया और मुझे दिलफेंक उपनाम दे दिया गया। अब से मैं इसी नाम से गीत, ग़ज़ल लिखूंगा और कवि के रूप में इसी नाम से जाना जाऊंगा। गहमर के दाल भात और लिट्टी चोखा का स्वाद अभी भी मेरी जुबान पर है।

कवि राजेश "दिलफेंक"
जयपुर - अजमेर

सब एक समान

किसी भी व्यक्ति को आमंत्रण पत्र भेजना यानि आमंत्रित करने के कई तरीके होते हैं। आमंत्रित करने के तरीके से ही मेहमान यह निर्णय लेता है कि आमंत्रण को स्वीकार करना श्रेयकर होगा या नहीं। मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि आमंत्रण पत्र भेजने की कला में श्री अखंड प्रताप गहमरी जी को अच्छा अनुभव है। मैं उनके प्रोग्राम नवें गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव २०२३ में एक बार के अनुरोध से उनके कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए मन बना लिया। बताने की जरूरत नहीं है कि मैं अखंड जी के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित हुआ और उनके आतिथ्य को सहर्ष स्वीकार कर लिया। प्रोग्राम का स्थल एक गांव था जो मुझको अपनी तरफ बहुत आकर्षित किया। गहमर गांव लखनऊ शहर से ट्रेन मार्ग द्वारा लगभग ३८० कि.मी. हैं जहां पर कुछ ट्रेनों का ही स्टापेज है लेकिन मुझे श्रमजीवी एक्सप्रेस के ए सी कोच में नीचे की बर्थ मिल गयी। लगे हाथ लौटने का टिकट भी कन्फर्म मिल गया अर्थात यात्रा तो सुनिश्चित हो गई। अब दिमाग में तरह तरह के सवाल पैदा होने लगे। गांव में आयोजक का आयोजन करने का स्तर कैसा होगा यानि वहां पर बिजली, पानी, सड़क जैसी मूलभूत सुविधायें मुहैया होंगी या नहीं। गांव के बारे गूगल और आयोजक से जो सूचनायें मिली वह पर्याप्त थी कार्यक्रम स्थल में पहुंचने और अन्य जानकारी के लिए।

दिसंबर २१, २०२३ को यात्रा पर चल पड़ा और अगले दिन हल्की ठंड के बीच सुबह-सुबह रेलवे-स्टेशन गहमर पहुंच गया। यह स्टेशन काफी साफ सुथरा और यहां का वातावरण काफी शांत था। स्टेशन से बाहर आना और थोड़ी दूर चलने के बाद ही अखंड जी के दर्शन, अच्छी अनुभूति हुई। उसके बाद उनके आवास पर उनके पिता जी से मुलाकात और परिवार के अन्य सदस्यों का आत्मीयता भरा अपनापन मेरे मानसिक पटल पर स्मृति बन कर अमिट छाप छोड़ गया। कुछ कलाकार जैसे संतोष शर्मा जी, श्री राजेश भटनागर, श्री हरि ओम जी, डॉ षुष्पा जी, डॉ बृजेश गुप्ता जी से पहली मुलाकात अच्छी लगी। बाद में धीरे-धीरे अन्य कलाकार जुड़ने लगे और स्नान ध्यान के बाद नाश्ता फिर दोपहर का लजीज भोजन, सच कहूं, मेरी सभी शंकाएं जो गांव के लिए मेरे मष्तिष्क में थी वे दूर हो गई। हम सभी अतिथि अब कामाख्या महाविद्यालय, की ओर गांव में इस महाविद्यालय का प्रांगण देखने लायक था। हरे भरे पेड़ हम लोगों को आकर्षित कर रहे है।यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि अगले तीन दिन तक हम सभी लोग इसी प्रांगण में विभिन्न हॉल में रहेंगे और आयोजित कार्यक्रम के सहभागी बनेंगे।

पहला दिन यानि अगले तीन दिन तक आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को सूचीबद्ध करना और उसको क्रियान्वित करना जो आयोजक और उनके टीम के लिए चुनौतिपूर्ण होता है और रहा भी। मैं विभिन्न आयोजित कार्यक्रमों में गया हूं जहां आयोजक की उपलब्धता थोड़ी मुश्किल होती है उनके स्थान पर एक मनोनीत प्रशासक कुछ फार्म भरवाते हैं जिसको रजिस्ट्रेशन फार्म के नाम से जाना जाता है जिसके माध्यम से लक्ष्मी जी को स्वीकार किया जाता है, उसके बाद ही आयोजक के साक्षात दर्शन होते हैं।

यहां पर इस तरह का कुछ भी नहीं था।जैसा अखंड जी ने स्वीकार किया कि सभी सूचीबद्ध कार्यक्रम समयानुसार संपन्न होंगे लेकिन किसी कारण से थोड़ा-बहुत विलंब होता हो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं।इतना स्पष्ट बोलने वाले कम ही आयोजक होते हैं।

पहले दिन से अंतिम दिन तक कार्यक्रम की विशेषता रही कि किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के लिए किसी कार्यक्रम के रूपरेखा के समय में परिवर्तन नहीं किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न आयोजन को आयोजित किया गया जो सारगर्भित थे। कुछ महत्वपूर्ण उल्लेखनीय विविध आयोजन जैसे कलाकारों का आपस में परिचय, गंगा स्नान के समय सुरक्षा व्यवस्था, कामाख्या देवी के दर्शन, रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन यादगार बन गए।

अंत में कुछ लाईने आयोजक के लिए

एक आयोजन को आयोजित करना अपने आप में
बहुत बड़ा संग्राम है आयोजक अखंड जी का कोई
सानिध्य नहीं हम उनके कार्यशैली के कायल और
मेहमानवाज़ी के शुक्रगुज़ार हैं

किसलय दुबे
लखनऊ

पहली बार ससुराल में काव्यपाठ

गाजीपुर जिले में स्थित गहमर ग्राम अपने आप में अनूठा और ऐतिहासिक गांव है। यह गांव वीरो की भूमि, शहीदों की भूमि और साहित्यकारों की भूमि के लिए मशहूर है। यहां के फौजी भाई, अपनी देश सेवा और वीरता के लिए मशहूर है। यहां पर मां गंगा का स्वच्छ और निर्मल रूप प्राकृतिक सौंदर्य मन को मोह लेने वाला है। अत्यंत प्राचीन ऐतिहासिक मंदिरों के लिए मशहूर है जिसमें की मां कामाख्या का मंदिर सिद्ध शक्तिपीठ ख्याति प्राप्त है। राजपूत का बाहुल्य होने तथा उनकी कुलदेवी मां कामाख्या और कुल देवता बड़का बाबा को माना जाता है।

साहित्य की दुनिया में जासूसी उपन्यासकार के रूप में गोपालराम गहमरी जी की जन्मस्थली भी है । सर्वश्रेष्ठ रचनाकार के रूप में जासूसी उपन्यासकार गोपाल राम के गहमरी जी की स्मृति में इस गांव में हर वर्ष साहित्यिक सांस्कृतिक लोक नृत्य गायन वादन फिटनेस रोजगार और शोध पत्र पर कार्य किया जाता है। जो कि गहमर गांव के ही अखंड सिंह जी के द्वारा गहमा वेलफेयर सोसाइटी के माध्यम से गोपालराम जी की स्मृति में आयोजित किया जाता है। हमारे पूर्वज भी इसी गांव में रहते थे। अब लगभग ५० वर्षों से मध्य प्रदेश में अपना निवास स्थान बना चुके हैं। किंतु जन्मभूमि और कर्मभूमि अलग होने के बावजूद भी आगामी पीढ़ियां भी इस गांव को भूल नहीं सकेंगी।

साहित्य लेखन में मेरी रुचि विवाह पूर्व से ही थी, और पत्र पत्रिकाओं में मेरे लेख और रचनाएं छपती रही विवाहोंपरांत मंचों पर जाना स्कूल कॉलेज स्तर पर शिक्षिका और कवियत्री होने के नाते बना रहा। कोरोना काल से हमारी शिक्षण सेवाएं स्कूल(बेथेल मिशन इंग्लिश मीडियम हायर सेकेंडरी स्कूल अनूपपुर) में बंद हुई इसके पश्चात भी बच्चों को कोचिंग का कार्य अनवरत आज भी चल रहा है। लेखन के क्षेत्र पर आनलाइन आफलाइन अनेक कार्यक्रम देने के बीच ही हम साहित्य सरोज पत्रिका के संपादक डा अखंड सिंह जी से जुड़े और हमें भी इस ६वें गोपाल राम गहमरी स्मृति समारोह में शामिल होने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ।

गोपालराम गहमरी साहित्यिक समारोह के साथ-साथ हर प्रकार की प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता है इस कार्यक्रम में मथुरा से आए हुए कलाकारों के द्वारा जिसमें की बाल कलाकार भी थे मनोरम दृश्य प्रस्तुत कर नागनाथैया और फूलों की होली मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे।लोकगीतों को सुनकर अपने भारत देश की सभ्यता और संस्कृति का भी परिचय मिल मधुर बांसुरी वादन की शानदार प्रस्तुति, बहुत ही शानदार नृत्य का प्रदर्शन गरिमामयी भावाभिव्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत की गई।

फिल्म जगत से मशहूर फिल्मकार जो लघु फिल्म टेली फिल्म के अलावा बालीवुड में भी अपनी धूम मचा रहे हैं श्री सुनील दत्त मिश्रा जी की भी नई फिल्मों को प्रोजेक्टर में दिखाया गया।धर्म और आध्यात्म का दर्शन भी हृदय और मस्तिष्क में छाप छोड़ चुका है प्रातः कालीन इस कार्यक्रम के संचालक अखंड सिंह जी के द्वारा गंगा स्नान के लिए ले जाना और नौका विहार और मां भवानी के दर्शन और महंत जी के सानिध्य में काव्य पाठ का बहुत ही सुंदर आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन रात्रि में कवयित्री सम्मेलन जिसमें की सभी कवियत्रियों ने अपनी शानदार एक से बढ़कर एक रचनाएं सुनाएं और तृतीय दिवस सभी ने कवि सम्मेलन ,सम्मान समारोह में हिस्सा लिया। गांव के सभी प्रतिष्ठित जन और संभ्रांत नागरिक गण के साथ-साथ सभी परिवार जनों से मिलकर आत्मिक हर्ष की प्राप्त हुई।यहां पर भोजन-ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े हुए मशहूर बाटी,चोखा बहुत ही स्वादिष्ट और सरल और सुपाच्यअपने आप में विशेष था।

यह महोत्सव अपने आप में विशिष्टता लिए हुए था क्योंकि दूर-दूर से आए हुए सभी रंगकर्मी ,कलाकार रचनाकार और फिल्मकार जिनके सानिध्य में बहुत कुछ सीखने और समझने को मिला और अविस्मरणीय रहा ।

श्रीमती मीना सिंह मीनानिल,
अनूपपुर मध्य प्रदेश

जनवासे की याद

जब भी किसी कला, साहित्य संस्कृति महोत्सव की बात होती है तो गहमर वेलफेयर सोसायटी और साहित्य सरोज पत्रिका के त्रिदिवसीय कला महोत्सव की बात जरूर होती है ।हो भी क्यों न,भी अखंड प्रताप सिंह गहमरी के द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम अद्भुत विशेषताओं के साथ लेकर चलता है । जैसे यह आयोजन ठंड की चरम सीमा के करीब पहुंच कर होता है २३ दिसंबर से २४ दिसंबर।दूसरे यह आयोजन एकल व्यक्ति द्वारा आयोजित, संयोजित और पोषित किया जाता है। नहीं समझे तो ऐसा है की अखंड प्रताप सिंह गहमरी ही अकेले बिना किसी सरकारी,गैर-सरकारी सहायता के इस कार्यक्रम को आयोजित करते हैं ।

मात्र आयोजित तक सीमित नहीं होता है यह कला महोत्सव इसमें आने वाले सभी साहित्यकारों, कलाकारों को घर जैसा वातावरण,और सम्मान घरेलू ग्रामीण परिवेश के पारम्परिक स्वादिष्ट व्यंजनों से भरपूर भोजन के मिलता है। कहने का तात्पर्य है की साहित्य, संस्कृति ,कला के साधकों को वीर सैनिकों की भूमि गहमर में आते ही उन्हें आयोजक अखंड प्रताप सिंह गहमरी स्वयं स्टेशन से लेने आने से लेकर छोड़ने तक साथ रहते हैं । ऐसा है गहमर वेलफेयर सोसायटी का कला महोत्सव।मै पिछले तीन वर्षो से इस कला महोत्सव में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हूं।हर बार कुछ नया सीखने ,जानने को मिलता है। इस वर्ष संस्मरण लेखन विधा में कार्यशाला में सीखने को मिला। विशेष तौर पर मेरे साथ गयी कनक वर्मा ,डा अपूर्वा अवस्थी,निशा मोहन, गीतिका श्रीवास्तव, रीता श्रीवास्तव संग ईशा रतन मीशा रतन की शिष्या और मेरी भतीजी जान्हवी अवस्थी के साथ मिले सम्मान ने महोत्सव का आनंद बढ़ा दिया। जहां सम्मान से लखनऊ का मान बढ़ाने की प्रसन्नता थी तो गहमर में आयोजित कला महोत्सव में अपनी कला से पहचान पाने का आत्मसुख । जिसने लखनऊ सहित कुछ महिलाओं को अपनी दैनिक दिनचर्या से हटकर नयी उपलब्धि जीवन में संग्रहीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। हिन्दी साहित्य एवं कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मुझे संस्था के सबसे बड़े महिला सम्मान जो साहित्य सरोज पत्रिका की संस्थापिका स्वर्गीय श्रीमती सरोज सिंह जो प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह की माता जी है उनके नाम दिया जाता है, "श्रीतमी सरोज सिंह गौरव सम्मान-२०२३ से सम्मनित कर मुझे पत्रिका का आजीवन संपादकीय मंडल का सदस्य बनाया गया। इसके साथ ही कनक वर्मा, डा.अपूर्वा अवस्थी, गीतिका श्रीवास्तव, निशा मोहन, रीता श्रीवास्तव व जाह्नवी अवस्थी को भी विभिन्न सम्मानों से सम्मानित किया गया। विगत आठ वर्षो से त्रिदिवसीय महोत्सव होता आ रहा है। लेकिन पहली नवें महोत्सव पहली बार ऐसा हुआ की एक साथ लखनऊ की सात महिलाएं सम्मानित हुई।

जिस जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी स्मृति में यह आयोजन होता है उनके बारे में भी जानना भी आवश्यक है।उन्होंने दो सौ से अधिक उपन्यास, सैकड़ों कहानियां व गीत हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में लिखने वाले पहले हिन्दी जासूसी उपन्यासकार और पत्रकार भी थे।

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में विभिन्न विधाओं जैसे साहित्य, कला और भाषा पर परिचर्चा, पुस्तको का लोकार्पण पुस्तक मेला, चित्रकला प्रदर्शनी, लोक गायन, लोक नृत्य, वादन, सम्मान समारोह, कवि सम्मेलन, लघुकथा प्रतियोगिता एवं साझा संग्रहों का लोकार्पण भी हुआ। यह सब तो आयोजन में हुआ ।मेरी भागीदारी प्रारंभ हुई संस्मरण लेखन विधा कार्यशाला संचालन से जिसमें लोगों को बुला कर उनके विचार जानने का मौका मिला। अपराह्न में स्वादिष्ट दाल चावल सब्जी सलाद का भोजन करने के बाद सेहत की चिंता ना करें हमें बताये हम देंगे समाधान ऐसे विचारों के साथ ममता सिंह अपनी टीम के साथ मंच पर थी ।

मैं लखनऊ से जिन महिलाओं के साथ गयी थी एक दिन पहले दिन भर की भागदौड़ और रात की यात्रा के बाद सुबह सुबह सभी के कहने पर गंगा स्नान के लिए गंगा घाट पर जाने की तैयारी कर ली । लेकिन आयोजक अखंड गहमरी को जैसे ही पता चला हमारी योजना का उस पर गंगा जल डालकर मुझे फोन पर सख्त हिदायत दी गंगा घाट ना जाने की मैंने तुरंत नीचे भगौने में गर्म होते पानी को जान्हवी से मंगाया और तुरंत स्नान करके तैयार हो गई। लेकिन अन्य महिलाएं ना मानी मैंने भी अभिव्यक्ती और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को ध्यान करके इतना हीं कहा की आयोजक ने मना कर दिया घाट जाने से। पर स्त्री हट कैसे मानता चल पड़ी सभी नीचे लेकिन अखंड गहमरी जी की नजरों से बचना आसान नहीं नीचे जाते ही एक ही आवाज सुनाई दी कोई नहीं जायेगा गंगा घाट सभी कल जायेगे। ।मेरी जिम्मेदारी है घाट पर तैराक नाव वाले सभी होंगे आज नहीं ।मुझे मन ही मन हंसी आई सोचा भी यह लो हो गया काण्ड। अब इन

सभी महिलाओं की बातें लखनऊ तक सुननी पड़ेगी । लेकिन जब सब उपर कमरे में आयी तो मैंने अंजान बनकर पूछा क्या हो गया? तो डा अपूर्वा अवस्थी हंसते-हंसते बोली हुआ क्या ? डांट पड़ी भगा दिया वापस उपर । उनकी हंसी देख कर मेरी सांस में सांस आई। चलो इनन लोगों ने बुरा नन्ही माना। इनकी जगह बुआ ,फुफा होते तो तब तो कांड पक्का था ।खैर सबने उसी गर्म होते भगौने पर आश्रित होकर गर्म पानी मंगवाकर स्नान के सत्र को समाप्त किया।

सभी लोग चाय की चाहत में इधर-उधर देखने में लगे थे तो मैंने चाय की चाहत अखंड गहमरी को बता दी । एक तरफ आयोजक, दूसरी तरफ पति फंसा हुआ बेचारा आयोजक खुद ही चल पडा घर की रसोई की तरफ़ क्योंकि पति तो ठंड में सुबह सुबह पत्नी से यह कह नहीं सकता की एक आध नहीं सात महिलाओं के लिए चाय बना दो । चोरी-चोरी चुपके-चुपके घर की रसोई से चाय बना कर लाये, जिसमें एक चाय मुझे भी मिलेगी इस दबी इच्छा साथ लिए सहयोग किया लखनऊ के ही ओम जी मिश्रा ने। चाय के बाद कुछ अच्छा महसूस हुआ। दिनचर्या जैसा उपर बता चुकी हुं क्या हुआ सबके चक्कर में नाश्ता की देर हो गयी । पोहा जलेबी में मेरी पसंद की जलेबी ससुराल से विदा हो गयी। मतलब मुझे नहीं मिली। एकादशी के कारण समझ नहीं आया की खाऊं की ना खाऊं । लेकिन माखन चोर पेट के कृष्ण ने कहा खा ले कल से। भूखी हो कब तक रहोगी तो पोहा पेट के हवाले किया। जा कर मंच संभालने का अवसर मिला संस्मरण कार्यशाला का। परिचय, स्वागत संस्मरण लेखन विधा कार्यशाला के बाद। दोपहरी का भोजन का बुलावा आया। एक बार फिर एकादशी में दाल चावल सब्जी सलाद का द्वंद। फिर वही भजन और भोजन का संग्राम में भोजन बिना भजन नही जीता। खाने के बाद कुछ आराम करने का विचार करके सभी कमरे की तरफ चले तो साउण्ड सिस्टम चीखा बोला कहां चली ।अभी ममता सिंह आ रही है । स्वास्थ्य की अच्छी अच्छी बातें बताने ।

ठीक है चल दिए पंडाल में लेकिन लगातार पिछले तीन दिनों से रात दिन काम करने के कारण मेरे शरीर का तापमान बढ़ गया। आयोजक से कहना ठीक नहीं लगा । तो उठकर कमरे में बैठ गयी कनक वर्मा दीदी को कुछ लगा उन्होंने मुझे दवा दी जिससे ठंड में चढ़ी गर्मी कम हुई खत्म नहीं हुई।

शाम को मेरा मनपसंद सांस्कृतिक कार्यक्रम होना शुरू हुआ फिर से साउण्ड सिस्टम मेरी आवाज़ सुनाने को बेचैन हो उठा । फिर शुरू हुआ डा अपूर्वा अवस्थी,निशा मोहन गीतिका, रीता श्रीवास्तव,कनक वर्मा के लोक गीतों की श्रृंखला।जान्हवी अवस्थी का नृत्य बांसुरी वादन, मेरे हाथ में माइक , मेरे पैर खड़े खड़े थक गए ।बोले चल थोड़ा नृत्य कर लें आराम मिलेगा फिर क्या चढ़ गयी मैं भी अवध के रंग दिखाने। पूर्व मंत्री संगीता बलवंत मुख्य अतिथि बन सामने थी मैं डरी नहीं बिंदास अपने अवधी रंग दिखाने। वह भी कम नहीं मंच पर आशीर्वाद देने को बुलाया माइक पर कब्जा कर लिया उनके आशीर्वचनों के लिए उनकी किताब देख कर सभी डर गये की क्या पूरी पुस्तिका बांचेगी । खैर पन्द्रह मिनट में हम सब पर कृपा हुई। उनके साथ समूह में फोटो लेकर जाने दिया। रात्रि भोजन के बाद सभी काव्य पाठ के लिए मिले ।तब जाकर सोना को मिला। तब तक शरीर का तापमान फिर खौलने को तैयार हो गया। फिर से एक गोली दी गयी कनक दीदी ने फिर सुबह होने पर पता चला गंगा स्नान की पत्रिका विचार ली गयी है।सभी घाट चलेंगे ।गर्म पानी के भगौने ने चैन की बंसी बजायी जाओ मां गंगा के तट मैं यही चढ़ा हूं जब तक बिना आग के ।

गंगा में डुबकी लगाने से पहले सभी डरे की ठंड लग जायेगी जब पैर रखा गंगा जल मे तो पता ही नहीं चला कब सबने सिर तक डुबा दिया। बहुत आनंद आया गहमर की स्वच्छ गंगा में स्नान करके। मेरे शरीर का तापमान शून्य हो गया। वह भी इतना की कोट उतार कर रख दिया। वहां से सभी चले माता कामाख्या देवी के भवन की ओर। दर्शन लाभ लेकर बैठ गया गए सत्संग में मंदिर महंत के दरबार में।
वहां फिर काव्य पाठ की झड़ी लगी । पहली बार मंदिर महंत का आशीर्वाद पटके और प्रसाद के साथ मिला। मंदिर परिसर में ही सुबह की चाय और नाश्ता किया गया।वापस आकर कहानी वाचन सुना गया। लोक गीतों की बात कही गई गीतिका जी के लोक गीत नौकरी पावा तीन सभी ने बहुत पसंद किया। स्कूल की नौकरी के कारण सभी को जल्द निकलना था। सभी का सम्मान कार्यक्रम होने के बाद आयोजक अखंड गहमरी जी अपने भतीजे के साथ स्टेशन तक छोड़ने आये ।

सभी को सम्मान के साथ मिले घरेलू माहौल ने विवाह अवसरों पर मिले जनवासे की पुरानी यादें ताजा कर दी, कैसे सभी एक कमरे में जमीन में पडे रहते थे । गहमरी का धन्यवाद किया।

ज्योति किरण रतन लखनऊ

यूँ ही बना रहे प्यार

आप सभी को अखंड गहमरी का प्रणाम किसी भी आयोजन के प्रारंभ से लेकर स्थगन तक इतने चरण होते हैं जिन्हें पूरा करते करते समय कब बीत जाता है पता ही नहीं चलता। ९वां गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव २०२३ भी उससे अछूता नहीं रहा। दिनांक ०६ सितंबर २०२३ को अधिसूचना निकली, सम्मान सूचना, कार्यक्रम सूचना, सम्मान सूची,आयोजन की रूपरेखा एवं तैयारी जैसे रास्तों से गुजरते हुए हम २२ से २४ दिसम्बर तक एक पड़ाव पर रूके और फिर यादों को समेटे अपने-अपने सफ़र पर निकल गये।

संतोष शर्मा शान जी के आगमन से शुरू हुआ अतिथि समागम राजेश भटनागर जी जो हर लोकगीत गायक के वादक बने थे और जिनका उप नाम दिलफेंक पड़ा के जाने पर आंगन सूना हो समाप्त हुआ। जैसा कि परिवारों के आयोजन में होता है कोई रूठा तो कोई माना, कोई काम किया तो कोई आंख ततेरा वैसा ही इस कार्यक्रम में भी हुआ। गोप दादा की मौजूदगी से ऐसा लग रहा था कि कार्यक्रम को उसका सर मिल गया है, डरने की कोई बात नहीं है, आगे कोई बड़ा खड़ा है। इस लिए मैं बहुत ही रिलेक्स मोड़ में चल रहा था। भटनागर जी, ओम जी मिश्रा, संतोष शर्मा शान और प्रियंका खंडेलवाल जी की टीम ने माहौल को खुशनुमा बनाये रखा, हमेशा हसते-शरारत में नज़र आये। पागल जी अपनी गंम्भीर छवि को बरकरार रखने में पूरी तरह सफल रहे। उनके संचालन करते समय माइक पर जाने में मुझे भी डर लगता। प्रियंका जी का फोटोग्राफी के विषय में सवाल पूछना अच्छा लगा। उनके द्वारा उस पर चर्चा अच्छी लगी। प्रियंका जी के मम्मी-पापा आदरणीया मोहन लाल जी और पुष्पा खंडेलवाल जी हर समय दर्शक दीर्घा में बैठे किसी भी भूमिका के लिए रिजर्व बल पुलिस की तरह तैनात थे। आगरा के बाह तहसील से आये गणेश शर्मा विद्यार्थी जी भी मेरी ही कटैगरी के थे, वो भी पान वाले मैं भी पान वाला। कविता पाठ करते समय बार बार हाथ को मुछों दाड़ी की तरफ लाने की आदत और बुलंद आवाज मेरे मन को छू गई।

सुनील दत्त मिश्र जी, मुंगेर से आई कुमकुम काव्यकृति जी ये मेरे पिता जी के टीम में थे, बस हर प्रोग्राम में उपस्थिति और फिर मड़ई में। सुनील दत मिश्र जी फिल्म वाले थे तो हमेशा हसते बोलते नज़र आते और कुमकुम जी अध्यापिका इस लिए हमेशा गंम्भीर अटैनशन वाली मुद्रा में।

मास्टर माइंड तारिक और मिस्टी अपनी जगह पर शरारत कर शरारत का कोटा पूरा करना चाह रहे थे, मगर शरारत उनसे जीत गई। शरारत वह कर नहीं पाये। बरेली से आई निशा शर्मा जी किसी शादी में आये फूफा की कमी को पूरा किया और कहानी वाचन से खुद को हटा ली। इंदौर की डॉ रश्मि राज वर्मा जी ने गुरु भक्ति पूरी तरह निभाई और अपने गुरु डाक्टर संदीप अवस्थी जी के द्वारा सौपें प्रोजेक्ट को पूरा किया। घूमने और कार्यक्रम के चरणों का आनंन्द लिया।

२४ दिसम्बर को बांका बिहार से आये आलोक प्रेमी जी पूरे दो घंटे स्टेशन से मेरे घर, मेरे घर से स्टेशन करते रहे, पता नहीं क्योंकि वह आ नहीं रहे थे, बाद में पता चला कि उनकी नवविवाहिता धर्म पत्नी जी का मोबाइल डिस्चार्ज था, जिससे वह स्टेशन उतरने के बाद अगला कदम उठाये की स्वीकृति नहीं ले पा रहे थे, जब फोन चार्ज हुआ, चरण वंदना किये, घर में प्रवेश का आदेश स्वीकृत कराये, परमिशन मिला तो सीधे मां कामाख्या धाम पहुँचे और वहां से आने के बाद मेरी वाइफ होम से कहा कि हम कार्यक्रम में नहीं सवासिन के घर आये हैं इस प्रकार वह हमारे ऐसे रिश्तेदार हो गये जो रक्षाबंधन में हमारे घर आयेंगें, और हम करवा चौथ और होली पर उनके घर जायेंगे। अंग्रेजी के अध्यापक अंग्रेजी के लेखक और सनातनी परम्परा के निर्वाहक बांदा के डाक्टर बृजेश कुमार गुप्त जी के बारे में क्या कहना उनका तो जयमाल के समय यानि काव्यपाठ के समय ही कैमरे के गर्लफ्रैन्ड का फोन आ गया और वह इल्लू इलू करने में इतना मस्त हुआ कि उनका काव्यपाठ ही रिकार्ड नही हुआ। यही कुछ हालत प्रयागराज से पधारे दयाशंकर जी का भी हुआ। दयाशंकर जी एक अध्यापक है लेकिन इस समय खुद से परेशान हैं, पढ़ना तो लम्बी कविता चाहते थे लेकिन मेरे कहने पर लम्बाई कम किया, भावुक प्रवृति के दयाशंकर जी अपनी ही दुनिया में मस्त दिखे।

लखनऊ से आये किसलय दुबे जी ने का तो क्या कहना, दिन में पीहर और रात में ससुराल की दर्ज पर वह

दिन भर कार्यक्रम में रहते और रात में बक्सर बिहार पहुँच जाते, उन्होनें तो यूपी बिहार दो दिन में एक दिया था।

खगड़िया से आये विनोद कुमार विक्की व्यंग्य लेखन के साथ साथ एक हसमुख आदमी हैं, दर्शक दीर्घा में बैठ बातों को गंम्भीरता से सुनना और उनकी आंखे वक्ता के आंख से आंख मिला कर प्रक्रिया देती नज़र आती थी। लखनऊ से आई डा० कनक वर्मा, डा.अपूर्वा अवस्थी, गीतिका श्रीवास्तव, निशा मोहन, रीता श्रीवास्तव और ज्याति किरण रतन जी ने अपनी टीम का बनाने का पूरा मजा लिया, गंगा स्नान से लेकर नाव भ्रमण एवं मंदिर तक गीतों का गुनगुनाना, गीतों का गाना, घूमना फिर और फिर सो जाना एक अपनी अलग ही दुनिया थी, लेकिन विश्व का आठवां आर्श्चय भी एक नहीं दो नहीं तीन नहीं पूरे आधा दर्जन महिलाएं एक साथ बैठती लेकिन चुपचाप, शांति से। कुमारी जाहवी अवस्थी का कि मुझे जो जरूरत होती है मांग लेती हूँ स्पष्टवादिता अच्छी लगी। पूर्वी चम्पारन से आये पंडित निराला स्वामी अपने कार्यक्रम के लिए महिला तलाशते दिखें लेकिन किसी के तैयार न होने से उनका कार्यक्रम नहीं हो पाया जिसका अफसोस रहा।

गाजीपुर से आई ज्योति कुमारी और रवीना ने शायद इस मैसेज को ठीक से नहीं पढ़ा था कि कार्यक्रम केवल सनातन धर्म के अनुयाईयों के लिए था, लेकिन कार्यक्रम बीत जाने के बाद उन दोनो से काफी लम्बी बात किया, काफी कुछ समझाया, क्या प्रभाव पड़ेगा यह तो भविष्य बतायेगा। हा ना हा ना और कई आरक्षण निरस्त होने के बाद पहली बार अपनी ससुराल पहुँची मीना सिंह और दिल्ली से गहमर देखने आई नारायणी संस्था की अध्यक्षा पुष्पा सिंह विसेन जी न सिर्फ कार्यक्रम का हिस्सा बनी बल्कि गहमर गांव को घूमने और यहां के लोगों से मिलने और लोगो से बात करने का मौका नहीं छोड़ी। इस प्रकार सबने अपने-अपने हिस्से का सहयोग बढ़ चढ़ कर किया। हर कोई आयोजक था, संयोजक था, अपनी जिम्मेदारी समझने वाला था।

पत्रिका के दो पदाधिकारी पागल जी और कुमकुम काव्यकृति जी के आने से संपादक मंडल की उपस्थिति भी पूर्ण हुई थी। कार्यक्रम के दौरान फिटनेस एवं रोजगार कार्यक्रम में गौरी शंकर सिंह, राजू सिंह, हरिशचन्द्र सिंह, धर्मराज सिह, संजय सिंह एवं मनोज सिंह की उपिस्थती में मेरी पत्नी एवं धमेन्द्र सिंह द्वारा आयोजित कार्यक्रम न सिर्फ सफल रहा बल्कि अतिथियों को भी फिटेनस एवं रोजगार का लाभ दें गया, आशा है कि सभी उसका फायदा उठायेगें। कार्यक्रम में एक आदमी पीछे से सहयोग कर रहा था उसका नाम है आदरणीया रितु माथुर प्रयागराज से आनलाइन कार्यक्रम को पूरी तरह संभाले वह कार्यक्रम के हर आयोजन पर नज़र रखी थी।इस बार कार्यक्रम में हमारे तीन बुजुर्ग दम्पति जिनका जयमाल विवाह के समय नहीं हुआ होगा यहां मैं शायद शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, उनका जयमाल कार्यक्रम के मंच पर कराया गया। जिसमें गोप दादा, पुष्पा मां और कुमकुम काव्यकृति जी थी।

मन की बात

आज साहित्य जगत में आये दिन सम्मान समारोहों का आयोजन होता ही रहता है। यह कोई नई बात नहीं पर यदि आप एक अथवा दो वर्ष के सम्मान समारोहों में सम्मानित होने वाले साहित्यकारों की एक सूची बनाएं फिर आयोजन कर्ताओं की एक सूची बनाएँ अब इन दोनों सूचियों का मिलान करें आप देखेंगे कि कुछ अपवाद छोड़कर शेष दोनों सूचियों में वही नाम हैं अर्थात तू मुझे सम्मानित कर मैं तुझे।यही नहीं एक और परम्परा आजकल प्रचलन में है सहयोग राशि लेकर सम्मान देने की जिसकी जितनी अधिक सहयोग राशि उसका उतना बड़ा सम्मान। साझा संकलन के नाम पर नवोदित रचनाकारों से धन की उगाही कर समूह संचालक(मठाधीश) स्वयं के सम्पादन में पुस्तकें छपवाते हैं और नवोदितों को पुस्तक की पूर्व निर्धारित प्रतियाँ व सम्मान पत्र थमा दिया जाता है ये कुछ उदाहरण हैं आजकल सम्मान समारोहों के पर इन सबसे अलग हैं गहमर वेलफेयर सोसायटी गहमर गाजीपुर एवं हिन्दी साहित्य को पूर्णतः समर्पित पत्रिका 'साहित्य सरोज' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव में दिए जाने वाले हिन्दी साहित्य एवं कला की विभिन्न विधाओं में दिए जाने वाले सम्मान। कारण कि उपर्युक्त त्रिदिवसीय आयोजन के संयोजक भाई अखंड गहमरी कभी अपने किसी भी अतिथि साहित्यकार/कलाकार से रचनात्मक सहयोग के अतिरिक्त किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं लेते आग्रह करने पर भी नहीं।"आप सब की उपस्थिति ही हमारा सहयोग है।" यही उत्तर होता है। जब कि इस त्रिदिवसीय सम्पूर्ण आयोजन को अपने स्वयं के संसाधनों से बड़ी ही कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराते हैं स्वयं की सभी समस्याओं को भूलकर अतिथि देवो भव! को चरितार्थ करते दिखाई पड़ते हैं। अपने सभी अतिथियों के घर से निकलने से लेकर आयोजन स्थल तक पहुँचने तक उनकी पल-पल की जानकारी लेते रहना, कब कौन अतिथि गहमर स्टेशन आया उसे स्वयं लेने जाना उनके भोजन आवास की व्यवस्था सुनिश्चित करना अत्यंत दुष्कर व श्रमसाध्य कार्य को जिस प्रफुल्लित मन से वह करते दिखाई देते हैं वह भाव आज के समय में अत्यंत दुर्लभ है। अपनी प्रारम्भिक चरण में कार्यक्रम कुछ आकस्मिक अपरिहार्य कारणों से शिथिल रहा पर शीघ्र ही वह शिथिलता दूर हो गई और पूर्ण उमंग व उल्लास से सभी सत्र सम्पन्न हुए ।कुछ सत्रों में सहभागी साहित्यकारों/कलाकारों की अनुशासन हीनता ने अवश्य संयोजक के मन को दुखी किया होगा जब बार-बार पण्डाल में बुलाने पर भी अपने अपने कमरों से निकल कर आने में हीलाहवाली करते दिखाई दिए। संयोजक को एक सुझाव अवश्य देना चाहूँगा जब कभी आयोजन से पूर्व कोई पूजा अनुष्ठान रखें तो सर्वप्रथम वही करें शुभारम्भ कितने ही विलम्ब से क्यों न हो, भले ही पूर्व निर्धारित सत्रों की समयावधि घटानी पड़े अथवा एकाध सत्र निरस्त करने पड़ें साथ ही प्रत्येक सत्र के बीच एक अल्पकालिक अवकाश भी रखें ।

पतितपावनी गंगा के पावन तट पर स्थित एशिया के सबसे बड़े गाँव 'गहमर' जिसे सैनिकों का गाँव भी कहा जाता है जहाँ लगभग बारह हजार सैनिक वर्तमान में देश की विभिन्न सीमाओं पर तैनात हैं, वहीं लगभग पन्द्रह हजार सेवानिवृत्त सैनिक भी इस गाँव में हैं। सम्भवतः प्रत्येक घर से एक न एक व्यक्ति सेना में रहकर राष्ट्ररक्षा हेतु समर्पित है।यहाँ माँ कामाख्या का पावन धाम भी है कहते हैं कि सैनिक बाहुल्य गाँव होते हुए भी यहाँ का कोई वीर सैनिक किसी सैन्य कार्रवाई में कभी शहीद नहीं हुआ।स्थानीय लोग इसे माँ कामाख्या की असीम कृपा मानते हैं।यहाँ की जनसंख्या लगभग एक लाख पचास हजार है।ऐसी पवित्र वीरभूमि जन्मस्थली है हिन्दी के सुविख्यात साहित्यकार एवं जासूसी उपन्यास के जनक गहमर गाँव को गौरवान्वित करनेवाले वैश्य परिवार में जन्मे श्री गोपालराम गहमरी जी की।उसी सुप्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार की स्मृतियों एवं उपलब्धियों को सँजोए रखने के पुनीत उद्देश्य से 'गहमर वेलफेयर सोसायटी' एवं हिन्दी साहित्य को समर्पित 'साहित्य सरोज' त्रैमासिक पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित नवें श्री गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव २०२३

ओम जी मिश्र

लखनऊ

डीपी चतुर्वेदी विधि महाविद्यालय सिवनी

कालेज कोड P554 कोर्स LL.B(3 Year)कोर्स कोड C254,

BALLB (5Year) कोर्स कोड C264

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29		

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

आप सभी को नव वर्ष की मंगल कामनाएं

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

सिवनी का एक मात्र विश्वासी शिक्षण संस्थान

JULY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

AUGUST

	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

हम आपके सर्वांगिण विकास के लिए सदैव तत्पर्य हैं

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

एस एस सी शिक्षा महाविद्यालय

कालेज कोड P549

ड्रीमलैंड सिटी सिवनी

BSc BEd ,BA BEd एवं BA(C)

MO-7000041610,7771999343